राधास्वामी दयाल की दया

सब बीमारियों की अत्यंत आसान दवाएँ

लेखक

श्री बी० एस० दरबारी, एडवोकेट

इलाहाबाद

प्राक्कथन

मानीय श्री बी० मलिक

एक्स चीफ जस्टिस, इलाहाबाद हाईकोर्ट

लेखक ने ५५ साल के तजरुबे से इस इलाज को २ लाख रोगियों का मुफ्त इलाज करके गरीबो के हित के लिये निकाला है जो बहुत लाभदायक व सस्ता है और खतरे से खाली है और इतना आसान है कि हर एक इसको कर सकता है।

इस पुस्तक को लेकर व ८ रु० की दवायें बाजार से खरीद कर घरेलू डाक्टर बनिये और कठिन से कठिन रोग अच्छे कीजिये। १/१० पैसे मे एक रोगी अच्छा होता है। ३० लाख रोगी अच्छे हो चुके हैं। अस्पतालो के व अन्य डाक्टरो व लाखो सज्जनो व देवियो ने दवाओ को रोगो मे ८० या ९० या ९५ फीसदी कामयाब पाया है। अगर कोई जल जावे और छाला पड जावे तो वह छाला इन दवाओ के लगाने से आधे मिनट मे गायब होता है, जो किसी और इलाज से नहीं हो सकता है।

१९७१ मूल्य ३·२५

प्रकाशक
एस० दरबारी
२५ बी, कानपुर रोड,
इलाहाबाद

मुद्रक
श्री आई० बी० सक्सेना,
साधो प्रिंटिंग वर्क्स,
इलाहाबाद-३

सूची-पत्र

रोग का नाम	नुस्खा नं०

———

प्राक्कथन

मिस्टर बी० एस० दरबारी चालीस वर्षों से अधिक बीमारों और गरीबों को मुफ्त दवा बांटते आ रहे हैं। मुझे याद है कि जब मैं सेन्ट्रल हिन्दू कालेज बनारस में था ये "लीडर" अखबार में लेख लिखा करते थे जिनमें ब्युबौनिक प्लेग (गिल्टी वाला ताऊन) व कालरा (हैजा) की दवाएं बताते थे जो उन दिनों हमारे चन्द शहरों में समय-समय पर तेजी के साथ होते थे। उस समय से या उसके पहिले से भी इन्होंने होमियोपैथिक पढ़ना शुरू की थी और उसी वक्त से इनके मित्रगण इनको डाक्टर भगवान स्वरूप के नाम से 'पुकारते थे। तब से इन्होंने बहुत तजुरबा हासिल कर लिया है और बहुत से आश्चर्यजनक इलाज भी किये हैं। इन्होंने यह छोटी पुस्तक Simplest Remedies for all Diseases* रोगग्रस्त दुनिया के रोग-निवारण के लिए छापी है। मैंने इनको राय दी है कि इसको हिन्दी में छपवाएं ताकि इससे ज्यादा लोगों को फायदा पहुँचे। मुझे विश्वास है कि जो दवायें मिस्टर दरबारी ने लिखी हैं वे हर एक घर वालों को बहुत फायदेमन्द साबित होंगी। मेरी इच्छा है कि इनको इस बड़े परोपकार के कार्य में जो कि अपने खर्चे से कर रहे हैं, पूरी कामयाबी हासिल हो।

बी० मलिक
चीफ जस्टिस
उत्तर प्रदेश

इलाहाबाद : २ मार्च, १९५४

---

* प्रस्तुत पुस्तक उपरोक्त अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद है।

भूमिका

मालिक की दया से ५५ वर्षों से मैं दुनिया के लाखो रोगियो के रोग दूर करने के निमित्त मुफ्त दवा बांट कर (Research) खोज करता रहा हूँ और उसका नतीजा मालिक की कृपा से यह हुआ कि मैंने दुनिया के रोगो के इलाज के लिए ऐसी दवायें बनाई हैं जो इतनी सस्ती हैं कि एक रुपये की दवाई मे १००० रोगी अच्छे हो सकते हैं और यह इतनी फायदेमन्द साबित हुई हैं कि १०० रोगियो मे से ८० या ९० या ९५ या कभी-कभी १०० रोगी अच्छे होते हैं। इनमे ऐसे-ऐसे कठिन रोग भी शामिल हैं जैसे हैजा, ताऊन, मलेरिया (जूड़ी बुखार), टी० बी० (तपेदिक), चेचक, कैन्सर, स्त्रियों के रोग, आग से जल जाना, बच्चा कठिनता से पैदा होना इत्यादि। साथ ही साथ ये दवायें नुकसान नही करती और आसानी से दी जा सकती हैं। यह इतनी आसान हैं कि एक नासमझ भी इन दवाओ को दे सकता है। इन दवाओ का हाल इस किताब मे मैंने पूरा तौर से दिया है।

मैंने पहिले पहल इन दवाओं को परचो के रूप मे छपाया था जिसे हजारो लोगो ने मंगाया और उनको मुफ्त भेजा गया और डाक-महसूल भी मैंने अपने पास से दिया। लोगो ने इनको भारत के हर एक हिस्से से मंगवाया और इन दवाओ के इस्तेमाल करने के बाद मुझे लोगो ने पत्र भी भेजे हैं जिनमे मुझे लिखा है कि यह दवायें बहुत फायदेमन्द साबित हुई हैं। ऐसे मेरे पास करीब १५०० पत्र हैं जो अमेरिका,

आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, लंका, सिंगापुर, रंगून, अहमदाबाद, मद्रास, विजगापट्टम (मद्रास), पान्डेचेरी, कलकत्ता, बम्बई, सागर आदि देशों व शहरों से आये हैं। इनमे से बहुत से लोग बहुत ऊंची-ऊंची जगहों पर हैं। मैंने महात्मागांधी को लिखा था कि मेरी हैजा (कालरा) की दवा को आजमाएं। उनके आदेशानुसार उनकी सेक्रेटरी माननीया डा० सुशीला नैय्यर ने जो एक प्रसिद्ध एलोपैथिक डाक्टर हैं और जो भारत की हैल्थ मिनिस्टर रह चुकी हैं, उसको आजमाया और मेरे पास इसकी अच्छी रिपोर्ट भेजी है।

इस इलाज से आग से जलने से जो छाला पड़ जाता है व दर्द १ मिनट के अन्दर गायब हो जाता है जो किसी और इलाज से नहीं हो सकता है। मैं अपनी उंगली जलाकर और छाला गायब करके हर समय इस बात को साबित कर सकता हूं।

इसके अलावा और भी डाक्टरो ने इन नुस्खो को अच्छा समझा है। उन परचों की सहायता से २०,००० लोग भारत व अन्य देशो मे डाक्टर बन गये हैं और केवल एक या दो रुपया महीना खर्च करके अपने घर वालों और पड़ोसियों का इलाज कर रहे हैं, और उनको बीमारी व अकाल मृत्यु से बचा रहे हैं। जो उन परचों में दवाइयां लिखी हैं वे बायोकेमिक (Biochemic) हैं। वे अमेरिका या जर्मनी से मंगाई जाती हैं और हिन्दुस्तान मे भी बनती हैं। मेरा उन दवाओं से कोई सम्बन्ध नही है। पिछले ५५ वर्षो मे लगभग ढाई लाख रोगी मेरे हाथ से निकल चुके हैं और मैंने आज तक किसी रोगी से एक पैसा भी नहीं लिया। मेरी प्रार्थना अपनी भारतीय सरकार व कुल

संसार की सरकारों और परोपकारी संस्थाओ से है कि वे इन दवाओ की परीक्षा करें और जब उनको यह विश्वास हो जाये कि ये दवायें लाभदायक हैं तो वे इनको हर गाँव व शहर में मुफ्त बटवाएं और लाखों रोगियो को मौत के पंजे से छुड़वाये। लगभग ३० लाख रोगी इन दवाओं से अच्छे हो चुके हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार ने मुझे लिखा है कि इन दवाओ को १० गाँव सभाओं मे आजमाया गया है और उनको सफलता प्राप्त हुई है और यह बहुत लाभदायक और सस्ती है और इतनी आसान है कि गाँव वाले भी इन दवाओ को रोगियों को दे सकते हैं और इनसे रोगी को हानि पहुँचने का कोई डर नहीं है। मेरे इलाज मे भारत के प्रधान मंत्री, राज्यपाल, (गवर्नर), कमिश्नर, कलक्टर, सिविल सर्जन, कई चीफ जस्टिस व लगभग सब हाईकोर्ट जज इत्यादि रह चुके हैं।

यदि इन दवाओ के होते हुये भी भारत सरकार व अन्य देशो की सरकारें इनका प्रयोग न करें और लाखो रोगियो को जो करीब-करीब मुफ्त अच्छे किये जा सकते हैं, मरने दें तो उनको उनकी मौत का जवाब मालिक को देना होगा।

चूंकि लोगो की बहुत इच्छा थी कि इन दवाओ का हाल पुस्तक के रूप मे छापा जाय इसलिए मैंने अंग्रेजी मे एक किताब Simplest Remedies for all Diseases निकाली है। चूंकि माननीय श्री बी० मलिक, चीफ जस्टिस महोदय तथा अन्य लोगो ने कहा कि इस

पुस्तक का हिन्दी मे छपना जरूरी है इसलिये यह हिन्दी में छापी जा रही है। मेरी प्रार्थना है कि पाठक कृपा करके मेरी त्रुटियों को छमा करेंगे और दवाओं का इस्तेमाल करके उनकी बाबत मेरे पास रिपोर्टं भेजेंगे कि किन-किन रोगों में कितनी सफलता प्राप्त हुई।

—: ० :—

परिचय

भारत व अन्य देशों मे लोग बहुत गरीब हैं और करोड़ों आदमी हर साल बिना दवा के मर जाते हैं जिसका कारण यह है कि मौजूदा दवायें इतनी मंहगी हैं कि मामूली लोग व गरीब लोग उन्हे इस्तेमाल नहीं कर सकते। ऐसे देशो के लिये ऐसी दवाओ की जरूरत है जो बहुत सस्ती हो, और साथ ही साथ बहुत लाभदायक हो, और जिनसे नुकसान पहुँचने का कोई डर भी न हो और आसानी से इस्तेमाल हो सकें।

मालिक की दया से मैंने ५५ साल के तजुरबे से ऐसे नुस्खे तैयार किये हैं जो कि इतने सस्ते हैं कि एक पैसे की दवा मे १० से लेकर ५० तक रोगी अच्छे हो सकते हैं। यह दवायें अत्यन्त लाभदायक हैं। इन दवाओ के बनाने का तरीका इस किताब मे लिखा गया है। मैं पहिले पहल यह बताना चाहता हूँ कि यह दवायें किस तरह से बनी। इससे यह लाभ होगा कि पाठकों को इन दवाओ के उसूल मालूम हो जायेंगे।

मैं सन् १९१२ से १९१४ तक सेन्ट्रल हिन्दू कालेज, बनारस मे पढ़ता था। हर रोज कालेज मे पढ़ाई शुरू होने से पहिले प्रार्थना होती थी और प्रोफेसर साहबान व्याख्यान देते थे कि हर एक विद्यार्थी का फर्ज है कि वह लोक-सेवा करे। इसका मेरे हृदय पर बहुत असर हुआ

और मैं मालिक से प्रार्थना करता था कि मुझे शक्ति दे कि मैं लोक-सेवा अच्छी तरह से कर सकूं। मैंने इस मामले पर बहुत विचार किया अन्त में इस नतीजे पर पहुंचा कि गरीब लोगो को बीमारियो से बचाना सबसे अच्छी सेवा होगी। बहुत सस्ती दवायें बनाई जायं, जो गरीब से गरीब तक इस्तेमाल कर सकें। सन् १९१४ में मैं म्योर सेंट्रल कालेज, इलाहाबाद गया और सन् १९१६ तक गवर्नमेंट होस्टल मे रहा जिसका नाम आजकल डा० अमरनाथ झा होस्टल है। वहाँ पर एक मेरे विद्यार्थी साथी होमियोपैथिक की दवा बाँटते थे। मैंने उनसे पूछा कि मैं किस तरह होमियोपैथी सीख सकता हूँ। उन्होंने मुझे राय दी कि डा० रडक की बनाई हुई अंग्रेजी किताब "Stepping Stone to Health and Homoeopathy" और तीस मुख्य होमियोपैथिक दवाये और एक छोटा बक्स उनके रखने के लिए मंगा लो। मैंने कलकत्ते से इन्हें मंगाया और ये कुल करीब ४-५ रुपये मे आ गयी। इस छोटी-सी लागत में मैं मरीजो को दवा बांटने लगा। मालिक की दया से मुझे बहुत ही कामयाबी हुई। सन् १९१७-१८ मे मैं हिन्दू होस्टल इलाहाबाद मे रहा और वहाँ पर २०० विद्यार्थियों का इलाज मैं ही करता था। होस्टल के मशहूर डाक्टर से कोई दवा नहीं लेता था। उसी जमाने में एक रोगी को, जिसको १७ वर्ष से सिर में दर्द होता था और कलकत्ते मे सब डाक्टरी का इलाज कर चुका था, मैंने दवा दी। वह चन्द घन्टों में अच्छा हो गया। इससे मेरा उत्साह बहुत बढ गया और मैं सोचने लगा कि यदि पढ़े-लिखे आदमी होमियोपैथी सीख लें और गरीबों को दवायें बाटें तो लाखो आदमियो को फायदा पहुँच सकता है और गरीबों के रोगों का मसला तय हो सकता है। इसी विचार से मैं अखबारो में लेख देता रहा और मैंने एक अंग्रेजी किताब ६० सफे की जिसका नाम "होमियोपैथी मेड ईजी", छपवाई

और ६००० किताबें मुफ्त बांटीं। मुझे बड़ी खुशी है कि उस किताब की मदद से सैकड़ों आदमी दवा बांटने का काम कर रहे हैं और हजारों गरीबों को फायदा हो रहा है।

मगर मैंने और ज्यादा विचार किया तो मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि होमियोपैथी से करोड़ों आदमियो की जान बचाने का मसला तय नहीं होगा क्योंकि होमियोपैथी मे हर एक रोगी की सब हालतों पर गौर करके दवा दी जाती है। होमियोपैथी मे ऐसी एक भी दवा नही है जो उस रोग के कुल रोगियों को दी जा सके। इसलिए मैंने सोचा कि ऐसी दवायें बनाई जायें जो प्रत्येक रोग के हर एक रोगी को दी जा सकें और सस्ती भी हों।

मुझे बड़ी खुशी है कि मालिक की दया से मैंने ऐसी दवायें बनाई हैं कि अगर दवाये इकट्ठी बनाई जायें तो एक पैसे मे ५० रोगी अच्छे हो सकते हैं, और इतनी फायदेमन्द हैं कि १०० में ८० या ९० रोगी अच्छे हो सकते हैं और अगर गलत दी जावे या बहुत ज्यादा भी दी जाये तो नुकसान नही करती और इतनी आसान है कि कम बुद्धि वाले भी दवा दे सकते हैं।

मैं अब ये बताना चाहता हूँ कि ये दवायें मैंने किस तरह से बनाईं। सन् १९१७ मे हिन्दू होस्टल मे मेरे एक साथी बायोकेमिक दवाये बांटते थे। मैंने उनसे पूछा कि आप बायोकेमिक इलाज की एक दवा ऐसी बतलाइये जो सबसे अच्छी हो, ताकि मैं उसका इस्तेमाल कर सकूं। उन्होने कहा कि बुखार के लिये फैरम फास बहुत अच्छी दवा है। उसको मैंने आजमाया। लेकिन जब-जब मैंने इसको बुखार में

दिया हमेशा नाकामयाबी हुई। मुझे बड़ा दुःख हुआ और मुझे यह ख्याल हुआ कि यह बायोकैमिक इलाज कुछ नहीं है।

लेकिन मैंने गौर किया कि बिना अच्छी तरह से जाँच किये एक इलाज को गलत कह देना मुनासिब न होगा। मैंने एक बायोकेमिक किताब में देखा कि बुखार मे अगर फैरम फास काम न दे तो दूसरी दवा काली म्यूर देनी चाहिये। मैंने फिर किताबों मे यह देखा कि फैरम फास व काली म्यूर एक दूसरे के असर को नहीं काटते हैं तो मैंने सोचा कि इन दवाओं को मिलाकर ही क्यों न दिया जाय। यह उससे अच्छा होगा कि पहले फैरम फास दिया जावे और उसके फेल होने पर तब काली म्युर दिया जावे। इसमे टाइम बचेगा। यह ख्याल इसलिये हुआ कि बायोकेमिक इलाज का उसूल यह है कि मनुष्य के शरीर मे १२ तरह की चीजें (कम्पाउंड्स) (सम्मिलित तत्व) हैं। इन्ही १२ चीजो मे किसी चीज की कमी होने पर आदमी बीमार होता है और अगर उस कमी को पूरा कर दिया जाये तो रोगी अच्छा हो जाता है। मैंने सोचा कि फैरम फास और काली म्युर दोनों मिलाकर देने मे यह फायदा होगा कि इन दोनो मे से अगर किसी की कमी होगी तो पूरी हो जायगी और दूसरी चीज बेकार पडी रहेगी। इस विचार से मैंने फैरमफास और काली म्युर को मिलाकर देना शुरू किया और लगभग १०० मे से ९० रोगी अच्छे होने लगे। इसमे मैंने एक और दवा, नैट्रम सल्फ जो जूड़ी बुखार मे बहुत लाभदायक है, मिला दी और इन तीनो दवाओ को मिलाकर बुखार के रोगियो को दिया और १०० में करीब १०० ही अच्छे होने लगे। इससे मुझे बड़ी खुशी हुई।

उसी जमाने मे एक रोज जब मैं ४ बजे कोर्ट से लौटकर आया तो देखा कि एक गोरखपुर के मुवक्किल को जो मेरे यहाँ ठहरा हुआ था, हैजा हो गया है। मैं उस समय बहुत थका हुआ था मैंने बायो-केमिक किताब में हैजे का अध्याय देखा तो उसमे से आठ बायोकेमिक दवाये जिनको मैंने सोचा कि उपयोगी हो सकती हैं, मिलाकर उस मुवक्किल को दी। उससे उसको तीन-चार मिनट मे फायदा होना शुरू हुआ और वह चन्द घन्टों में ठीक हो गया। इससे मुझे बहुत उत्साह हुआ और इसी तरह से मैंने लगभग ४७० रोगों के लिए बायोकेमिक दवाओं को मिलाकर नुस्खे बनाये हैं जिनसे टी० बी० (तपेदिक), हैजा, चेचक, प्लेग, डायबिटीज (जिसमे ज्यादा पेशाब आती है), मलेरिया बुखार, टौन्सिलाइटिस (गले की गाँठो का बढ़ आना), कैंसर इत्यादि रोग शामिल हैं।

मुमकिन है कि शायद कुछ लोग यह सोचें कि इतनी फायदेमन्द दवायें इतनी सस्ती कैसे हो सकती हैं और मैंने जो इस किताब मे लिखा है उसको गलत समझें। ऐसे लोगों के लिये मैं यह कहना चाहता हूँ कि मुझको गलत बयान करने की कोई जरूरत नही है। क्योंकि मेरा पेशा डाक्टरी नहीं है। मुझको डाक्टरी पेशे से कुछ कमाना नहीं है। पिछले ५५ वर्षों मे लगभग दो लाख रोगी मेरे हाथ से निकल चुके हैं। मैंने उनसे आज तक एक पैसा भी बतौर फीस या दवा के दाम नहीं लिये। इस शुभ कार्य में हजारो रुपये अपने पास से खर्च कर चुका हूँ। मेरे इस कथन की सत्यता माननीय चीफ जस्टिस के प्राक्कथन से, जो इस किताब के शुरू मे छापा गया है व चन्द हाई कोर्ट के जज साहबान के पत्रों से, व श्रीमती सुशीला नैय्यर व अन्य

डाक्टरों व सज्जनों के पत्रों से जिनको मैंने अध्याय नं० ४ में छापा है, विदित होगा। मेरे पास लगभग १५०० पत्र हिन्दुस्तान के हर भाग से आये हुये हैं, जिसमें लोगों ने इन दवाओं को इस्तेमाल करने के बावत लिखा है कि ये दवायें बहुत फायदेमन्द हैं। कुछ लोगों ने तो यहाँ तक लिखा है कि चन्द रोगों में १०० फीसदी रोगी अच्छे हुये हैं। बहुत से पत्रों में लोगों ने इन दवाओं के बावत मुझे बधाई दी है। मैंने इन दवाओं को पहिले पैम्फलेट के रूप में छपवाया और करीब १०,००० पैम्फलेट मुफ्त बांटे। यहाँ तक कि डाक महसूल भी अपने पास से देता रहा हूँ। लोगों ने इन पैम्फलेट्स को मंगाया और उन दवाओं को इस्तेमाल करने के बाद मुझे पत्र लिखे। कोई वजह नहीं हो सकती कि इतने लोग जिनसे जान-पहचान तक नहीं है, क्यों गलत रिपोर्ट देंगे। इलाहाबाद में बहुत से लोग ऐसे हैं जिन्होंने मेरी दवाओं को इस्तेमाल किया है। उनसे कुल हालात दरयाफ्त किये जा सकते हैं। ऐसे-ऐसे रोगी अच्छे हुये हैं जिनकी बाबत डाक्टरों, हकीमों व वैद्यों ने कह दिया था कि अच्छे नहीं हो सकते। पाठकगण भी ऐसे रोगी अच्छे कर सकते हैं।

कई ऐलोपैथिक डाक्टर मेरे मरीज रह चुके हैं, और हैं। बतौर मिसाल के मैं चन्द रोगों का व रोगियों का हाल लिखना चाहता हूँ। पटना मेडिकल कालेज के प्रिन्सिपल मेरे मरीज रह चुके हैं। भारतवर्ष के प्रेसीडेन्ट डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद साहब की नतबहू को हिस्टीरिया का रोग ५ महीने से था। सब इलाज देहली, इलाहाबाद व बनारस में कराये गये थे—सब फेल हुये। मैंने मैगनेशिया फास ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दी। पहली ही खुराक से चार घन्टे में अच्छी हो

गई। माननीय श्री सत्यनारायन सिनहा, जो कि देहली मे पार्लियामेटरी अफेयर्स के मन्त्री हैं, के सीने मे बहुत जलन होती थी। वहाँ से एक आदमी दवा लेने आया और वे शीघ्र अच्छे हो गये।

यहाँ मैं कुछ कठिन रोगो के बाबत लिखना चाहता हूँ जिनके नुस्खे इस किताब मे दिए गए हैं। इससे साबित होगा कि इस इलाज से बढकर दूसरा कोई इलाज नही है और हमारे देश के सब रोगी आसानी से बिना खर्च अच्छे हो सकते हैं।

रोहे—लोगों की आँखों मे अक्सर रोहे (granules) या (Trachoma) हो जाते हैं। इस रोग का इलाज दुनिया में कहीं नही है। बायोकैमिक दवा, काली म्युर ३x इस रोग मे अत्यन्त उपयोगी है। जिसको इस्तेमाल करके देखा जा सकता है। मेरी भतीजी को रोहों की वजह से चश्मा लगाने की जरूरत हो गई थी। मेरी दवा से १५ दिन मे रोहे ठीक हो गये और चश्मा लगाना भी छूट गया।

कब्ज (Constipation)—यह रोग हर घर मे कुछ लोगों को होता है। इसका इलाज कहीं नही है। डाक्टर, हकीम व वैद्य साहबान रोज-रोज दवाये खाने को देते हैं, जिससे टट्टी साफ हो जाती है लेकिन जब दवा बन्द हो जावे तो फिर वही तकलीफ हो जाती है। मेरी दवा ऐसी है कि चन्द दिन इस्तेमाल करने से हमेशा के लिए यह रोग दूर हो जाता है। और दवा बन्द करने के बाद कब्ज फिर से नही होता। यहाँ पर मैं यह कहना चाहता हूँ कि इस किताब मे मैंने ऐसे शब्द इस्तेमाल किये हैं जो हर कोई समझ सके। चन्द हिन्दी की डाक्टरी किताबों मे मैंने यह देखा है कि लेखक ऐसे कठिन संस्कृत

के शब्द इस्तेमाल करते हैं जिसे कोई न समझ सके। जैसे कालरा रोग को हैजा के नाम से सब समझते हैं लेकिन 'विषूचिका' के नाम से कोई नहीं समझ सकता। अगर 'विषूचिका' लिखा जावे तो पाठकों को बड़ी कठिनाई होगी और किताब बेकार होगी।

गले के अन्दर की गिल्टियों का बढ़ना (Tonsilitis)—यह रोग अक्सर लोगों को होता है। इसका इलाज कहीं नहीं है। डाक्टर साहबान बढ़े हुये टौन्सिलस को आपरेशन करके निकालते हैं। यह आपरेशन कभी-कभी बहुत खतरनाक होता है जिसमे रोगी की जान तक जाने का डर रहता है। यह बात तो सबको मालूम है कि किस तरह से मेडिकल कालेज, लखनऊ मे एक डिप्टी साहब के लड़के की टौन्सिल के आपरेशन से मौत हुई। मेरी दवा इतनी लाभदायक है कि थोड़े दिनों के इस्तेमाल से हमेशा के लिए रोगी ठीक हो जाता है। मेरे मित्र, बाबु पूरनचन्द सूद, एडवोकेट, आगरा चन्द वर्ष हुये अपने लड़के का टौन्सिल का आपरेशन कराने जा रहे थे। मेरे कहने से आपरेशन रोक दिया गया और बिना आपरेशन के, मेरी दवा से वह लड़का बिल्कुल अच्छा हो गया। इलाहाबाद के बाबू हेमचन्द्र जी मुकर्जी, एडवोकेट ने मेरी दवा को, अपने बच्चों को इस रोग के लिए इस्तेमाल कराया और उनको बहुत फायदा हुआ। उनको मेरी दवा पर बहुत विश्वास हो गया है।

सिगरेट, तम्बाकू या बीड़ी पीने की आदत—यह आदत बड़ी मुश्किल से छूटती है। डाक्टरो, हकीमों और वैद्यो के पास कोई ऐसी दवा नहीं है जिसके खिलाने से यह आदत छूट जावे। बायोकेमिक

दवायें कलकेरिया फास ३x और नैट्रम म्योर ३x अगर पानी मे घोल कर चन्द घन्टों तक पी जायें तो तम्बाकू पीने की इच्छा दूर हो सकती है। कई साल हुए कलकत्ते के श्री इरशाद हुसैन मेरे यहाँ ठहरे हुए थे। वह चेन स्मोकर (Chain smoker) थे यानी एक सिगरेट खत्म नही होने पाती थी कि उसी से दूसरी जला लेते थे। इस तरह से सौ से अधिक सिगरेट रोज पी जाते थे। मैंने उनसे कहा कि आप इसे क्यो नही छोड़ते। उन्होने कहा कि मैं मजबूर हूँ, मैं इसका गुलाम हूँ, मुझसे नही छूट सकती। मैंने उनको एक शीशे के गिलास मे एक पाव गुनगुना पानी में करीब एक ग्रेन कलकेरिया फास घोल कर दे दिया कि इसको आप एक-एक चिम्मच करके थोड़ी-थोड़ी देर बाद पीजिये। इस तरह पीने से तीन घन्टे बाद उनकी सिगरेट पीने की इच्छा बिलकुल जाती रही।

आसानी से बच्चा पैदा होना—करीब आठ वर्ष हुये गर्मी के दिनो मे करीब दो बजे दोपहर को श्री हरनन्दन प्रसाद, एडवोकेट का मुन्शी चिट्ठी लेकर मेरे पास आया। उन्होंने लिखा था कि उनकी लड़की कमला नेहरू अस्पताल में दाखिल है और लेडी-डाक्टर साहबान कहती हैं कि बगैर आपरेशन के बच्चा नही हो सकता। मुझसे दवा मंगवाई, जिससे बच्चा, बिना आपरेशन के हो जाये। मैंने दवा भेजी, जिसका हाल इस किताब मे दिया हुआ है, उस दवा को पिलाया गया और बहुत ही जल्द बच्चा बिना आपरेशन के हो गया। इसी तरह से श्री शङ्कर सरन (जो हाईकोर्ट के जज रह चुके हैं) की बहिन को, जो अस्पताल मे थीं, दो रोज से दर्द होता था लेकिन बच्चा नहीं होता था, मेरी दवा दी गई और थोडी देर मे ही बच्चा हो गया। अगर यह दवा

औरतों को बच्चा होने से पहले दी जाये तो बिना आपरेशन के आसानी से बच्चा हो जायगा।

डाक्टर रामलाल राय, बड़ा बाजार, सागर (मध्य प्रदेश) ने लिखा है कि उन्होंने मेरी दवाओं को बुखार के २०० मरीजों को खसरा के ७० मरीजों को व चेचक के मरीजों को दी और मालिक की कृपा से सब अच्छे हो गये।

ये ऐसी उपयोगी दवायें हैं कि मैं इससे लाखों रुपये कमा सकता था, मगर मैंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि मेरा उद्देश्य केवल रोगियों के दुःख दूर करने का है। जो खुशी मुझको एक कठिन रोग से पीड़ित रोगी के अच्छे होने में होती है, वह बयान से बाहर है। और वह खुशी रुपये से नहीं खरीदी जा सकती।

हार्ट फेल रोकने की दवा—इससे हार्ट फेल होना फौरन रुक जाता है। हाईकोर्ट में एक साल के अन्दर ३ केस Standing Counsel (सरकारी वकील) के दफ्तर में हुये। दवा मेरे जेब में थी, फौरन दी गई, और तीनों ठीक हो गए। हर एक को इसे अपने पास हर वक्त रखना चाहिये न मालूम कब जरूरत पड़ जावे।

चेचक (माता)—यह बड़ा कठिन रोग है। इसका इलाज, जहाँ तक मुझे मालूम है, डाक्टर, हकीम और वैद्यों के पास नहीं है। यहाँ मालूम हुआ कि चेचक है, यह लोग हिदायत करते हैं कि दवा देना बन्द कर दिया जाये। परन्तु मेरी बायोकेमिक दवाएं इतनी अच्छी साबित हुई हैं कि १०० में लगभग सभी अच्छे हो जाते हैं। श्री मुहम्मद इदरीस,

वकील, आजमगढ़, ने मुझे लिखा है कि, उन्होने अपने गांव व आस-पास के गांवो मे इस दवा को इस्तेमाल किया, जिससे चेचक के सब रोगी अच्छे हो गये और उनको बहुत ही आश्चर्य हुआ।

टी० बी० (तपेदिक)—इस रोग से केवल भारत मे हर साल पांच लाख आदमी मरते हैं। डाक्टरी इलाज मे कम से कम फी रोगी पर ६००-७०० रुपया खर्च होता है फिर भी अक्सर देखने में आया है कि रोग जड़ से नही जाता। रोगियो को पहाड़ पर रहने को भेजा जाता है जिसमे सैकड़ो रुपये और खर्च होते हैं। हमारे देश मे अधिकतर आदमी बहुत गरीब हैं। इसलिए लाखो आदमी बिना दवा के मर जाते हैं। मेरी दवाओ से टी० बी० के रोगियो को अगर रोग के शुरुआत से ही दवा दी जाय तो सौ में ६० अच्छे हो सकेंगे; और कुल पांच लाख रोगियों के लिए केवल २००० रुपयो की दवा काफी होगी। लेकिन मेरे पास ऐसा कोई जरिया नही है जिससे मैं इस बड़े देश के हर शहर व गांवमे दवा पहुंचा सकूं। मैं बराबर कोशिश करता रहा हूं कि भारत सरकार इन दवाओं को गांव-गांव में बांटे। मुझे खुशी हुई कि डिप्टी डायरेक्टर जनरल, हेल्थ सर्विसेज, न्यु देहली ने मुझे लिखा है कि गांवो के रोगियो के लिए मेरी दवाओ के इस्तेमाल के बाबत काफी गौर किया जायेगा, लेकिन दुःख है कि फिर चुप हो गये; जवाब तक नही देते कि कब गौर करेगे। मेरे पास ३० खत ऐसे हैं, जिससे जाहिर होगा कि बहुत से टी० बी० के रोगी मेरी दवाओं से अच्छे हुये हैं, और हो रहे हैं। मिस्टर शेरवानी, अलीगढ़ निवासी को १५ साल से टी० बी० था—अक्सर खून की कै होती थी। विलायत,

जर्मनी वगैरह रह आये थे, कुछ फायदा नही हुआ मेरी दवा से थोड़े ही दिनो मे अच्छे हो गये हैं।

मेरे पास करीब १५०० ऐसे खत हैं जिससे जाहिर होगा कि मेरी दवायें हर रोग में कितनी उपयोगी हैं। मैं उनके बावत इस भूमिका में और अधिक नही लिखना चाहता। अध्याय नं० ४ मे मैं उन १५०० खतो मे से कुछ खतों की बावत लिखूंगा, उनको अवश्य पढ़िये। उनको पढ़ने से पाठक को प्रतीत हो जायगा कि मेरी दवायें अवश्य लाभदायक हैं, और उनको हर घर में रखना चाहिये, ताकि हर एक पढ़ा-लिखा स्त्री व पुरुष अपना व अपने गरीव पड़ोसियो का, विना खर्चे के, उपकार कर सकें।

हैजा व चेचक जब फैलते हैं, हजारों को मार डालते हैं। मेरी दवाएं बहुत सस्ती होने के कारण आधी-आधी ग्रेन पुड़ियों मे बांध कर हर एक रोगी को गांव मे दी जा सकती हैं, और उनको जान बचाई जा सकती है। एक गांव के लिए चार आने की दवा काफी होगी।

मैंने सन् १९५४ से पहिले किसी किताब या पेम्फलेट का दाम नही लिया। लेकिन-मुझे बहुत से लोगों ने जोर दिया कि चूंकि लोग मुफ्त चीज की कदर नही करते, किताब घर पर ले जाकर रख देते हैं, इसलिए किताब की कीमत रखना चाहिये, ताकि लोग किताब की कदर करें और उससे फायदा उठायें इसलिये मैंने इस पुस्तक का दाम रक्खा है जो कि इतना कम है, जिससे हर आदमी इसे आसानी से ले सके।

मैंने होमियोपैथिक इलाज पर भी एक पुस्तक लिखी है जिससे वह इलाज बहुत आसान हो गया है। पुस्तक अंग्रेजी मे है उसका नाम Homoeopathy Made Easy है। अब हिन्दी मे अनुवाद कर दिया है।

मुझसे लोग अक्सर पूछते हैं कि दवा कहाँ से खरीदें। इसलिये मैं नीचे पता लिखता हूँ, जहाँ से वे दवाएं, किताबें व दवा रखने के लिए बक्स खरीद सकते हैं।

श्री एस० दरबारी, २५-बी कानपुर रोड, इलाहाबाद।

मुझसे बहुत से सज्जन पूछते हैं, कि दवा मंगाने का आर्डर किस तरह से दें, इसलिये मैं लिखता हूँ कि पत्र मे यह लिखे कि नीचे लिखी हुई बायोकेमिक दवाएं भेजे। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x और १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, कालीम्यूर ३x, कालीफास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x। यह भी लिखें कि इन दवाओं का एक-एक ड्राम भेजें। अमेरिकन या जर्मन दवाओं के खरीदने की जरूरत नही है। हिन्दुस्तान की बनी दवायें जो इन स्थानो पर मिलेगी काफी अच्छी होती हैं। मैं इन्ही दवाओ को हमेशा इस्तेमाल करता हूँ। एक-एक ड्राम की कीमत आज कल लगभग चार-चार आने हैं। इनके साथ दो दर्जन एक ड्राम वाली खाली शीशियां भी मंगाये और एक खाली बक्स भी मंगायें, लगभग ६० या १०४ दवाओं के रखने के लिए जैसी जरूरत हो। यह बक्स ५ रु० या ७ रु० या ८ रु० मे आ जायगा। साथ ही साथ नीचे लिखी हुई होमियो-

पैथिक दवायें भी मंगायें (गोलियों की शक्ल मे एक-एक ड्राम की शीशियां)। इनकी खुराक एक गोली होगी। यह दवायें १०-१५ साल तक नहीं बिगड़ती हैं, अगर तेज लू व धूप से बचाव किया जावे। दवाइयां बक्स से हमेशा बन्द रखनी चाहिये।

एसिड फास ६	केमोमिला ६	इगनेशिया ३०
एपिस ६	चाइना २००	नक्स वोमिका ६
एकोनाइट ६	कोलोसिंथ ६	फोस्फोफाइलम ६
आर्निका ६	ग्रेफाइटिस २००	पल्सेटिला ६
आर्सेनिक एलबम ३०	हैमामैलिस ६	रस-टाक्स ६
बैपटीशिया ६	हिपरसल्फ ६	सबाइना ६
बैलाडोना ६	आयोडियम ३०	
ब्राइयोनिया ६	इपीकाक ६	
बैराइटा कार्ब २००	कैलकेरिया फास ३०	

यह कुल दवायें करीब ७) या ८) में आ जायंगी। इनसे काम चल सकता है। मगर अच्छा तो यह होगा कि १२ बायोकेमिक दवाओं की ६x, १२x, ३०x व २००x भी मंगवा लें। इन सबके मंगाने पर भी २०) या २५) के लगभग ही खर्च होगा। अगर यह कुल मंगाई जायंगी तो बड़ा बक्स जिसमे १०४ दवायें आ सके, लेना होगा। मैंने खाली शीशियां इसलिये लिखी हैं कि इनमे मुख्य-मुख्य रोगों की दवाएं मिला कर रखी जा सकती हैं ताकि बार-बार दवाओं के मिलाने में जो समय खर्च होता है, वह बच जाय।

मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि हर एक गांव मे, हैजे या चेचक के दिनों मे, यह दवाएं बांटी जायं, ताकि फौरन यह दवा हर रोगी को मिल जाय और उससे फायदा हो। मगर जैसा कि मैं लिख चुका हूं, मेरे पास कोई ऐसा जरिया नहीं है कि मैं भारतवर्ष के हर एक गांव में दवाएं पहुंचा सकूं। मुझे बड़ा दुःख इस बात का है कि हमारी सरकार इसमे कुछ मदद नही देती है, जिसका कारण यह है कि राज्य के डाक्टरी महकमे, एलोपैथिक डाक्टरों के हाथ मे हैं और ये होमियोपैथी या बायोकेमिक व अन्य इलाजों को नफरत की निगाह से देखते हैं और खुल्लम-खुल्ला उनकी हंसी और मजाक उडाते हैं। शुरू मे जब मैंने हैजे की दवा बनाई थी तो मैंने भारतवर्ष के कुल मेडिकल कालिजों के प्रिन्सिपल्स के पास दवा भेजी थी और उनसे प्रार्थना की थी कि इस दवा को अजमाएं मगर आजमाना तो दूर रहा किसी प्रिन्सिपल ने मेरे पत्रों का उत्तर तक नहीं दिया, यद्यपि एक सज्जनता के नाते से उनका फर्ज था कि जवाब देते। फिर मैंने हर सूबे के गवर्नरों को लिखा मगर सिवाय यू० पी० व एक और सूबे के अलावा किसी ने जवाब नहीं दिया। यू० पी० के गवर्नर ने यह जवाब दिया कि महकमे मे मेरी चिट्ठी भेज दी गई है लेकिन महकमें वालो ने कोई जवाब नहीं दिया। मैंने यहां तक लिखा कि मैं भारतवर्ष के कुल रोगियो के इलाज का खर्चा अपने पास से करने को तैयार हूं मगर तो भी कोई तवज्जह नहीं दी गई।

एलोपैथिक डाक्टर साहबान कहते हैं कि इन दवाओं की आजमाइश नही की गई है इसलिये इस्तेमाल नहीं कर सकते हैं। जब उनसे कहा जाता है कि आप इनको आजमाइए तो इस पर भी तैयार नहीं होते। बिना इन दवाओ को आजमाये यह डाक्टर इनको वाहियात

बतलाते हैं। क्या यह इन्साफ है ? यह तो ऐसे ही है कि जैसे बिना मुलजिम पर मुकदमा चलाये हुए और बिना उसको सफाई का मौका दिये हुये यह समझ कर कि उसने जरूर कत्ल किया होगा फांसी दे देना। मैं तो एक मिनट में अपनी उंगली जलाकर और छाला गायब करके साबित करने को तैयार हूँ, मगर कोई सुने तो।

जिन डाक्टरों ने इन दवाओं को इस्तेमाल किया है, वे इनकी बहुत ही तारीफ करते हैं मेरे पास २१ अगस्त १६५५ का खत ऐलोपैथिक डाक्टर, एम० बी० तारे का आया, जिनका दवाखाना १० महारानी रोड, इन्दौर में है। उसका सारांश यह है कि उन्होंने मेरी दवाओं को नीचे लिखे रोगो में इस्तेमाल किया और सौ मे सौ रोगी अच्छे हुये। लोग इन दवाओं की पुड़िया को जादू की पुड़िया कहते हैं। वे रोग यह हैं (१) अनीमिया (कमी खून), (२) दमा, (३) हैजा, (४) जुकाम, (५) खांसी, (६) ट्यूमर (Tumour), (७) पेचिस, (८) कमजोरी, (९) अधिक माहवारी, (१०) फोते का बढ़ जाना, कई कठिन रोगियों को दी गई और बहुत कामयाबी हुई, (११) दांतों का दर्द जहां एलो-पैथी मे एलकोहल का इन्जेक्शन देते हैं जिससे थोड़े अरसे के लिए कुछ आराम मिलता है या आपरेशन करते हैं लेकिन इन दवाओं से आसानी से ठीक हो जाते हैं, (१२) दांतो मे पानी या खाना लगना—इसमे दांतों का इनैमिल व डैन्टीन खुल जाने से पानी व खाना लगता है और इसका इलाज तेज कास्टिक से इतना अच्छा साबित नही होता जैसे मेरी दवाओं से जो जादू का-सा कार्य करती है और रोगी को कहना पड़ता है कि यह दवायें लगाने की दवाओ से ज्यादा अच्छा काम करती हैं। डाक्टर साहब फिर यह लिखते हैं कि उनको बहैसियत

डेन्टिस्ट (dentist) के बायोकेमिक दवाओं के मुकाबले मे हार माननी पड़ती है क्योंकि वे एलोपैथिक दवाओ से इतनी जल्दी एक दिन मे फायदा नहीं पहुंचा सकते हैं जैसा इन दवाओं से होता है। मैं इन डाक्टर साहब को जानता भी नहीं हूँ और यह इनका पहला खत मेरे पास आया था। यह क्यों गलत लिखेंगे ?

अफसोस तो यह है कि सरकारी डाक्टर और सरकारी अफसरान सुनते तक नहीं हैं। वे कहते होगे कि लाखों रोगी मरें तो मर जाने दो लेकिन यह दवाएं इस्तेमाल नही करेंगे क्योकि उनको आजमाया नही गया है। और न उनको आजमायेगे। मैं तो यह कहता हूं कि विना दवा के मर जाने से तो यह अच्छा है कि यह दवा दी जाय। अगर सौ से ९० या ८० नहीं तो यह थोड़ी देर के लिए ऐसा मान लें कि ५० या २५ रोगी अच्छे होगे तो भी चौथाई रोगी अच्छे ही हो जायेगे। अगर २० लाख रोगी हर साल विना दवा के मरते हैं तो इन दवाओ से कम से कम ५ लाख तो अच्छे हो ही जायेगे और खर्च सिर्फ ५,०००) होगा। अफसोस तो यह आता है कि सरकारी अफसरान यह सोचते हैं कि लोगो को दवा मिले तो उनको कीमती दवा मिले, वरना मरने दो। मसला है—या खायें घी से या जाएं जी से।

सच बात तो यह है कि ऐलोपैथिक डाक्टर डरते हैं कि अगर यह इलाज चला जायगा तो उनको कौन बड़ी-बड़ी फीसें देगा और कीमती दवाएं बेचने से जो फायदा उनको होता है, वह बन्द हो जायगा। हमारी सरकार इन्ही डाक्टरों की राय पर चलती है। यह नही सोचती कि करीब १२ वर्ष हुये अलीगढ़ के एक वकील, श्री माहेश्वरी ने मुझसे कहा कि मेरी दवाओं को देवेन्द्र होमियोपैथिक खैराती अस्पताल,

अलीगढ मे डाक्टरों ने २,००० रोगियों पर इस्तेमाल किया है और ८० फीसदी से ज्यादा रोगी अच्छे हुये हैं। इसके कुछ ही दिन बाद मेरे पास उस अस्पताल के संस्थापक श्री त्रिलोकी नाथ जी का पत्र आया जिसमे उन्होंने लिखा कि उनकी इच्छा है कि मेरी १२५ किताबें खरीद कर एक-एक प्रति अपनी १२५ शाखाओं को, जो अलीगढ जिले के गांवों मे हैं, दें।

मैंने उनको लिखा कि मैंने सुना है कि आपके अस्पताल में मेरी दवाइयां इस्तेमाल की गई हैं और ८० या ९० फीसदी कामयाबी हुई है तो उनका जवाब आया कि ८० फीसदी से अधिक कामयाबी हुई है।

यदि इतनी कामयाबी इन दवाओं से होते हुये भी हमारी सरकार इन दवाओं को इस्तेमाल न करे तो सिर्फ यही कहना होगा कि हमारे देश की बदकिस्मती है। लाखो गरीब लोग मरे जा रहे हैं जो इन दवाओं से आसानी से बिना खर्च के अच्छे हो सकते हैं मगर सरकार यह दवाएं नही चलने देती है। सख्त अफसोस की बात है। मैं मालिक से यही प्रार्थना करूंगा कि हमारी सरकार को ठीक समझ प्रदान करे।

अगर किसी पार्टी की गवर्नमेंट अब भी इन्कार करे तो गांव वालो को उस पार्टी को वोट नही देना चाहिये। ऐसी पार्टी को वोट देना चाहिये जो लिखकर वायदा करे कि इन दवाओं को गांव-गांव में चलाएंगे। इस बात का प्रचार गांव-गांव में होना चाहिये। मीटिंग करना चाहिये।

मैं पहले पैम्फलेट जिसमे दवाओ का हाल लिखा था, मुफ्त बांटता था मगर लोग मुफ्त चीज की कदर नहीं करते और पैम्फलेट से फायदा नही उठाते थे यानी दवा का बक्स मंगाकर बांटने का काम नही करते थे। इसलिए मैंने मजबूर होकर पुस्तक का मूल्य रख दिया है जिससे हर एक कोई ले सके और उससे फायदा उठाये। कृपया पुस्तक मंगाने के लिए मूल्य मनीआर्डर द्वारा भेजिये। वी० पी० भेजने मे कठिनाई होती है।

अध्याय १

वायोकेमिक इलाज क्या है ? इसको किसने ईजाद किया और किस तरह ?

एक जर्मन डाक्टर डब्ल्यू एच० शुसलर ने वायोकेमिक इलाज का तरीका निकाला। उन्होने मुरदों की लाशों को जलाया और उसकी राख की जांच की। उसमे उन्होने १२ प्रकार के कम्पाउंड्स (मिले हुए तत्व) पाए जिसका नाम उन्होने साल्ट (Salt) रक्खा। उन्होने यह ख्याल किया कि ऐसा तो नहीं है कि इन्हीं वारहों चीजों (Salts) मे से किसी एक की कमी से मनुष्य को रोग होता हो और उस कमी को पूरा करने से मनुष्य अच्छा हो जाता हो। उन्होंने कई रोगियो मे इसकी जांच की तो उन्होंने अपना ख्याल सही पाया। उन्होने इस विषय पर वहुत से लेख और कितावें लिखी। यही वायोकेमिक इलाज कहलाता है। शुसलर साहब ने अपनी किताव में एक-एक रोग को लिया है और उसमे हर एक दवा की वावत लिखा है कि किन-किन सुरतों में उस रोग में कौन-कौन दवा दी जाये। एक दवा को छांट कर रोगी को देना चाहिये। १२ दवाओं मे से एक दवा का छांटना कठिन काम है और उससे उन रोगियो को फायदा नहीं पहुँचेगा जिनको गलत दवा दी जायेगी। मैंने यह खोज किया कि एक रोग के लिए कई वायोकेमिक दवाएं जो उस रोग के लिए लाभदायक पाई गई हैं, उनको मिलाकर उस रोग के हर रोगी को वह मिली हुई दवा दी जाये, तो उससे जिस किसी कम्पाउंड वा साल्ट की कमी होगी, पूरी हो जायगी और जो

गलत दवा होगी, वह पड़ी रहेगी। मैंने और अन्य लोगों ने (मेरे तरीके की) इन मिली हुई दवाओं को बहुत काफी तौर से इस्तेमाल किया है और बहुत फायदेमन्द पाया है।

इन बारहो कम्पाउंड्स या साल्ट्स के नाम नीचे लिखता हूं—

१—कलकेरियः फ्लोराइड
२—कलकेरिया फास्फेट
३—कलकेरिया सल्फेट
४—फैरम फास्फेट
५—काली मूरेटिकम
६—काली फास्फेट
७—काली सल्फेट
८—मैगनेशियम फास्फेट
९—नैट्रम मूरेटिकम
१०—नैट्रम फास्फेट
११—नैट्रम सल्फेट
१२—साइलीशिया

पोटैन्टाइज कैसे करते हैं या पोटैन्सी कैसे बनाते हैं?

मैंने ऊपर लिखा है कि जिस साल्ट की कमी से मनुष्य बीमार हो उसी साल्ट की कमी को पूरा करने से रोगी अच्छा हो जाता है। लेकिन वह साल्ट तब ही फायदा करेगा जब उसकी शक्ति बढ़ायी जायगी। इसकी पोटैन्सी बढ़ाना या पोटैन्टाइज (potentise) करना कहते हैं।

एक मिसाल लीजिये, अत्यन्त कमजोरी को दूर करने के लिए या हार्ट फेल रोकने के लिए नैट्रम मूरेटिकम लाभकारी है। यह नैट्रम मूरेटिकम मामूली नमक है जिसको हम लोग रोज खाते हैं। उसको अगर रोगी को देंगे तो फायदा नहीं होगा। लेकिन उसी को पोटैन्टाइज करके देने से फौरन लाभ होगा। अगर नैट्रम मूरेटिकम की पोटैन्सी बनाना है तो नमक का एक हिस्सा लीजिये और नौ हिस्से उस शक्कर में मिलाइये जो कि दूध से बनाई जाती है (Sugar of milk) और खरल में २ घन्टे तक घोटिये तो नैट्रम म्योर का नम्बर १x बन जायेगा। हम उसको नैट्रम म्योर १x कहते हैं। अब इस १x दवा का एक हिस्सा लीजिये और उसमें नौ हिस्से उपरोक्त शक्कर को मिलाइये और फिर उसे खरल में घोटिये तो नैट्रम म्योर २x बन जायेगा। इसी तरह से ३x, ६x १२x इत्यादि बन जायेंगे। यह बात नोट करने योग्य है कि दवा जितनी कम होती जाती है दवा की शक्ति यानी लाभ पहुंचाने की शक्ति उतनी ही बढती जाती है। इस तरह यह पोटैन्सी बनाने का काम पाठकों को नहीं करना पड़ेगा होमियोपैथिक दवाओं में पोटैन्सीज बनी-बनाई तैयार रहती हैं और जिस पोटैन्सी की दवा की जरूरत हो उसको दवाखानों को लिख देते हैं वह लोग उसी पोटैन्सी की दवा भेज देते हैं।

कभी-कभी दवाओं के नम्बरों में x नहीं होता यानी बजाय नैट्रम म्योर ३x के नैट्रम म्योर ३ होता है। इन दवाओं के बनाने में हर दफे बजाय ९ हिस्से लेने के ९९ हिस्से लिए जाते हैं। ये दवायें आमतौर से एक ड्राम की शीशियों में बिकती हैं। बायोकेमिक दवायें आमतौर से पाउडर की शकल में बिकती हैं, जिनको (Trituration)

कहते हैं। ये टिकियों की शक्ल में जिनको टेबलेट (Tablet) कहते हैं, या गोलियों की शक्ल मे जिनको (Globules) कहते हैं भी बिकती हैं। कभी-कभी पानी की शक्ल मे भी बिकती हैं जिनको टिन्चर (tincture) कहते हैं। यह सबसे सस्ता और आसान पाउडर होता है। मैं हमेशा पाउडर ही इस्तेमाल करता हूं।

ये दवायें भारत मे बनती हैं और अमेरिका व जर्मनी से भी आती हैं। लेकिन भारत मे बनी दवाये उनके मुकाबले मे सस्ती और काफी अच्छी होती हैं। मैं हमेशा उन्हीं को इस्तेमाल करता हूं।

खुराक या मात्रा

शुसलर साहब जिन्होने बायोकेमिक इलाज को निकाला है एक-एक खुराक मे २ ग्रेन से लेकर ५ ग्रेन तक देते थे (एक ड्राम ६० ग्रेन के बराबर होता है)। इस तरह से अगर किसी रोगी को चार खुराकें रोज दी गईं तो ८ ग्रेन से लेकर २० ग्रेन तक दवा रोज खर्च होगी। इसके विरुद्ध मेरा तरीका यह है कि मैं एक ग्रेन या आधा ग्रेन पाउडर लेता हूं (एक दवा का या कई दवाओ के मिले हुये पाउडर का) और उसको आधा पाव पानी मे घोलता हूँ जो कि लगभग ३२ चाय के चम्मच के बराबर होता है और हर एक चाय का चम्मच एक खुराक होती है। इस तरह से एक ग्रेन या आधी ग्रेन मे ३२ खुराकें हो जाती हैं जो प्रायः एक रोगी के लिए काफी होती हैं। क्योंकि अगर दावा सही है तो कभी-कभी पहली चम्मच से ही फायदा होता है। इस तरह से दवा की बहुत बचत हो जाती है और चूंकि एक ड्राम दवा इकट्ठी

खरीदने में ३-४ पैसे ड्राम की पड़ता है इसीलिये मैं कहता हूँ कि १ पैसे मे ३०-४० रोगी अच्छे हो सकते हैं। इस विधि से देने से दवा कम खर्च होती है और उससे विशेष फायदा होता है। यहां मेरे एक मित्र श्री शम्भु प्रसाद, एडवोकेट भी दवायें मुफ्त बांटा करते हैं। वह मुझसे कभी-कभी सलाह कर लिया करते हैं। उनको मैंने अपना तरीका इस्तेमाल करने को बताया था। उन्होंने मुझे एक रोज यह बतलाया कि उनके पास एक रोगी आया जिसके लक्षण (Symptoms, अलामते) नैट्रम म्योर की थीं। उन्होंने उसे ये दवा २ ग्रेन से लेकर ५ ग्रेन तक की खुराक में दी मगर कुछ भी फायदा नहीं हुआ। एक रोज जब वह रोगी उनके यहां आया हुआ था, उनको अत्यन्य दुःख हुआ कि मैं दवा सही दे रहा हूँ लेकिन फायदा नही करती ! उस वक्त उनको मेरा दवा देने का तरीका याद आया और उन्होंने एक प्याले में आधा पाव गुनगुना पानी मंगाया और एक ग्रेन दवा उसमे घोल दी और एक चम्मच उसको दिया। पहिले ही चम्मच से उसे फौरन आराम हुआ।

नोट—मेरी राय मे अगर गुनगुने पानी में दवा घोल कर दी जाये तो ठंडे पानी मे घोलकर देने से ज्यादा फायदा होता है इसलिये मैं गुनगुने पानी में दवा घोलकर पीने को बताता हूँ। पहली खुराक के बाद पानी ठंडा हो जायगा उसे फिर गरम करने की जरूरत नही है। अगर गुनगुना पानी न मिले तो ठंडे पानी में ही दवा दीजिये।

अगर रोग बहुत तेज हो मसलन हैजा या चेचक हो तो दवा घंटे-घंटे या आधे-आधे घन्टे या पांच-पांच या एक-एक मिनट बाद तक भी

दी जा सकती है। अगर रोग पुराना (chronic) है तो एक खुराक ३-४ घण्टे बाद दी जा सकती है।

कौन-सी पोटैंसी इस्तेमाल करना चाहिये : मेरे तजुरबे मे फैरम-फास और साइलीशिया १२x की शक्ति मे देना चाहिये। कलकेरिया फास बूढे आदमियो या बहुत कमजोर आदमियो को १२x मे देना चाहिये और ५५ या ६० तक की उम्र वालो को ३x देना चाहिये बाकी नौ दवायें ३x मे देना चाहिये।

शुरू में यही शक्तियां इस्तेमाल करना चाहिये, अगर फायदा न हो या थोड़ा फायदा होकर रुक जाये तो ऐसी सूरत मे बजाय ३x के ६x देना चाहिये। फिर यदि ६x भी पूरी तौर पर अच्छा न करे तो उन दवाओ का १२x देना चाहिए। उसके बाद ३०x देना चाहिये। १२x वाली दवायें दिन मे तीन-चार बार तक दे सकते हैं, ३०x वाली दवायें दिन मे २-३ बार देना चाहिए अगर ३०x से भी रोग ठीक न हो तो २००x देना चाहिए। २००x की दवा दिन मे एक बार से ज्यादा नही देना चाहिये। २००x की दवायें भी मिला सकते हैं।

अध्याय ३ में मैंने हर एक साल्ट (salt) को अलग-अलग लिया है और जिन-जिन लक्षणो मे वह आमतौर से दिया जाता है उसे लिखा है। पाठकों को अच्छी तरह से याद कर लेना चाहिये, क्योंकि अगर उस साल्ट (salt) के लक्षण किसी रोगी मे हों तो उस नुस्खे मे मिला देना चाहिए जो कि उस रोग के लिये मैंने अध्याय नं० ४ मे लिखा है।

अध्याय न० ४—यह मुख्य अध्याय है। इसमे मैंने हर एक रोग को अलग-अलग लिया है और उसका बायोकेमिक विधि से इलाज

लिखा है। चूंकि मेरा उद्देश्य रोगी का रोग दूर करने का है इसलिये कहीं-कहीं मैंने होमियोपैथिक या अन्य दवायें भी लिख दी हैं।

अध्याय नं० ५ मे मैंने कुछ ऐसे नियम लिखे हैं कि यदि उनका लोग पालन करें तो कभी बीमार न पड़ें और उसकी दीर्घ आयु हो जाय।

अध्याय नं० २—इसमे मैंने दवाओं कि बावत और लोगो की राय लिखी है। इनके पढ़ने से मालूम होगा कि ये दवायें कितनी फायदेमन्द हैं। मेरे पास करीब १५०० खत है उन्हीं मे से चन्द खतों का सार उसमे दिया है। और कहीं-कही मुख्य-मुख्य अपने केस दिये हैं।

नोट—चूंकि प्रायः मेरे नुस्खो मे रोगो के लिये २ दवाओं से ज्यादा है और हर एक बार उन दवाओं का मिलाना कष्टदायक होगा इस-लिये मैं ऐसा करता हूँ कि जिन-जिन दवाओ को मिलाना है उनके ४ या ५ ग्रेन हर एक के लेकर एक कोरे कागज पर रख कर एक साफ सीक से या बांस की तीली से उन दवाओ को अच्छी तरह मिला लेता हूँ और उनको एक कोरी शीशी मे रख लेता हूँ और उनके कार्क पर उस बीमारी का नाम लिख देता हूँ। जैसे हैजा में ९ दवाओं को मिलाकर देता हूँ। उन नौ दवाओं मे से हर एक का तीन-चार ग्रेन लेता हूँ और उन सबको अच्छी तरह मिला कर एक कोरी शीशी मे रख लेता हूँ और उस पर हैजा लिख देता हूँ। यही पाठकों को करना चाहिये और इसके लिये २-३ दर्जन कोरी शीशी १-१ ड्राम की मंगाना चाहिये और मुख्य-मुख्य रोगो की, जिनके रोगी अक्सर आते रहते हैं, दवायें तैय्यार रखना चाहिये ताकि जैसे ही रोगी आवे उस शीशी मे

में थोड़ी-सी दवा दे दी जाये और रोगी को हिदायत कर दी जाय कि आधपाव गुनगुने पानी में घोलकर एक-एक चाय का चम्मच या इसके अन्दाज से पिये ।

कुछ रोगी ऐसे होते हैं जो ये चाहते हैं कि जो इलाज कर रहे हैं उसे न छुडाया जाये । चूंकि बायोकेमिक इलाज के उसूल के अनुसार रोगी के शरीर मे साल्ट (salt) की कमी को पूरा करना है इसलिये अन्य दवाओ के साथ ये दवाये भी चल सकती हैं । लेकिन इस बात का ख्याल रखना चाहिये कि अन्य दवाओं के १ या आध घन्टे पहिले या पीछे ये दवायें दी जायें । कभी-कभी यह खतरा हो सकता है कि बायो-केमिक इलाज की सूक्ष्म दवाओं के असर को दूसरे इलाज की दवायें काट न दें इसलिये सबसे अच्छा तो यही है कि और इलाज बन्द कर दिए जायें । लेकिन अगर रोगी उसको बन्द करने को तैयार नहीं है तो साथ-साथ चलने दिया जा सकता है । इस विषय मे मैं यह बताना चाहता हूँ कि स्वर्गीय डाक्टर सरकार मशहूर होमियोपैथ जो इलाहा० वाद मे हुए हैं, ने मुझसे कहा था कि एक बार कलकत्ता के बड़े आदमी का इलाज करने के लिये वे बुलाये गये । इसी तरह और भी होमियो-पैथ बुलाये गये । रोगी ने कहा कि उनको मारफिया अधिक खाने की आदत पड़ गई है और वह छूट नही सकती है और अगर वह छोड़ देंगे तो मर जायेंगे इसलिये होमियोपैथिक इलाज उसी डाक्टर का करेंगे जो उनको मार्रफिया खाने से न रोके । अन्य होमियोपैथिक डाक्टर लोग इस शर्त पर इलाज को तैय्यार नहीं हुये मगर डाक्टर सरकार ने यह सोचा कि मारफिया इस रोगी को तो खुराक हो गई जैसे रोटी दाल । होमियोपैथिक दवा मारफिया के साथ-साथ चल सकती है यह सोच कर दवा दी और फायदा हुआ और रोगी अच्छा हो गया ।

कभी-कभी ऐसा देखने मे आता है कि हमारे घर मे कोई बीमार हो जाता है मगर कोई डाक्टर फौरन नही मिलता। ऐसा सफर की हालत में अक्सर होता है। ऐसी हालत मे हर एक को सख्त परेशानी होती है रोगी तड़प रहा है मगर कोई कुछ मदद नहीं कर सकता है। ऐसे मौके पर यह ख्याल पैदा होता है कि अगर हम भी कुछ डाक्टरी जानते होते तो अच्छा होता। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि यह दवायें ऐसी लाभदायक हैं कि इनके सेवन से अक्सर दूसरे डाक्टर की जरूरत ही नही होगी। लेकिन अगर रोग कठिन है यानी अगर बहुत तेज बुखार है या बेहोशी है या कमजोरी बहुत मालूम होती है या खून ज्यादा निकलता है तो ऐसी सूरत मे डाक्टर फौरन बुलाना चाहिये, खुद जिम्मेदारी लेना ठीक नहीं है मगर साथ-साथ यह दवायें फौरन शुरू कर देना चाहिये। अक्सर इन्हीं से डाक्टर के आते-आते फायदा हो जायगा। लेकिन अगर रोगी बहुत गरीब है तो इलाज शुरू से ही जारी रखना चाहिये।

माननीय श्री बी० मलिक, भूतपूर्व चीफ जस्टिस हाईकोर्ट इलाहाबाद ने मुझसे कहा कि वे एक बार मोटर से आ रहे थे। एक गाँव मे होकर गुजरे तो एक बुड्ढी औरत ने मोटर रोकने का इशारा किया मोटर रोकी गई, उसने रोकर कहा कि उसका लड़का बहुत बीमार है कोई दवा दीजिए, वे दवा न दे सके, वह रोने लगी और कहने लगी कि मैं बीसो मोटरें रोक चुकी हूँ कोई दवा नही देता है, उस वक्त उनको ख्याल पैदा हुआ कि हर एक को दवा देना सीखना चाहिये, और दवा अपने साथ रखना चाहिए।

इस किताब मे मैंने रोगो के नाम दिये हैं और उनके नुस्खे भी। बहुत से रोग तो ऐसे हैं कि जिनका नाम आमतौर से लोगों को मालूम नही है। इसलिये मैंने रोग के साथ-साथ उनके लक्षण भी दे दिये हैं जिससे रोग का कुछ काम चलाने लायक ज्ञान हो जायगा। अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए एम० भट्टाचार्य कम्पनी, होम्योपैथिक दवाखाना (कलकत्ता व बनारस) की बनाई पुस्तक पारिवारिक चिकित्सा पढना चाहिये। इसका मूल्य करीब ४ रु० के है। इसमे शरीर के अंगों के नाम व रोगों के लक्षण ठीक प्रकार से दिये है यद्यपि कुछ रोगो के नाम ऐसे दिये हैं कि उनका समझना कठिन है जैसे सब लोग हैजा या कालरा समझते हैं मगर उस किताब मे बजाय हैजे के विशूचिका शब्द दिया है जिसको लोग नही जानते। इसीलिये मैंने रोजाना बोलने के शब्द इस पुस्तक मे लिखे हैं।

इस विषय पर हिन्दी मे एक पुस्तक फादर-मुलर्स दवाखाना कानकनाडी (जिला मंगलौर) (मद्रास) की छापी हुई होमियोपैथिक दवाखानों मे मिलती है जिसका मूल्य करीब २ रु० होगा, उसे पढ़ना चाहिये यह हर एक होमियोपैथिक दूकानों पर मिलती है।

अंग्रेजी मे Boericke and Deweys 12 Tissues Remedies एक अच्छी किताब है जिसका मूल्य ११ रु० है, सेठडे कम्पनी ४०-ए स्ट्रेन्ड रोड ए० बी० पोस्ट बाक्स ५६३ कलकत्ता से मिलती है। और अंग्रेजी मे डाक्टर मित्रा की वायोकेमिक किताब जिसका मूल्य २½ रु० है पढने योग्य है। इसके मिलने का पता Dr. Mitra. 97 Cornawallis Street, Shyambazar.

Calcutta । इसमे बहुत से रोग दिये हैं जिनका मेरी पुस्तक में वर्णन नहीं है ।

एक ध्यान देने योग्य बात

बहुत से रोगियो को ऐसा ख्याल होता है कि मैं अच्छा नही हो सकता । ऐसा ख्याल बहुत ही हानिकारक है और अच्छा होने मे बाधा डालता है । इसलिये हर मरीज को समझा देना चाहिये कि ऐसा ख्याल कभी मन मे न पैदा होने दे । रोगी को चाहिये कि वह हर समय यही सोचे कि मैं अवश्य अच्छा हो जाऊंगा । और अपने पास एक शीशा रक्खे और बार-बार शीशे में देखकर यह कहे कि अब मैं अच्छा हो रहा हूँ । और हर एक घर वाले, मित्र और रिश्तेदारो को चाहिये कि रोगी से बार-बार यही कहे कि आपको फायदा है । हमारे देश में कुछ लोगो का ऐसा ख्याल है कि अगर रोगी से कहेगे कि अच्छे हो रहे हो तो नजर लग जायेगी इस ख्याल से कहते हैं कि तुम बहुत कमजोर हो गये हो । इसी तरह से सहानुभूति दिखाते हैं । ये उनकी बहुत बड़ी भूल है । यह नही जानते कि इस तरह से रोगी को कितना नुकसान पहुँचाते हैं । यह हमदर्दी करना नहीं है दुश्मनी करना है ।

डाक्टरो का फर्ज है कि रोगी से यही कहे कि तुम जल्दी अच्छे हो जाओगे । यद्यपि वह जानते हैं कि वह अच्छा नहीं हो सकता । रोगियो से अगर यह कह दिया जाये कि तुम अच्छे नही हो सकते तो यदि वह न मरता हो तो मर जायगा । एक अरसा हुआ एक बूढा आदमी बहुत सख्त बीमार पड़ा । सिविलसर्जन साहब बुलाये गये । सिविलसर्जन ने रोगी को देखा और नुस्खा लिखा चलते वक्त रोगी को

धर्मपत्नी ने उन डाक्टर साहब से पूछा कि रोगी को हालत कैसी है। सिविलसर्जन ने जवाब दिया कि हालत बहुत खराब है बचने की कोई उम्मीद नही है। रोगी ने यह बात सुन ली, उसको बहुत क्रोध आया और चिल्लाकर उसने कहा कि डाक्टर साहब की फीस दे दी और उससे कहा कि आज से कभी मेरे यहाँ न आये। मैं कोई दवा नहीं करूंगा और अच्छा होकर दिखा दूंगा। उसने उनकी दवा नही की और अच्छा हो गया। इससे जाहिर है कि आत्म-शक्ति कितनी बलवान है। इस विचार-शक्ति से रोगी के अच्छे होने मे मदद मिलेगी। दवा तो अपना काम करेगी ही परन्तु इस विचार-शक्ति से रोगी और भी जल्दी अच्छा हो जायेगा। यह मेरा आजमाया हुआ है।

हर एक को यह सोचना चाहिये कि हम सौ वर्ष तक जियेंगे। अगर किसी की उम्र ८० साल की है और कोई उनसे पूछे कि आपकी क्या उम्र है तो उत्तर देना चाहिए कि सिर्फ ८० साल है। हम लोगो को चाहिये कि जब अपने मित्रो से मिलें तो उनसे कहे कि आपकी तन्दुरुस्ती बहुत अच्छी है। यह बहुत लाभदायक है।

इस इलाज को क्यों सीखना चाहिये ?

हर एक मनुष्य कि जीवन मे ऐसे मौके आते हैं कि एकाएक कोई न कोई बीमार हो जाता है और डाक्टर के आने मे देर होती है या कही सफर मे कोई बीमार हो जाता है और कोई डाक्टर नही मिलता। ऐसे मौके पर जितना दु:ख होता है उसको बयान नही कर सकते हैं। वह रोगी को तकलीफ को देखते हैं पर मदद नही कर सकते,

ऐसे मौकों पर यह ख्याल पैदा होता है कि यदि हम भी कुछ इलाज करना जानते होते तो कितना अच्छा होता। मैं पाठकों को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि इन दवाओं से वह कठिन से कठिन रोगी को प्राथमिक सहायता (first aid) कर सकते हैं और प्रायः दूसरी सहायता की आवश्यकता ही नहीं होगी और न दूसरे डाक्टर की आवश्यकता होगी। बीमारी शुरू होते ही खत्म हो जावेगी—लेकिन इस बात पर पाठकों को ध्यान देना चाहिये कि अगर केस (रोग) कठिन हो जैसे बुखार ज्यादा हो या खून ज्यादा निकल रहा हो या कै और दस्त बहुत ज्यादा आ रहा हो, या रोगी बहुत कमजोर हो गया हो या बेहोश हो इत्यादि ऐसी सूरतों में किसी होशियार डाक्टर को बुलवाना जरूरी होगा। पाठकों को ऐसे मामलों में जिम्मेदारी लेना ठीक नहीं है गो-अक्सर ऐसा होता है कि डाक्टर के आने के पहिले ही इन दवाओं से या तो रोगी ठीक हो जावेगा या रोग काबू में आ जावेगा। हार्ट फेल्योर के केस बहुत होते हैं और इसमें एक दम से डाक्टर का आना मुश्किल होता है। बायोकेमिक दवा अगर फौरन दी जाय तो इससे हार्टफेल होना रुक सकता है। हर एक को यह दवा अपने पास रखना चाहिये न मालूम कब इसकी जरूरत पड़ जावे।

-

ये दवाएं जानवरों को भी बहुत फायदा पहुंचाती हैं। करीब पांच वर्ष हुए मेरे कुत्ते के बच्चे की गरदन (दोनों जबड़ों के नीचे) सूज गई। मैंने उसको बायोकेमिक दवाएं दी और लगभग ५ घन्टे में गिल्टियां बैठ गईं। कई वर्ष हुए मेरे घोड़े को पेशाब बूंद-बूंद करके होती थी और उसे बहुत तकलीफ थी। मैंने एक बाल्टी पानी में थोड़ी दवा डाल कर उसे पिला दी ४-५ घन्टे में वह ठीक हो गया।

श्री ओ० एन० मिश्र चीफ सेक्रेटरी हिमांचल प्रदेश, शिमला से लिखते हैं कि यह दवाएं जानवरों को भी उसी तरह फायदा पहुँचाती हैं जैसे कि आदमियो को। उनकी गाय की बछिया पैदा होते ही लंगड़ी थी, लखनऊ के मवेशी के डाक्टर ने कहा कि अच्छी नही हो सकती। उन्होने इन दवाओ को दिया वह ठीक हो गई उन्होने यह भी लिखा कि उनकी लड़की जल गई थी इन दवाओ से बहुत जल्द ठीक हो गई।

कई वर्ष हुये मेरे पास एक कास्तकार फाफामऊ से आया जो यहाँ से ३ मील के फासले पर है और मुझसे कहा कि उसके बैल को पाखाने के रास्ते खून जाता है। मैंने उसे खाने को दवा दी और वह ठीक हो गया। उसके बाद उसने आकर कहा कि यही रोग और बैलो को भी है वह और दवा ले गया और वह सब बैल भी ठीक हो गये। मुझे आशा है कि जानवरो के और रोग भी ठीक हो सकते हैं। ऐसा मेरा पक्का विचार है।

नोट--यदि दवा पानी में घोलकर लेने मे कठिनाई मालूम हो तो पुड़िया मे १ या २ ग्रेन दवा के साथ १० या १५ सादी गोलियाँ (unmedicated pills) डालकर दीजिये--१ गोली की खुराक होगी।

अध्याय २

और लोग इलाज की बाबत क्या कहते हैं ? व अस्पताल के डाक्टरों की राय ?

(१) अलीगढ़ शहर मे श्री देवत्रय खैराती अस्पतालो मे लेखक की दवायें नवम्बर १९५५ मे २००१ मरीजो को दी गई वहां की रिपोर्ट है कि ८० फीसदी से ज्यादा रोगी अच्छे हुये हैं। बुखार, जुकाम, जिस्म का दर्द इन रोगो मे ९५ फीसदी अच्छे हुये हैं। सिफलिस, पीलिया (jaundice) व कुछ रोगों मे आश्चर्यजनक फायदा हुआ है। कुल दवा जो २००५ मरीजों को दी गई उसकी कीमत ५ रुपया है। यानी एक रोगी आधी पाई से कम की दवा मे अच्छा हुआ है।

कुल खर्चा इस नये अस्पताल का जो इन दवाओ के ट्राई करने के लिये खोला गया था नवम्बर १९५५ मे २०।।।) जिसमे दवाओं के दाम भी शामिल हैं यानी एक पैसे से कम फी रोगी। इस अस्पताल मे एक बक्स रख दिया गया था कि जो कोई कुछ दान दे उसमें डाल दे। उस महीने मे उस बक्स मे ३४।।।=) लोगो ने डाले, यानी १४=) ज्यादा आये। श्री त्रिलोकी नाथ जी ने जिन्होने इन अस्पतालो को कायम किया है लेखक को लिखा है कि इस नये अस्पताल मे कोई

इम्तिहान पासशुदा डाक्टर नही रक्खे गये बल्कि निस्वार्थ (selfless) सेवकों ने ही काम किया।

दिसम्बर १९५५ मे लोगो का स्वास्थ्य अधिक ठीक रहा जिसकी वजह से सिर्फ १९५१ रोगी आये और ८५ फीसदी इन दवाओं से अच्छे हुये। इनमे निमोनिया, साइटिका दर्द, सूजन, दस्तों, जुकाम, खाँसी, बुखार व सिर दर्द इत्यादि के रोगी थे। कुल खर्चा इस अस्पताल का उस महीने मे १०।।) हुआ। श्री त्रिलोकी नाथ जी इन दवाओ से इतने संतुष्ट हैं कि उन्होने इसी तरह का एक अस्पताल जनवरी १९५६ मे बिसवदायूं मे भी खोल दिया है और १६ फरवरी १९५६ को एक दूसरा अस्पताल अलीगढ़ मे खोल दिया है जिसमे लेखक को बुलाया था कि आकर उत्सव के प्रेसीडेन्ट बने। उन्होंने लिखा है कि इस अस्पताल से उनको बमुकाबिले उनके पुराने अस्पतालो से ज्यादा कामयाबी हुई है।

यह एक मामूली अस्पताल नही है इसमें १९५५ मे लगभग पौने दो लाख रोगियो को मुफ्त दवा दी गई थी। इस अस्पताल को सरकार व डिस्ट्रिक्ट बोर्ड व म्युनिसिपल बोर्ड से कई हजार रुपये साल सहायता मिलती है। यहाँ के डाक्टरो की राय है कि बमुकाबिले होमियोपैथिक इलाज के यह बहुत सस्ता और अच्छा है। इस इलाज के लिए डाक्टरी पढे हुए लोगो की खास जरूरत नही है। हर एक पढ़ा हुआ आदमी इसे कर सकता है।

इसको श्री के० सी० मित्तल, कलेक्टर, अलीगढ़ ने खोला था। इसकी तारीफ श्री एम० डी० उपाध्याय ने जो प्राइवेट सेक्रेटरी

श्री नेहरू जी के थे व सर सीताराम जो भारत की तरफ से पाकिस्तान मे हाई कमिश्नर रह चुके हैं व श्री श्रीचन्द्र सिंघल मेम्बर पार्लियामेंट व श्री नवाब सिंह चौहान, मेम्बर पार्लियामेन्ट व श्री साहब सिंह प्रेसीडेन्ट डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, अलीगढ व श्री ए० रहमान, जुडीशियल मजिस्ट्रेट, अलीगढ़ ने की है जिनके पत्र इस अस्पताल की छपी हुई रिपोर्ट मे छपे हुये हैं।

अगर लेखक के फारमूलों के आधार पर अस्पताल हर शहर मे जगह-जगह व हर गांव मे खोल दिये जायं (और उनमे खर्चा बहुत ही कम होगा) तो दुनिया भर के हर एक रोगी को दवा मिल सकती है और गरीबो का यह मसला सुलझ सकता है।

शर्मा जी मुलाजिम ग्लास फैक्टरी कान्वरा (बिहार) जो खुद टी० बी० के मरीज थे और लेखक के जेर इलाज थे लिखते हैं कि वे अच्छे हो गये हैं और उन्होंने यह दवायें खरीद ली हैं और कई रोगी अच्छे कर चुके हैं जिनमे एक पेचिस का गरीब रोगी था जो ३८ रु० इन्जेक्शनो में एक महीने मे खर्च कर चुका था मगर उसे कुछ लाभ नही हुआ लेकिन लेखक की दवाओ से ६ घन्टो मे रोग काबू मे आ गया और २४ घन्टे में रोगी चंगा हो गया।

एक डाक्टर की राय

डाक्टर एस० बी० तारे, डेन्टल सर्जन, इन्दौर इलैक्ट्रो डेन्टल क्लीनिक, १० महारानी रोड, इन्दौर अपने २१ अगस्त १९५५ के पत्र

मे लिखते हैं कि लेखक के कुछ नुस्खे जादू की तरह काम करते हैं। लोग इन दवाओं को जादू की पुडिया कहते हैं। नीचे लिखे हुए १० रोगो के नुस्खे १०० फीसदी रोगो को अच्छा करते हैं: (१) एनीमिया (कमी खून की बीमारी), (२) दमा, (३) हैजा, (४) जुकाम, (५) खांसी, (६) पेचिस, (७) अधिक माहवारी (इसको इन्होने कई कठिन केसो मे दिया और बहुत सफलता हुई), (८) न्यूरेलजिया (नर्व या रग का तेज दर्द), एलकोहल (एक तरह की शराब) व इन्जेक्शन इस रोग मे केवल थोड़े दिनों के लिए लाभ पहुँचाता है कभी-कभी आपरेशन भी करना पडता है मगर लेखक की दवाओं से उन्होने कई केस अच्छे किये हैं जिनमे आपरेशन करने का विचार था। लेखक की पहले संस्करण की १५२ नं० की दवा जो दांतों मे पानी इत्यादि लगने के लिये है उसकी बाबत वह लिखते हैं कि यह रोग बहुत कठिन है। उनकी (एलोपैथिक) दवा यानी कास्टिक सोडा जो दांतों मे इस रोग के लिए लगाते हैं इतनी अच्छी साबित नही होती जैसे लेखक की दवा जो जादू का काम करती है और रोगी को कहना पड़ता है कि पीने की दवा (यानी लेखक की दवा) लगाने वाली दवा से अच्छी है। वह लिखते हैं कि उनको दांत के डाक्टर की हैसियत से लेखक की दवा के सामने हार माननी पडती है क्योकि वह अपनी दवाओं से इतनी जल्दी फायदा एक ही दिन मे नही पहुँचा सकते हैं जैसा कि लेखक की दवाओ से है। ट्यूमर (घुमडी) की बाबत वह लिखते हैं कि ४ या ५ कठिन केस उन्होने लेखक की दवाओ से ठीक किये हैं। फोते के सूजन के रोग की बाबत वह लिखते हैं कि कई केस ऐसे ठीक हो गये जिनमे आपरेशन करने की राय थी जिससे उनको आश्चर्य होता है पेशाब करने मे अक्सर दर्द व जलन होती थी वह अक्सर एक ही दिन मे

ठीक हो गई लेकिन रोगियो को पूरी तौर पर अच्छा करने मे समय लगा। अन्त मे वह लिखते हैं कि लेखक की कमजोरी वाली दवा आश्चर्यजनक है यह और एनीमिया (कमी खून की दवा) कभी फेल नही होती है। उन्होने इस पुस्तक की पांच कापियो को मंगाया है। लेखक इन डाक्टर साहब को नही जानता है।

(३) अनुवाद पत्र श्री हाफिज मुश्ताक अहमद साहब, रिटायर्ड जज हाईकोर्ट, इलाहाबाद जिसे उन्होने २३ मार्च सन् १९५५ को अपने बंगले ३५ कैनिंग रोड इलाहाबाद से लिखा है।

"मैं सन् १९४२ से गठिया व जोडो के अर्थराइटिस के रोगो से ग्रसित था। मैं हर तरह की दवा पीने की व लगाने की कर चुका था मगर कोई लाभ नही हुआ, लगभग ५ वर्ष हुये यह रोग इतना बढ़ गया कि टांगो के रगो मे जोर-जोर से दर्द के साथ फड़कन होने लगी और उसके साथ-साथ झटके लगने लगे व ऐंठन होने लगी खास तौर से रात को जिसकी वजह से नीद का आना नामुमकिन हो गया था। इस कुल अरसे मे एक रात को आराम से नीद नही आई। मैं रोज-बरोज चारपाई पर लेटने के बाद सख्त तकलीफ मे रहता रहा।"

"रात को दर्द के साथ करवट बदलना व सख्त बेचैनी या करीब-करीब दुःखमय रात-रात टहलना मेरे लिए रोज मर्रा की बात हो गई और मेरे दिल मे हर वक्त यह डर लगा रहता था कि कही बराबर दिन रात नीद न आने के कारण कोई खतरनाक पेचीदगी न पैदा हो जावे। मैंने इलाहाबाद के अन्दर बाहर हर तरह का इलाज किया और बम्बई

के एक डाक्टर का ६ महीने तक इलाज किया मगर जरा भी आराम नहीं मिला। टांगो के झिटके बहुत जोर के होने लगे और अक्सर उनका असर दिल पर होता था ऐसा मालूम होता था कि कोई दिल से घूंसा मार रहा है और कुल शरीर बेकार-सा हो जाता था और अत्यन्त कमजोरी मालूम होती थी।"

"ऐसी हालत मे मैंने श्री दरबारी की अंग्रेजी पुस्तक "Simplest Remedies for all diseases" पढ़ी और उनके पास आखिरी उपाय समझ कर तीन सप्ताह हुये गया उन्होंने अपनी बायोकेमिक दवाओं को मिलाकर मुझे दिया मैंने उसे उनके कथनानुसार डिस्टिल्ड वाटर (पानी की भाप से बनाया हुआ पानी) की बोतल मे डाल दिया और उसकी पहली खुराक ले ली और दूसरी खुराक सोते वक्त ली। सुबह मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मेरा रोग जादू से गायब हो गया। मुझे रात को वजाय सख्त तकलीफ के बहुत अच्छी नींद आई जैसा कि कई वर्षो से नही हुआ था। कुछ दिनों के बाद फिर सबेरे के समय कुछ हल्के झटके लगने लगे और फिर श्री दरबारी ने उन्हीं दवाओं की ऊँची शक्ति की दवायें दी जिनसे मालूम होता है कि रोग बिल्कुल खत्म हो गया है।"

"यह श्री दरबारी के बायोकेमिक चिकित्सा की दूसरी विजय है। पहली विजय २ साल हुए हुई थी जब कि मेरे सीने में सख्त दर्द हुआ। श्री दरबारी ने अपने जेब मे से एक डिब्बी निकाली और उसमे से एक गोली थोड़े से पानी मे डाल दी और मैंने उसे थोड़ा-थोड़ा करके पिया और मेरा दर्द बहुत जल्द जाता रहा।"

"इस परोपकार व जनसेवा के कार्य के लिये जिसे श्री दरबारी

४० वर्ष से अधिक अर्से से करते आये हैं जिसका लाभ बहुत से लोगों मे से मुझे भी पहुँचा है। मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। इसका फल इनको कहीं और मिलेगा।"

(४) लेखक को ३० नवम्बर १९५४ को मालूम हुआ कि उनके मित्र श्री अम्बिका प्रसाद पांडे, एडवोकेट की हालत बहुत खराब है। उन्होंने दो महीने पहले बहुत मिर्च व मसाले खाये थे जिससे उनको बड़े जोर की खूनी बवासीर हो गई थी। जब-जब पाखाने जाते थे बहुत खून गिरता था, रोके नहीं रुकता था। यहां के बड़े से बड़े डाक्टरों का इलाज हो रहा था। यहा के कुल इन्जेक्शन फेल हो चुके थे। पटना से ६० रु० फी इन्जेक्शन मंगाये थे वे भी फेल हो चुके थे। डाक्टरों ने कहा था कि सिविल हास्पिटल मे फौरन ले चलो और नसों द्वारा खून चढ़ाया जाय वरना वे जिम्मेदार नही हैं। उनको बात करने की इजाजत नही थी। ऐसी हालत मे लेखक ने रात को ९ बजे जाकर उनको देखा और बवासीर व खून रोकने का पाउडर वा हार्ट को फेल होने से रोकने का पाउडर अलग-अलग तीन प्यालो मे गरम पानी मे बनाकर २-२ मिनट बाद १-१ चम्मच देना शुरू किया। करीब पन्द्रह मिनट मे रोगी ने कहा कि मुझे आराम मालूम होता है। लेखक चला आया। रात को आध-आध घन्टे बाद दवा दी गई। दूसरे रोज सवेरे रिपोर्ट आई कि खून का आना उसी वक्त से बन्द हो गया है और ९ घन्टे मे दवा से वह कमजोरी दूर हो गई जो ९ दिन मे खून से निकल जाने से हुई थी! रोगी ठीक हो गये—यह एक बायोकेमिक इलाज का सच्चा चमत्कार है!!

(५) २१ नवम्बर १९५४ को लेडी डाक्टर सावन्त, सुपरिन्टेन्डेन्ट,

कमला नेहरू अस्पताल, इलाहाबाद ने लेखक से पूछा कि क्या आप केन्सर का केस अच्छा कर सकते हैं। लेखक ने जवाब दिया कि मैं तो अच्छा नही कर सकता, मैं तो दवा दे सकता हूं। अच्छा तो मालिक करता है। उन्होने लेखक को एक रोगिणी का केन्सर का इलाज करने को कहा जिसके पेशाब के मुकाम पर केन्सर था। उन्होने यह भी कहा कि मैंने हर तरह से जाच कर ली है और मुझे यह यकीन है कि यह केन्सर का केस है और ६ महीने के अन्दर यह रोगिणी जरूर मर जायगी। लेखक ने एक पुड़िया दवा दी। डाक्टर सावन्त ने अपनी नरसो से कहा कि इस दवा को ठीक उसी प्रकार देना जैसे लेखक बतावे। अन्य दवाये बन्द कर दी गई केवल लेखक की दवा दी गई। लेखक १८-११-५४ को एक हफ्ते बाद देखने गया तो रोगिणी ने कहा कि मुझे बहुत फायदा है। लेखक फिर एक हफ्ते का दवा दे आये और ७-१२ ५४ को देखने गये तो मालूम हुआ कि रोगिणी यह कहकर अपने घर चली गई कि मै तो अच्छी हो गई हूँ यहा अस्पताल मे क्यो पड़ी रहूँ। लेखक डाक्टर सावन्त से मिला उन्होने कहा रोगिणी यह कह कर अपने घर चली गई है कि मैं ठीक हो गई हूँ मगर उसके केन्सर की जाहिरा हालत वैसी ही है जैसे पहले थी। लेखक ने जवाब दिया कि इस दवा से केन्सर की हालत जाहिर मे तो वही रहती है मगर कुल तकलीफे दूर हो जाती हैं और रोगी अच्छा हो जाता है। लेखक ने उसका पता डाक्टर सावन्त से पूछा तो उनके दफ्तर से पता केवल नाम मुसम्मात जुग्ग जौजे मसीह साकिन चुनार आया उसमे मुहल्ले का नाम नही लिखा था। लेखक ने उसको पत्र लिखा मगर यह लिखकर पत्र वापिस आ गया कि पता काफी नहीं है।

यह केन्सर रोग लाइलाज कहा जाता है लेकिन मालिक की दया से

यह रोगिणी बिल्कुल अच्छी होकर चली गई । मालूम हुआ है कि अभी तक लौट कर नहीं आई जिससे जाहिर होता है कि अच्छी हो गई है वरना जरूर आती ।

(६) श्री अलोप शंकरी सिंह, रीडर, गवर्नमेंट प्रेस, इलाहाबाद की माँ के सीने मे कैन्सर हो गया था । बड़े से बड़े सरकारी डाक्टरो ने इसे लाइलाज करार दे दिया था । मेरी दवा से वे ठीक हो गईं । अब यह सज्जन इन दवाओ व होमियोपैथिक दवाओ को गवर्नमेंट प्रेस मे बांट रहे हैं और रोज पचास या साठ आदमी इससे फायदा उठा रहे हैं ।

कुछ चिट्ठियों के सार और आश्चर्यजनक सफलता

(७) श्री शंकर सरन जी जो कि भारत के कस्टोडियन जनरल थे और इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज भी रह चुके हैं, अपने पत्र मे, जो उन्होंने लखनऊ से ८ मार्च सन् १९५० को मेरे पास भेजा था, लिखते हैं "आप जो निःस्वार्थ लोक-सेवा बायोकेमिक दवायें मुफ्त बांट कर रहे हैं उसके लिए मैं आपकी हार्दिक प्रशंसा करता हूँ । मैं स्वयं अपने तजुरबे से कह सकता हूँ कि आपकी दवाये बहुत फायदेमन्द हैं । मेरी वृद्धा मा बहुत से रोगों से ग्रसित हैं और आप उनका बड़ी हमदर्दी से इलाज करते हैं और उनको आपकी दवायें और सब दवाओ से अधिक लाभ पहुँचाती हैं । आपके कहने के अनुसार ये दवाये इतनी सस्ती हैं कि गरीब से गरीब लोग तक इन्हे इस्तेमाल कर सकते हैं । मुझे आशा है कि आपको जनता व भारत सरकार से पूरा सहयोग मिलता जायगा ताकि आपकी दवायें लोगो मे प्रचलित हो जाये । इस परोपकार्य मे मेरी शुभ कामनायें आपके साथ हैं ।"

(८) श्री मुहम्मद इस्लाम, जो कि भारत मे पाकिस्तान के हाई कमिश्नर और इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज भी रह चुके हैं, अपने २० जनवरी सन् १९४९ के पत्र मे लिखते हैं "मिस्टर बी० एस० दरबारी बहुत से रोगो के रोगियों को मुफ्त दवा बांटते हैं। वह बायो-केमिक दवाये बांटते हैं जो अधिकतर रोगियो को फायदा पहुँचाती हैं। मेरे कुटुम्ब के लोगो का व कुछ नौकरो का उन्होंने इलाज किया और वह सब जल्दी अच्छे हो गये। यद्यपि श्री बी० एस० दरबारी बहुत सलग्न रहते हैं, पर वह अपने रोगियो के लिए समय निकाल लेते हैं और उचित रोगो मे रोगियों को घर पर भी देखने जाते हैं। इन्होंने कभी दवा के दाम नही लिए। इनकी लोक-सेवा बहुत प्रशंसनीय है। इनका इलाज इलाहाबाद मे बहुत मशहूर है। लोगो को चाहिये कि इनके इस उपयोगी कार्य मे उत्साह प्रदान करें।" उन्होंने अपने एक मित्र से ये कहा "मिस्टर दरबारी रोग को अच्छा नही करते जादू करते हैं।" इनके भतीजे को ११ दिन से बुखार था सबसे बड़े डाक्टर का इलाज था मगर बुखार कम नहीं होता था। लेखक को बुलाया गया। दवा दी गई। ८ घन्टे मे बुखार उतर गया। ३ साल से इनकी लड़की को पित्ती का रोग था हर हफ्ते इन्जेक्शन लगते थे, कोई फायदा नहीं था। लेखक की दवा से एक ही दिन मे ठीक हो गई।

(९) २३ वर्ष हुये श्री कमला कान्त वर्मा को जो कि इलाहाबाद हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस रह चुके हैं, पीलिया (jaundice) की बहुत सख्त तकलीफ हुई। उनके फैमिली डाक्टर ने जो इलाहाबाद के मशहूर डाक्टरों मे से थे, मेरे सामने बहुत ध्यानसे जांच की और ये राय

दी कि अगर रोग अच्छा हुआ तो कम से कम अच्छे होने मे ६ महीने लगेंगे। जब मुझसे पूछा तो मैंने कहा कि मालिक की दया हुई तो एक हफ्ते मे बिल्कुल ठीक हो जायेंगे। उन्होने मेरी दवा करना स्वीकार किया और दो हफ्ते मे बिल्कुल ठीक हो गये। इनका पत्र मेरे पास है।

(१०) लगभग २५ साल हुये, डाक्टर एम० वलीउल्ला ने जो इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज रह चुके हैं, फरवरी के महीने मे घड़े का ठंडा पानी पी लिया जिससे गले में खराशें पड़ने लगी और हरारत मालूम होने लगी। गरम पानी मे नमक डालकर गरारे किये और आराम किया मगर उससे कुछ फायदा नही हुआ। मेरी दवा ने जादू की तरह जबान पर डालते ही फायदा पहुँचाया और उन्होने ताज्जुब के साथ कहा कि क्या आपकी दवा इतनी जल्दी फायदा कर सकती है ?

(११) श्री एम० के० दर, जो इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज रह चुके हैं अपने ८ अक्टूबर सन् १९४१ के खत मे लिखते हैं "मिस्टर दरबारी अपनी दवायें पीड़ित रोगियों को मुफ्त बाँटते हैं और उनका इलाज बहुत मशहूर है। वे इलाहाबाद व उसके बाहर अपने नेक स्वभाव व इलाज की सफलता के लिये बहुत मशहूर हैं। उन्होने गाँव के गरीबो के लिये सस्ता नुस्खा तैयार किया है जिसका वह प्रचार करना चाहते हैं। उनके तजुरबे मे बहुत कामयाबी हुई है। यह बहुत सस्ता और फायदेमन्द है। सरकार को इस पर गौर करना चाहिये। जनता को उन्हे इस शुभ कार्य के लिये धन्यवाद देना चाहिये। मेरी इच्छा है कि उनको कामयाबी हो।"

(१२) स्वर्गीय मिस्टर जस्टिस कालिस्टर, जो एक अंगरेज थे

व हाईकोर्ट इलाहाबाद के जज रह चुके थे, को दिल के कारोनेरी वाल्व की थ्रामबोसिस हो गयी थी। वह मेरे इलाज मे कुछ दिन रहे थे। उन्होने अपने १४-३-४४ के पत्र मे लिखा है "मै आपका बहुत कृतज्ञ हूँ। मेरा ख्याल है कि आपके पाउडरो से कल रात को मुझको फायदा हुआ। मुझे पहले से अच्छी नीद आई।" २१-३-४४ वाले खत मे उन्होने लिखा कि "आपके पाउडरों के लिये धन्यवाद। बिला सन्देह मेरी तबियत पिछले चन्द दिनो मे पहिले से अच्छी रही है।" और २७ अक्टूबर के पत्र मे उन्होने लिखा है कि "मैं आपके पाउडरो के लिये बहुत आभारी हूँ। बिना सन्देह मेरा स्वास्थ्य (तन्दुरुस्ती) बराबर सभलता जा रहा है।" वह फिर विलायत चले गये।

(१३) वैद्य नागेश्वर त्रिपाठी c/o आरोग्य सदन पो० बा० १३६, कानपुर अपने पत्र दिनाक १५-६-५८ मे लिखते हैं—"आपके नुस्खे वास्तव मे रामबाण हैं" उन्होने किताब मंगाई है।

(१४) सफेद बाल जड़ से काले हो गये—श्री विजय कुमार सक्सेना ४० ए शाहगंज इलाहाबाद निवासी के कुल बाल पन्द्रह वर्ष की उम्र में ही सफेद हो गये थे। मैने साइलीशिया १२x दिया। दो हफ्ते ही मे ८० फीसदी बाल काले हो गये।

(१५) कंठमाला—श्री गोपी नाथ वर्मा ७० बादशाही मंडी इलाहाबाद निवासी के दो जुडवे बच्चो को कंठमाला हो गया था। मेरी दवा से तीन हफ्ते मे ७५ प्रतिशत लाभ हुआ है।

(१६) कुमारी शशि सप्रू, ८ हेस्टिंग रोड, इलाहाबाद निवासी को

पांच-छः वर्ष से कंठमाला था। दो हफ्ते में ८० फीसदी ठीक हो गई।

(१७) एक बड़े अंगरेज डाक्टर की (जिनका रैंक मेजर का है) स्त्री के बच्चा नहीं होता था। मैंने दवा दी मालिक की दया से उसके बच्चा हुआ।

(१८) मेजर वी० एल० तिवारी, मेडिकल आफिसर आफ हैल्थ, यू० पी० अपना व अपने बाल-बच्चों का इलाज हमेशा मुझसे कराते हैं।

(१९) लाला काशी प्रसाद जायसवाल, बजाज, फाफामऊ, इलाहाबाद इन दवाओं को मुफ्त बांटते हैं और रजिस्टर रखते हैं किसी-किसी रोज पचास-पचास रोगी आते हैं और लगभग सबको फायदा होता है। वहाँ के दो एलोपैथिक डाक्टर हाथ पर हाथ रक्खे बैठे रहते हैं।

(२०) डाक्टर आर० जी० पोल, डी० एल० एच० ८० कृष्णपुर, इन्दौर निवासी अपने पत्र में इस पुस्तक की बहुत अधिक तारीफ लिखते हैं।

(२१) डाक्टर जनार्दन प्रसाद लाल, होमियोफार्मेसी नया बाजार, पटना लिखते हैं कि उनके मित्र प्रोफेसर आर० के० मित्तल, इन्जीनियरिंग कालेज, पटना को जो बहुत होशियार और पुराने होमियोपैथ हैं, इन दवाओं से इतनी सफलता प्राप्त हुई कि उन्होंने करीब-करीब होमियोपैथिक बिलकुल छोड़ दी और इस इलाज के बड़े भक्त हो गये हैं और खुद डाक्टर जनार्दन प्रसाद जी को भी आश्चर्यजनक सफलता इन दवाओं से मिलती है। और वे भी इसके भक्त हो गये हैं। उन्होंने

इस किताब को अपने अन्य मित्रो को ट्राई करने के लिए दिया है। उन्होने २ अंगरेजी की व ३ हिन्दी की किताबें मंगाई हैं।

(२२) मिस्टर सुलतान आलम खां, डिप्टी मिनिस्टर, यू० पी०, जब वे यहां आये थे, मैं उनसे मिला था और उनसे प्रार्थना की थी कि इस कार्य मे मदद करें उन्होने इलाहाबाद के श्री श्याम बिहारी लाल, ए० डी० एम० (प्लानिंग) से जो वहां मौजूद थे कहा कि वे इस मामले मे मदद करे। मैं मिस्टर लाल का बहुत आभारी हूँ। उन्होने मुझे अपने स्टाफ की मीटिंग मे इस विषय पर बोलने का अवकाश दिया। मेरे बोलने के बाद मिस्टर श्रीवास्तव बी० डी० ओ० ने जो वहां थे सबके सामने कहा कि वे इन दवाओ को मुफ्त बांटते हैं और रजिस्टर रखते हैं। ९००० रोगी इन दवाओं को पा चुके हैं। लगभग सब ही अच्छे हो जाते हैं। मौजूदा अफसरान के कहने पर मैंने २० किताबे उनको मुफ्त दे दी।

(२३) अमृत पत्रिका व सर्चलाइट अखबारो के एडीटर्स का मैं बहुत आभारी हूँ उन्होंने कृपा करके अपने-अपने अखबारो के एडीटोरियल (Editorial) मे गवर्नमेंट से कहा है कि इन दवाओ को गांव-गांव मे पहुँचावें और करोडो गरीबों के दुःख दूर करें।

(२४) श्री असगर अब्बास, क्लर्क, हाईकोर्ट एडवोकेट्स एसोसियेशन, इलाहाबाद के लड़के की कांच निकलती थी यानी जब पाखाना फिरता था तो नीचे की आंत का हिस्सा बाहर निकल आता था। मैंने एक गोली पोडोफाइलम ६ की दी और कहा कि छटांक भर पानी घोल कर

एक-एक सम्मन दिन में २-३ बार दे, बच्चा थोड़े ही दिन में ठीक हो गया। बेचारे बहुत रुपये खर्च कर चुके थे कुछ भी फायदा नहीं हुआ था। एक गोली ने उसे ठीक कर दिया।

(२५) चौधरी देवी शंकर एडवोकेट की साल भर की लड़की का जिगर बढ़ गया था। एलोपैथिक इलाज जो अच्छे से अच्छा यहाँ हो सकता था कराया गया। हालत गिरती गई। यहाँ तक कि एक दिन १०४ डिग्री बुखार हो गया। मैंने आसिनिक ६ की एक गोली सुबह व एक शाम को दी व बुखार की दस दवायें मिला कर दीं। दूसरे दिन सिर्फ १०२ डिग्री बुखार आया और तीसरे दिन ९६ डिगरी रह गया। मालिक की दया से अब बिल्कुल ठीक है। जिगर जो बहुत सख्त था मुलायम हो गया है। यह रोग लाइलाज समझा जाता है।

(२६) कैन्सर—प्रतापगढ़ के श्री अब्बास हैदर, कम्पाउंडर सरकारी अस्पताल की माँ के गले में तकलीफ थी जिसको बड़े-बड़े डाक्टरों ने कैन्सर बताया था मालिक की दया से एक हफ्ते में बहुत कुछ ठीक हो गई। सब को आश्चर्य हुआ।

(२७) फौज के एक बड़े डाक्टर मेजर महंतो के किडनी (गुर्दे) में पथरी हो गई जिसका इलाज आपरेशन है। मैंने उनको दवा दी। १ या २ दिन में ठीक हो गये। उन पर इसका इतना प्रभाव पड़ा की उन्होंने इन दवाओं को खरीद लिया है और उनको इस्तेमाल करते हैं और अपने रिश्तेदारों को मेरे इलाज के लिए दूर-दूर से बुलाते हैं और मालिक की दया से सब ठीक हो जाते हैं। वे सबसे ज्यादा इस इलाज की तारीफ करते हैं।

(२८) फौज के बड़े अफसर कर्नल दीवान साहब की माँ के पैर की चमड़ी में सख्त तकलीफ थी जिसको एलर्जी (allergy) कहते हैं। अच्छे से अच्छे इलाज कर चुके थे फायदा नहीं हुआ। मालिक की दया से इन दवाओं से बहुत फायदा है। उनकी धर्मपत्नी के सिर में बहुत दर्द रहता था व जबरदस्त कब्ज था। पाखाने की हाजत ही नहीं होती थी। मेरी दवा ली। मालिक की दया से सिर का दर्द गायब हो गया और अब पाखाने की हाजत भी होती है।

(२९) पं० कन्हैयालाल जी मिश्रा, एडवोकेट जनरल, यु० पी० के पुत्र इन दवाओं को इस्तेमाल करते हैं और दवा को बांटते हैं। और सब को फायदा होता है। पंडित कन्हैयालाल जी इस इलाज से बहुत खुश हैं और कहते हैं कि गांव-गांव में इसका प्रचार होना चाहिये। इनके बड़े पुत्र मेरे पास राजा साहब बड़हर जिला मिर्जापुर को लेकर आये। राजा साहब के जिस्म की हड्डियां जुड़ गई थीं, इस रोग को आर्थराइटिस (arthritis) कहते हैं और शरीर में सख्त दर्द होता था। उन्होंने कहा कि मैं इसकी वजह से बीसों मन एस्प्रीन (aspirin) खा चुका हूँ। इसे अगर न खाऊं तो दर्द नाकाबिल बरदाश्त होता है। मैंने उनको दवा दी। दूसरे दिन से आराम होने लगा। अब बहुत फायदा है।

(३०) श्री डा० बाल गंगाधर तिलक, वृन्दावन, तनुक पोस्ट, जिला पश्चिमी गोदावरी आंध्र प्रदेश, दक्षिण भारत इस इलाज की बाबत मुझे लिखते हैं "गरीबों के लिए यह बड़ी नियामत है। आपको

निःस्वार्थ सेवा व उस तरफ कोशिश के कारण करोड़ो दुखी गरीबों के सच्चे मित्रों में आपका नम्बर सबसे आगे रहता है।"

(३१) भूतपूर्व मिस्टर जस्टिस कौल के लड़के फौज में बड़े अफसर हैं। उनकी फौज मे एक सिपाही को हड्डी का टी० बी० हो गया जिसका इलाज अस्पताल में किया गया मगर ठीक नही हुआ उसको नौकरी से अलग करने वाले थे। उनकी धर्म-पत्नी ने इन दवाओ को दिया वह सिपाही अच्छा हो गया।

(३२) करीब ६ साल हुये, यहाँ के पी० ए० सी० (आर्म्स पुलिस) के हवलदार मेरे पास आये और मुझसे कहा कि आपने वह काम किया जो आज तक किसी ने नही किया है। मैंने कहा कि मैं नहीं समझा। उन्होंने कहा कि जो किताब आप ने लिखी है इतनी अच्छी है, कि ऐसी कोई किताब नहीं है। मैंने पूछा कि क्या आपने आजमाया है, तो उन्होंने कहा कि जिस-जिस रोग मे आजमाया, कामयाबी हुई और कहा कि अक्टूबर १६५७ मे वे इटावा के बीहड़ो मे मय अपने सिपाहियों के तैनात थे। उनके १३ जवानो को इनफ्लुईंजा हो गया। दो की हालत खराब हो गई। उन्होने अपने हेडक्वार्टर इलाहाबाद का वायरलेस भेजा कि डाक्टर भेजिये मगर कोई नही गया। जब हालत ज्यादा खराब हो गई तो उन्होने इन दवाओ को दिया। एक ही दिन में सब ठीक हो गये। फिर उनके अफसर, असिस्टेंट कमाण्डेंट पहुँचे और सबको अच्छा पाया तो नाराज हुए कि हमको बिला वजह परेशान किया। उनको सब हाल बताया गया, उन्होने तहकीकात् की तो सब सही पाया।

मैंने श्री गहलोत से जो पी० ए० सी० के बड़े अफसर हैं, पूछा कि

हवलदार का यह बयान कहां तक सही है, तो उन्होने कहा कि बिलकुल सही है, वे ही तो वहां वायरलेस की खबर पाकर गये थे। सब रोगियो को अच्छा पाया और जांच से मालूम हुआ कि तेरह जवानो को इनफ्लुऐंजा हुआ था और मेरी दवा से बहुत जल्द ठीक हो गये। श्री गहलोत को इन दवाओं पर विश्वास पहले से ही था उन्होने अपने लडको वगैरह को दवा के बक्स व किताबें दी हैं और खुद भी इनको अपने पास रखते हैं।

(३३) कुछ दिन हुये लाला त्रिलोकीनाथ जी जिन्होंने १३५ बायो॰ केमिक दवाखाने अलीगढ मे खुलवाये हैं मुझे पत्र मे लिखा था कि एक बड़े आदमी का लड़का बेहोश हो गया था। सिविल सर्जन और बड़े-बड़े डाक्टर व वैद्य व हकीम सब जवाब दे गये और कह गये कि यह नहीं बच सकता है और उस लड़के के मा-बाप मौत का इन्तजार कर रहे थे। उसी वक्त लाला जी पहुँचे और उनसे कहा कि आप दरबारी की दवा को जो राधास्वामी दयाल की दया से उनको मिली है क्यों नहीं देते? उनके कहने के अनुसार बेहोशी की दवा दी गई और लड़का बहुत जल्द अच्छा हो गया। सब डाक्टर इत्यादि कहने लगे कि ईश्वर की दया से अच्छा हुआ है।

(३४) आदरणीय श्री सत्यनारायन सिनहा जो भारतवर्ष के पार्ल्यामेटरी एफेयर्स मे मंत्री हैं, उनको कुछ दिन हुये एसिडिटी (acidity) का रोग हो गया था। सीने मे जलन होती थी, बहुत तकलीफ थी। उनके मित्र श्री आर॰ आर॰ पी॰ सिनहा, चेयरमैन, रेलवे सर्विस कमीशन, इलाहाबाद उनसे मिलने गये तो उनसे उन्होंने अपना

हाल कहा। श्री सिनहा ने देहली से अपना प्राइवेट सेक्रेटरी मेरे पास भेजा और मुझसे दवा मंगाई। मैंने दवा दी और वे शीघ्र ही ठीक हो गये।

(३५) डाक्टर ए० अहमद पी० ओ० कृष्णगंज बाजार, जिला पुरनिया (बिहार) लिखते हैं कि उन्होंने मेरे नुस्खों को अपने खैराती अस्पताल में ट्राई किया और उनको बहुत फायदेमन्द पाया।

(३६) एक बड़े आदमी के सीने में ८ महीने से दर्द था। सब इलाज कर चुके थे। लखनऊ के बड़े डाक्टरों ने कहा कि सीने में ट्यूमर बन रहा है। जिसका इलाज सिर्फ आपरेशन है। मैंने उनको ट्यूमर वाली दवा दी। एक ही दिन में ठीक हो गये।

(३७) लैफ्टीनेन्ट एच० सी० वर्मा, ५१ ए, टैगोरटाउन, इलाहाबाद निवासी को ब्लडप्रेशर का रोग था। एक रोज फोर्ट के अन्दर कार्य करते-करते बेहोश होकर गिर गये। उनका ब्लडप्रेशर १००/७० पाया गया। मेरे पास आये और मेरी दवा से ४ दिन के अन्दर ११२/७० हुआ और फिर चार दिन के अन्दर १२४/७५ हो गया। कुल दवा एक पाई से कम की थी। उनका हाल देखकर फोर्ट के कैप्टेन चौधरी व कैप्टेन सोमती अपनी-अपनी धर्मपत्नियों का इलाज अपरस (Eczema) व अन्य रोगों का करा रहे हैं, जिनमें उनको बहुत फायदा है।

(३८) यहाँ के एक मशहूर डाक्टर को १३ वर्ष हुये जोर की पेचिस (bacillary dysentery) हुई। एक महीने तक खुद अपना व और डाक्टरों का इलाज किया। कोई फायदा नहीं हुआ लेखक की दवा ने दो ही दिन में बिलकुल ठीक कर दिया तो उन्होंने लेखक की

किताबें देखीं और और कहा कि ताज्जुब की बात है कि इसमे (amaebic) ऐमोबिक और (bacillary) बेसिलरी (जो दो किस्म की पेचिशें होती हैं) का नाम भी नहीं है। लिखक ने जवाब दिया कि यह तो एलोपैथिक डाक्टरों ने बेकार फर्क कर दिये हैं जब कि वही दवा दोनो को ठीक कर सकती है।

(३९) श्री सैयद अहमद रजा आब्दी, बी० ए०, बी०-एड० टीचर उन्नाव गेठ (जामा मस्जिद के पास), झाँसी से लिखते हैं कि उनको हार्निया हो गया था। जिसके लिए केवल आपरेशन ही इलाज समझा जाता है। उन्होने किताब देखकर मेरी दवा बनाई और ली। पहली ही खुराक लेने के बाद हार्निया मे हलचल मालूम पड़ी। उस रात को नींद बहुत अच्छी आई। सुबह तक सूजन व तकलीफ बहुत कम हो गई। शाम तक हार्निया गायब हो गया। वे लिखते हैं कि मैं आपको इस वक्त का मसीहा या लुकमान हकीम समझता हूं। आपने मनुष्य जाति के लिए नुस्खे बनाकर बहुत ही बडी सेवा की है। ईश्वर आप पर दया करें और आपकी दीर्घायु करे, और आप को सुखी रक्खें।

(४०) एक ईसाई पादरी साहब, रेवरेन्ड एम० के० पातरा, एम० एस०-सी० बैपटिस्ट मिशन, पोस्ट आफिस भूमपुर जिला मिदनापुर (पश्चिमी बंगाल) अपने १६-६-५३ के पत्र मे लिखते हैं "कुछ समय हुआ मैंने आपके बायोकेमिक दवाओ के नुस्खो को मगवाया था मैंने उनको अति उत्तम (excellent) पाया। मैं खुद २० वर्षों से इन दवाओ का इस्तेमाल अपने खाली समय मे कर रहा हूं। लेकिन कभी उससे पहले मुझे यह ख्याल नही पैदा हुआ कि दवाये इस तरह

से मिलाई जा सकती हैं। मैं दवायें मुफ्त बांटता रहा हूँ। ईश्वर आपको इस दवा के बांटने के कार्य में मदद दे ताकि और बहुत से लोगों को और अधिक फायदा पहुँचे"।

(४१) डाक्टर बी० के० पटवर्धन ए० एम० एस०, एस० एस० एस० हास्पिटल, पी० ओ० बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी ने अपने १-२-१९५० के खत में लिखा है कि उनके एक रिश्तेदार की स्त्री को १५-२० दिन से दमे की सख्त तकलीफ थी और उनको कुछ दिल में भी तकलीफ थी। उनको डाक्टर साहब ने मेरा दमा का पाउडर दिया और लिखते हैं कि 'मुझे बड़ी खुशी है कि उनको (रोगिणी) को फौरन आराम मिला और अब ३ या ४ दिन से बिलकुल ठीक हैं। मुझे आशा है कि जो फायदा उनको हुआ है वह स्थाई होगा। रोगिणी को हमारी (यानी एलोपैथिक) दवाओं और इन्जेक्शनों से नफरत हो गई थी और इसलिये आपकी सरल दवा अमृत की तरह साबित हुई। मैं आपका कृतज्ञ होऊंगा यदि आप अपने और अनुभवों को मेरे पास भेज देंगे, चूंकि मुझे इच्छा हुई है कि आपकी सरल, फायदेमन्द व सस्ती दवाओं का अपने प्रैक्टिस में प्रयोग करूं'।

(४२) श्री प्राणनाथ आगा, रिटायर्ड सेशन जज, ८ ए कटरा रोड, इलाहाबाद अपने ८-६-५१ वाले खत में लिखते हैं कि उन्होंने मेरे अनीमिया (कमी खून के रोग) व कोलैप्स (मरने) की सी हालत के नुस्खों को इस्तेमाल किया और बहुत कामयाब पाया।

(४३) डाक्टर आर० ए० वर्मा ११/२३४ सूटरगंज, कानपुर अपने २५ सितम्बर १९४५ वाले खत में लिखते हैं कि उन्होंने व उनके २

मित्रों ने मेरे हैजा के पाउडर को इस्तेमाल ही नही किया बल्कि उन्होंने कानपुर के कुल अखबारों मे मुफ्त बांटने का इश्तहार भी दिया। यह नुस्खा हैजे के लिये आश्चर्यजनक उपयोगी है। बायोकेमिक के पांच फास्फेट गर्मियो के दस्तों के लिये भी उपयोगी हैं।

(४४) श्री पी० एम० एल० वर्मा एडवोकेट अपने २३-६-४९ के खत मे लिखते है कि उन्होंने मेरे नुस्खो को बहुत कामयाबी के साथ सब तरह के रोगो मय हैजे के इस्तेमाल किया। उनके नौकर के पास उसके गाँव से खबर आई कि उसके बच्चे को हैजा हो गया है। उसको उन्होने बायोकेमिक दवाये बच्चे के लिये दीं, नौकर ने लौट कर बताया कि बच्चा दो खुराक मे अच्छा हो गया। बाकी दवा उसने गाव से और हैजे के रोगियो को दे दिया और जादू की तरह सब अच्छे हो गये।

(४५) झासी के डाक्टर एम० एल० करीचन अपने २६-१-१९५२ के खत मे लिखते है कि उन्होंने मेरा हैजा का पाउडर इस्तेमाल किया और उसे फायदेमन्द पाया।

(४६) श्री जै सिह वकील, मिर्जापुर अपने २४-१-५२ के खत मे लिखते है कि रोज ब रोज उनका विश्वास मेरे बायोकेमिक नुस्खों में बढ़ता जा रहा है। पिछले हफ्ते में मैंने हैजे के एक मरीज को आपके हैजा पाउडर से अच्छा कर लिया। रोग बहुत सख्त टाइप का था और मैंने कुछ संकोच के बाद उसे दवा देने का इरादा किया, क्योकि वह बहुत गरीब था और डाक्टर को नहीं बुला सकता था। लेकिन आपकी दवा से दो घन्टे मे बिल्कुल ठीक हो गया। जब आपकी किताब छप जाय तो मुझे भेजिये।

(४७) श्री लक्ष्मण प्रसाद एकाउन्टेन्ट औक्ट्राय डिपार्टमेंट, म्युनिसिपल बोर्ड, इलाहाबाद अपने १-१०-४५ के खत मे लिखते हैं कि वह मुझसे चौथाई ड्राम (यानी पन्द्रह ग्रेन) जिसकी कीमत २ पैसे से कम होगी हैजे की दवा ले गये थे, जब वह अपने गांव जा रहे थे, जहां हैजा जोर से फैला था। उन्होने ३० रोगियों को दवा दी और सब ठीक हो गये उनमें से एक तो करीब-करीब मर रहा था वह भी दवा खाने के ८ घन्टे के अन्दर चलने के काबिल हो गया।

(४७) दीवान राधेनाथ कौल साहब, इलाहाबाद के मशहूर शायर जिनका तखल्लुस "गुलशन" था, अपने १-७-५० के खत मे लिखते हैं कि उनके नौकर ननकू की बीबी को बुखार व खांसी आती थी। उन्होंने कई डाक्टरो को दिखाया। उन्होने टी० बी० का केस बतलाया। एक्सरे से भी यही राय कायम रही जिसकी फोटो और रिपोर्ट मेरे पास है। ऐलोपैथिक डाक्टरों ने उसके इलाज के लिए ४०० रु० मांगे। उसको वे मेरे इलाज के लिए लाये चूंकि मैंने उनकी धर्मपत्नी का लकवे का इलाज किया था जिससे फायदा हुआ था। मेरे इलाज से पहिले उनके नौकर की बीबी को तीसरे पहर १०२ डिगरी तक बुखार हो जाता था। दवा शुरू करने के २० दिन के अन्दर यह हुआ कि उसको कभी ९८ या ९९ डिग्री से अधिक नही बढ़ा। उसका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। वह अपना खाना पकाने व बर्तन साफ करने का काम स्वयं अपने मकान पर करती है।

(४९) श्री एस० सी० अस्थाना, एडवोकेट, इलाहाबाद अपने ५-११-४७ के खत मे लिखते हैं—"मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूँ कि आपने

मेरी स्त्री का इलाज किया। जिनको बहुत दिनो से टी० बी० था। वह इस रोग से केवल अच्छी ही नही हो गयी हैं वलिक उनके स्वास्थ्य मे इतना परिवर्तन हो गया है कि कोई कह नही सकता है कि इनको कभी तपेदिक हुआ था आपकी दवाओ का जादू का-सा असर होता है। मुझे आशा है कि हमारे देश के लोग आपकी निस्वार्थ सेवा को सराहना करेंगे।"

(५०) श्री एन०सी० शास्त्री एडवोकेट अपने १२-५-५१ के खत मे लिखते हैं कि उनके एक कुटुम्बी जो बहुत पुरानी टी० बी० के रोग से ग्रसित थीं, ऐक्सरे लेने से भी उन्हे टी० बी० ही बतलाया गया, और डाक्टर रस्तोगी के टी० बी० के अस्पताल मे वह इलाज मे रखी गयी थीं। उनका एलोपैथिक इलाज हो रहा था। सोने (Gold) के और स्ट्रेप्टोमाईसीन के इन्जेक्शन लग रहे थे। "उनका ज्वर प्रति दिन १०२ डिग्री तक पहुँचता था। मैंने आपकी बायोकेमिक दवाओ का इलाज शुरू किया और एक हफ्ते मे ही उनका बुखार गायब हो गया। इसके बाद वह ६ साल तक जीवित रही जब उनकी नवम्बर १९४९ मे हृदय रोग से मृत्यु हुई तब तक उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा बना रहा। वह टी० बी० से बिलकुल अच्छी हो चुकी थीं।"

(५१) १८ वर्षीय श्री अब्दुल सलाम के पिता श्री अब्दुल गफ्फार बम्बई हेयर कटिंग सैलून के सचालक जो इलाहाबाद मे कालिवन अस्पताल के पास रहते है, मेरे पास अपने लडके का इलाज कराने आये जो १४ महीने से टी० बी० से पीड़ित था। मेरे इलाज से पहिले उसके दर्द होता था; और ज्वर रहता था। डाक्टरो ने सोचा कि फोड़ा बन

रहा है। उन्होने पुल्टिस लगवाई और एक हफ्ते के बाद उसका आपरेशन किया, ६ महीने ऐलोपैथिक इलाज होने के बाद वह जख्म तो प्रत्यक्ष रूप मे भर गया, परन्तु उसे १५-२० दिन से ज्वर आने लगा, लेकिन पस (पीव) निकल जाने के बाद बुखार भी चला गया। ऐक्सरे फोटो लेने पर टी० बी० बतलाया गया।

सरकार के मुकामी टी० बी० के डाक्टर ने रोगी के शरीर पर पेरिस प्लास्टर २६ दिन के लिए लगाया और सुबह-शाम टी० बी० के इन्जेक्शन लगाए। बुखार तो छूट गया और प्लास्टर भी हटा दिया गया लेकिन कुछ फोडे और निकल आये, बुखार फिर से आने लगा। फिर रोगी को होमियोपैथिक इलाज शुरू किया गया लेकिन कोई फायदा नही हुआ। अन्त मे लेखक का बायोकेमिक इलाज आरम्भ हुआ। ज्वर और ट्यूमर एक हफ्ते मे ही ठीक हो गया, रोगी पूर्णतया स्वस्थ हो गया और ३ महीने मे उसका वजन २० पौंड बढ़ गया। आज के दिन वह बिल्कुल अच्छा है। उसने थोड़े दिन हुए शादी की है और एक बच्चा भी है।

(५२) लेखक के भाई श्री विशन स्वरूप दरबारी, एडवोकेट, मेम्बर एलेक्शन ट्रिब्यूनल, ऐक्स चीफ जस्टिस, हाईकोर्ट टोंक (राजस्थान) सूचित करते हैं कि एक हिन्दुस्तानी ईसाई सैम्युअल जो टी० बी० के रोग से पीड़ित था और आगरे के सब ऐलोपैथिक डाक्टरो का इलाज करा चुका था, लेखक की दवा से कुछ दिन मे ही अच्छा हो गया। उसके पिता और भाई की टी० बी० रोग से ही मृत्यु हो चुकी थी।

जादू की-सी सफलता

(५३) १९४८ मे श्री रामचन्द्र सिन्हा डिप्टी पोस्ट मास्टर, कन्नौज,

यू० पी० का लखनऊ मेडिकल कालेज मे पथरी का आपरेशन हुआ। आपरेशन के बाद जख्म मे टांके लगाए गए। कुछ अरसे मे जख्म भर गया पर १ टांका रह गया जो ठीक नहीं हुआ। पेशाब करते समय उस छोटे से छेद से पेशाब निकलती रहती थी। उन्होने लखनऊ और इलाहाबाद के बड़े-बड़े डाक्टरो को दिखाया लेकिन उन लोगो ने कह दिया कि अब कुछ नही हो सकता है, शायद यह १-२ साल मे अपने आप ठीक हो जाए। तब वह लेखक के पास आये। मैंने उन्हे कलकेरिया फास ३x पानी मे घोल कर १-१ चम्मच पीने को दी। हर एक को सुन कर आश्चर्य होगा कि पहिली खुराक खाते ही एक घण्टे से भी कम मे वह छेद बन्द हो गया। वह अपने ८-१२-५२ के पत्र मे लिखते हैं "मुझे कहते हुए प्रसन्नता होती है कि वह छेद जो पथरी के आपरेशन (१९४८) के वक्त से जख्म के रूप मे खुला रह गया था, आपने जो दवा दी उससे बन्द हो गया। वास्तव मे दवा ने जादू का-सा काम कर दिखाया। पहिली खुराक से ही सूराख से पेशाब निकलना बन्द हो गई।"

(५४) श्री पी० एल० श्रीवास्तव, कपूर होमियो हाल, जीरो रोड, इलाहाबाद के कम्पाउन्डर लिखते हैं कि लेखक के टी० बी० पाउडर की बहुत मांग है। बहुत से उनकी दुकान पर टी० बी० की दवा मांगने आते हैं और कहते हैं कि जो रोगी इसका सेवन करता है, उसे बहुत फायदा होता है।

(५५) श्री रामेश्वर प्रसाद वकील, सिविल लाइंस, हरदोई, लिखते हैं कि वह और उनके १/२ दर्जन अन्य टी० बी० के रोगी लेखक के टी० बी० पाउडर का सेवन कर रहे हैं और सब ठीक हो रहे हैं।

(५६) श्री रुक्म अंगद सिंह सिविल लाइन नघेटा रोड, हरदोई, निवासी अपने २४-१२-१९५० वाले पत्र में लिखते हैं कि उन्होंने मेरी टी० बी० की दवा का हाल हरदोई के मिस्टर रामेश्वर प्रसाद वकील से सुना था। सितम्बर १९५० मे उनको कै हुई जिसमे २ पाउंड (यानी १ सेर) खून गिरा और उनको टी० बी० का रोगी करार कर दिया गया। भुवाली १ माह रहे लेकिन ठीक न हुआ इस दवा से ठीक हो गये हैं।

(५७) श्री मीराखाँ, रईस, अलीगढ़ को फेफड़े का टी० बी० बहुत बड़ा हुआ था। गर्मियों में खून की कै होती थी। धूप में निकलना मना था। इन दवाओं से बिलकुल ठीक हो गये हैं।

(५८) कई को हार्टफेल होने से इन दवाओं ने बचाया है।

(५९) पागलपन के कई केस ठीक हो चुके हैं। मिर्गी व कैन्सर के केस ठीक हुये हैं।

(६०) मिस्टर मुहम्मद इद्रीस, आजमगढ़ ने बहुत से चेचक के रोगियों को इस दवाई से ठीक किया है।

(६१) टांसिलाइटिस के सब ही केस ठीक हो जाते हैं।

(६२) आंखों के रोह में यह दवाएं जादू का-सा काम करती हैं।

(६३) बिच्छू के डंक मारने में यह इलाज कभी फेल नहीं होता है।

(६४) एनफ्लुएँजा व पीलिया रोग व सिफलिस व चेचक ऐसे कठिन रोगो में लगभग १०० फीसदी कामयाबी होती है।

(६५) मि० एस० पी० अग्रवाल, सेक्रेटरी हिमालय क्लब, १५ क्राथवेट रोड, इलाहाबाद लिखते हैं कि गंगोत्री पहाड़ पर इन दवाओ को वे अपने साथ ले गये थे। उनको बहुत कामयाबी हुई।

(६६) श्रीकृष्ण कौल श्रीनगर मे लिखते है कि उनको १०० फीसदी कामयाबी इन दवाओ से हुई है।

इसी प्रकार के लगभग १५०० पत्र मेरे पास हैं। इसमे से ८० या ९० फीसदी लोग ऐसे हैं जिनको मैं बिलकुल नही जानता हूँ। पटना मेडिकल कालेज के प्रिन्सिपल व अन्य बड़े-बड़े डाक्टर व अन्य बड़े आदमी मेरा इलाज करा चुके है। ९०० मील अहमदाबाद, बड़ौदा से लोग मेरे पास यहाँ आकर कठिन रोगो का इलाज करा चुके है। लोग हिन्दुस्तान के हर हिस्से से मुझे अपना हाल लिखकर भेजते हैं और मैं उनको दवा भेजता हूँ। लगभग सब ठीक हो जाते हैं।

अध्याय ३

बारहों दवाओं के अलग-अलग खास गुण (Materia Medica) इनको खूब याद कर लीजिए।

अगर किसी रोग के लिए इन दवाओं मे से कोई खास दवा ठीक मालूम होती है और वह रोग के नुस्खे मे नही है तो उस दवा को उस नुस्खे मे मिला दीजिये।

१—कलकेरिया फ्लोर—नीचे लिखे रोगो में काम देती है:

गिल्टियों (glands) की सूजन के लिए—अगर पत्थर की तरह सख्त हों। नसें बढ़ गई हों या फूल गई हों या हड्डियाँ कमजोर हों। चोटों की वजह से हड्डी बढ़ गई हो। दिल बढ़ गया हो (dilatation of heart) जबान या चमड़ी (crack) फट गई हो, गले में एडीनोयड (adenoids) हों। अगर कैन्सर पत्थर का-सा सख्त हो तो यह फायदा करेगी।

२—कलकेरिया फास—नीचे लिखे रोगों मे काम देती है:

बीमारियों के बाद कमजोरी (convalescence) दूर करने मे बहुत फायदेमन्द है। कमी खून (anaemia) व (rickets) रोग मे पथरी (gallstones) और उनके बनने को रोकती है। बच्चों के दाँत निकलते समय फायदा करती है।

जब ठीक दवा अपना फायदा करना बन्द कर देती है तो इसके देने से फिर वही दवा काम करने लगती है।

३—कलकेरिया फास—नीचे लिखे रोगो मे काम देती है :

जब ठीक दवा अपना फायदा करना बन्द कर देती है तो इसके देने से फिर वही दवा काम करने लगती है। फोडों के लिये बडी अच्छी दवा है। साइलीशिया के बाद अच्छा काम करती है। वह पीप बनना रोक देती है और जख्म को बहुत जल्द सुखा देती है जिसे लोग देख कर ताज्जुब करते हैं। अगर आपरेशन के बाद यह दवा खिलाई जाय तो जख्म एक ही दिन मे सूखने लगेगा।

४—फैरम फास—नीचे लिखे रोगों में काम देती है :

यह दवा बुखार व सूजनो के शुरू हालत मे बहुत फायदेमन्द है। खून के बहने को रोकती है। ऐसे दर्द मे फायदेमन्द है जिनमे हरकत करने से तकलीफ बढती है और ठन्ड से तकलीफ कम होती है। फैरम फास २००x व काली फास २००x कैन्सर के दर्द को दूर करती है।

५—कालीम्योर—नीचे लिखे रोगो मे काम देती है।

कान व आंख की तकलीफो मे। सूजी हुई गिल्टियो मे और बुखारो मे, पेट की तकलीफों मे, जो बहुत घी या तेल की चीजे खाने से हो गई हों। अगर दर्द हरकत करने से बढ़ता है तो इस दवा से फायदा होता है।

६—काली फास—नीचे लिखे रोगो मे काम देती है :

खून की अगर जहरीली (septic) हालत हो गई हो। पागलपन

(काली फास २००x) दिमाग को तकलीफ। दिमाग के थकान। हिस्टीरिया। खराब हाफजा। घबराहट की हालत। शरीर के किसी हिस्से का लकवा या फालिज। बच्चों का लकवा (काली फास ३०x)। टाइफस या टाइफाइड बुखार। नींद न आना। रग (nerve) के ऐसे दर्द को फायदा करती है जिनमें ठन्डी हवा से दर्द बढ़ता हो या हरकत व खाना खाने से आराम होता है।

७—काली सल्फ—नीचे लिखे रोगो मे काम देती है :

अगर किसी रोग के दाने (eruptions) किसी वजह से दब (suppress) गये हो और उसकी वजह से बीमारी पैदा हो गई हो तो वह दवा दाने उभार देती है और रोग अच्छा कर देती है।

इसके खाने से पसीना आता है। अगर दर्द एक जगह से दूसरी जगह चलता हो या रोगी को तकलीफ शाम को बढ़ती हो और खुली हवा में कम होती हो या गरम कमरे मे रोगी को आराम मिलता हो, तो यह दवा काम देती है। बुखारों म भी काम देती है। अगर दवा ठीक काम न करती हो तो इसके देने से वही दवा अच्छा काम करती है।

८—मैगनेशिया फास—नीचे लिखे रोगो मे काम देती है :

ऐसे दर्दों के लिए जिनमें सेकने से आराम होता है व ऐसे दर्दों के लिये भी जिनमे दाहिनी तरफ दर्द हो या सर्दी से व दबाने से बढ़ता हो। हर तरह के दर्दों के लिए मुफीद है सिवाय उनके जिनमे जलन होती है। माहवारी के समय जो दर्द होता है उसके लिये बहुत फायदा

करती है। तशन्नुज (खिचाव-ऐंठन) (Spasms) के हटाने के लिये बहुत मुफीद है। हिचकी को अच्छा करती है यह नींद लाती है। टी० बी० यानी तपेदिक की खास दवाओं में है।

९—नैट्रम म्योर—नीचे लिखे रोगों मे काम देती है :

यदि थूक या आँसू बहुत आते हों। या थूक बहुत कम हो गया हो तो यह दवा काम करती है। कमजोरी को दूर करने की अच्छी दवा है यहाँ तक कि हार्टफेल होने को रोकती है।

लू व गरमी के असर व दिमाग के थकान को दूर करती है यदि रोगी नमक बहुत खाना चाहता है या उसको तकलीफ सवेरे या ११ बजे दोपहर को या जाड़े से या मुकर्रर टाईम के बाद मसलन एक दिन बाद छोड़कर हो या दो दिन बाद हो तो यह दवा अच्छा काम करती है।

१०—नैट्रम फास—नीचे लिखे रोगो मे काम देती है :

टी० बी० व पीलिया रोग में यदि जबान के ऊपर का रंग पीला हो तो अच्छा काम करती है। रोगी को खुली हवा पसन्द नहीं होती।

११—नैट्रम सल्फ—नीचे लिखे रोगों मे काम देती है :

सिर में चोट लगने से जो तकलीफें पैदा हों, उनको यह दूर करती है कभी-कभी मरीज खुदकशी (आत्म-हत्या) करना चाहता है यह दवा ऐसे ख्यालात को हटाती है।

पेशाब मे शक्कर आना रोकती है। सूजाक के पुराने असर को दूर करती है।

अगर रोगी के बरसाती मौसम से तकलीफ होती हो या बायें तरफ लेटने से तो यह दवा फायदा करती है या अगर रोगी को गरमी या खुश्क मौसम, खुली हवा में आराम मिलता हो तो इस दवा से फायदा होगा ।

१२. साइलीशिया--नीचे लिखे रोगों मे काम देती है ।

फोड़े-फुन्सियो में जिनको यह जल्दी से फोड़ देती है । अगर रोगी को रात मे या सोने के बाद या जाड़े मे या ठन्डी या खुली हवा में या पूर्णमासी या दूज को जब चन्द्रमा दिखाई देता है तकलीफ बढ़े या गरमी मे गरम कमरे में या सेकने से आराम मिले तो यह दवा फायदा करती है ।

अध्याय ४

रोग व उनका इलाज (Therapeutics)

अति आवश्यक नोट—(१) यदि रोगी की तबियत दिन की अपेक्षा रात को ज्यादा खराब होती हो तो नुस्खों मे साइलीशिया १२x मिला दीजिये अगर उनमे यह दवा न हो। प्रायः केवल साईलीशिया १२x ही अच्छा कर देती है।

(२) यदि तबियत सवेरे या ११ बजे दोपहर को ज्यादा खराब होती हो या बेहोशी हो या थूक ज्यादा हो या आंसू ज्यादा हो तो नैट्रम म्युर ३x नुसखे मे शामिल कर दीजिये अगर उसमे यह दवा न हो।

(३) यदि रोगी बूढ़ा हो तो कलकेरिया फास ३x बजाय कलकेरिया फास १२x नुस्खो में मिलाइये।

(४) कलकेरिया सल्फ और काली म्यूर एक दूसरे के असर को अक्सर दूर करते हैं, इसलिये इन दोनो को एक साथ नही देना चाहिये। लेकिन यह बहुत जरूरी नही है।

(५) यदि दवा से फायदा हो रहा है तो खुराक देर-देर बाद देना चाहिये। यदि किसी दवा से फायदा नही हो रहा है तो उसे काफी देर तक आजमाइए क्योंकि कभी-कभी किसी-किसी रोगी को देर में फायदा होता है या दवाओ की शक्ति बढ़ाइए। बजाय ३x के ६x

फिर १२x, ३०x और २००x। अगर दवा देने पर भी तबियत गिरती जा रही है तो वह दवा बन्द कर देना चाहिये और दूसरी दवा देना चाहिये या उसकी शक्ति बढ़ाइए।

(६) यदि रोगी को २ या ३ रोग हों, एक-एक रोग की दवा अलग-अलग दीजिये। एक के बाद दूसरी और फिर पहली और फिर दूसरी। इस तरह से दीजिये।

(७) जो दवायें रोग को अच्छा करती हैं वही रोग होने के पहले देने से रोग को रोकती हैं (preventive)।

(८) नीचे लिखी हुई दवाये अंदाज से बराबर लेकर और उनको सीक से खूब मिलाकर एक शीशी मे रख लीजिये।

कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास २x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्यूर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x।

यदि निम्नलिखित नुस्खे फेल हो जायं तो ऊपर बनी हुई दवा को थोड़ी-सी लीजिये उनमे कलकेरिया सल्फ ३x मिला दीजिये और रोगी को दीजिये। इससे भी लाभ न हो तो ऊपर बनी दवा मे काली म्युर ३x मिलाकर दीजिये।

(९) अगर आपके पास लिखित शक्ति (potency) की दवा नहीं है तो उसे बाजार से किसी अच्छे दवाखाने से मंगाइये या किसी और शक्ति की ही दीजिये अगर रोग खतरनाक है और ठहर नहीं सकते हैं।

(१०) अगर कही से खून निकलता हो तो नैट्रमसल्फ रोगी को न दीजिए।

(११) अगर हिलने से तकलीफ बढती है तो ब्राइयोनिया फायदा करती है।

(१२) अगर पहले हिलने से तकलीफ बढती है मगर बाद मे हिलने से आराम मिलता है तो रस टाक्स फायदा करती है।

(१३) अगर सही दवा काम नही करती तो कलकेरिया सल्फ देने से वही दवा काम करने लगती है।

(१४) कुछ रोगियो को पानी ऐसी चीज के छूने से भी तकलीफ बढ जाती है। इसी तरह किसी-किसी को यह दवाये मुआफिक नही आती। ऐसो को दवा देना बन्द करना चाहिये।

(१५) अगर कोई चमड़े की बीमारी (खाज-खुजली-Eczema इत्यादि) मल्हम लेप इत्यादि लगाने से दबा दी गई है तो उससे कोई दूसरा रोग पैदा हो जाता है ऐसी हालत मे काली सल्फ देने से रोगी अच्छा हो जायगा। रोगियों को मल्हम व लेप चमड़े की बीमारियों में नही लगावा चाहिये।

(१६) अगर दवाये काम न करे तो अन्त मे बारहों दवा मिला दीजिये, कभी-कभी इससे फायदा हो जाता है।

(१७) अगर हालत बहुत खराब हो और रोगी मरने वाला हो और ३x दवा काम न करती हो तो २००x बार-बार दीजिये थोड़ी-थोड़ी देर बाद।

(१८) कलकेरिया फास को बहुत दिनों तक लगातार नहीं देना चाहिये। बीच-बीच मे बन्द कर देना चाहिये। मगर यह बहुत जरूरी नही है।

(१९) अगर दौरान इलाज में तेल, खटाई, मिर्च व खुशबूदार चीजे सेवन न की जावे तो जल्द फायदा होगा।

(२०) दवाओ को धूप व लू से बचाइये।

(२१) अगर दवायें मिली हुई काम न करे, तो कोई खास दवा छांटकर दीजिये। कभी-कभी एक दवा से ही फायदा होता है। इसके लिए रोगी को हर एक दवा की लगभग एक-एक ग्रेन चखाइये जो सबसे मीठी मालूम हो वही सही दवा है।

(२२) अगर तकलीफ जाड़े मे बढ़ती है तो कालीम्योर ३x, नैट्रम म्योर ३x और साइलीशिया १२x नुस्खे मे मिलाइये।

(२३) अगर बरसाती मौसम मे तकलीफ बढ़ती हो तो नुस्खे में नैट्रम सल्फ ३x मिलाइये।

(२४) अगर मौसम बदलने पर तकलीफ बढ़ती हो तो कलकेरिया फास ३x दीजिए।

(२५) अगर किसी ऊंची शक्ति की दवा से रोगी की तकलीफ बढ़ जावे तो उसी दवा की नीची शक्ति से ऊंची शक्ति का असर कट जाता है।

(२६) अगर रोगी को सिफलिस या सुजाक हो चुका है तो पहले

उन रोगो की दवा देना अच्छा होता है बाद मे मौजूदा रोग की दवा दी जाय।



१--गर्भपात को रोकना (abortion) : कभी-कभी गर्भपात हो जाता है। यानी गर्भ गिर जाता है। यह गर्भ रहने के ६ महीने के अन्दर होता है। ६ महीने बाद बच्चा पैदा हो तो उसे गर्भपात नही कहते हैं। थोडी-थोड़ी देर बाद काली फास ३x और मैगनेशिया फास ३x गरम पानी मे मिला कर दीजिये अगर सफलता न हो तो होमियोपैथिक Sabina ६x की एक-एक गोली थोड़ी-थोड़ी देर बाद दीजिये। खून को रोकने के लिए खून को रोकने वाला पाउडर दीजिये।

गर्भ के दौरान मे काली फास ३x बराबर दीजिये। उनके देने से गर्भपात का अन्देशा नही रहेगा। जिन स्त्रियो को गर्भपात हो जाया करता है उनको चाहिये कि कलकेरिया फास ३x, फैरम फास १२x व काली फास ३x मिलाकर एक या दो खुराकें रोज लें।

फोड़े-फुन्सी (abscesses and boils) : होमियोपैथिक हिपर सल्फ ६x बहुत उपयोगी है। एक-एक गोली दिन मे तीन या चार बार दीजिये, यदि मवाद नही पड़ा है तो दवा फोड़े को बैठा देगी, अगर मवाद पड़ गया है तो फोड़े को जल्द फोड़ देगी। इससे अक्सर आपरेशन बच जाता है।

यदि यह फेल हो जाये तो अगर मवाद नहीं पड़ा है तो कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x मिलाकर कई बार दिन मे दीजिये और अगर मवाद पड़ गया है तो साइलीशिया २०० रोजाना दीजिये इससे बहुत जल्द फोडा फूट जायगा। जख्म भरने के लिये कलकेरिया सल्फ ३x देना चाहिये। यह बहुत ही फायदेमन्द है और बहुत जल्द जख्म को सुखा देती है। आपरेशन के बाद देने से बहुत जल्द जख्म भर जाता है जिसको लोग देख कर ताज्जुब करेंगे।

कई साल हुये लेखक के मित्र श्री हुब्बालाल वकील, आगरा, के उंगली मे एक फोडा था जिसमे बहुत तकलीफ थी। साइलीशिया २०० की एक गोली दी गई दो घन्टो मे फोड़ा फूट गया।

यदि बहुत से फोड़े हो गये हो जैसे बच्चो को गरमियो मे अक्सर हो जाते है तो होमियोपैथिक आर्निका २०० की एक गोली हफ्ते से दो बार देने से बहुत जल्द ठीक हो जाते है।

हिन्दुस्तानी दवा, कौड़िया लोहबान एक छटाक लीजिये। उसे खूब कूटिये और छान लीजिये और एक बोतल मे रख लीजिये। उसमे से थोड़ा-सा लीजिये और थोडी ताजी रबढ़ी जिसमे शक्कर मिली हो मिलाकर फोड़े पर रख कर बांध दीजिये फोड़ा बैठ जायेगा। यह फोड़े की शुरू हालत मे फायदा करती है।

३—खट्टी डकारों का आना व सीने में जलन : यह अक्सर बदहजमी से होती है। कभी-कभी खट्टा पानी मुंह मे आ जाता है (Acidity) : इस रोग के लिये कलकेरिया फास ३x या १२x,

फैरमफास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये।

४—मुहाँसे (Acne pimples) : जो अक्सर जवान लडके व लड़कियो के मुँह, पीठ व सीने पर होते हैं। कलकेरिया फास ३x दिन मे चार या पाँच बार—दो या तीन दिन तक खाने से फायदा न हो तो कलकेरिया फास ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, साइलीसिया १२x मिलाकर दीजिये।

५—एडीनोएड (Adenoids) : नाक के अन्दर गोश्त का बढ़ जाना। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, काली म्योर ३x, काली सल्फ ३x मिलाकर दीजिये।

६—एडीसन की बीमारी (Addison's disease) : यह बहुत ही कम होती है। काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये।

७—एलबुमिनेरिया (Albumenaria) : इस रोग मे पेशाब के साथ बहुत एलबूमिन जाता है। कलकेरिया फास ३x या १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये। लाभ न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x दीजिये।

८—एन्जाइना पैक्टोरिस (Angina pectoris) : इस रोग मे हृदय मे बहुत जोर से दर्द होता है जो बाँह से होकर हाथ तक

आता है। कठिन रोग है। कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, कलकेरिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, व साइलीशिया १२x को मिला कर आध पाव पानी मे घोल लीजिये। एक चम्मच इसमे से लेकर हर बार ४ या ५ चम्मच खूब गरम पानी मे मिला कर थोड़ी-थोड़ी देर बाद दीजिये। गरम पानी भी रोगी को पीने को दीजिये इससे दवा का असर अच्छा होगा। यदि यह दवा काम न करे तो एकोनाईट ६ आर्सेनिक एल्ब या क्युपरम मिटैलिकम ६ की एक-एक गोली १-१ या २-२ घन्टे बाद दीजिये एक ड्राम क्रैटोगस θ मोल लीजिये। ४-५ बूंद एक छटाक पानी मे घोलिये १-१ चम्मच १-१ या २-२ घन्टे बाद दीजिये।

९—एनीमिया (Anaemia) :—खून की कमी या खून की कमजोरी। परनीशस एनीमिया (pernicious anaemia) : एक प्रकार का कठिन एनीमिया होता है जिसमे जान का खतरा होता है। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x यह बहुत ही अच्छी साबित हुई है। इससे परनीशस एनीमिया भी ठीक होता है।

१०—छाले मुँह व जबान के (Apthous mouth) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरमफास १२x, कालीम्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिला कर। अगर यह फेल हो तो कलकेरिया सल्फ ३x, काली सल्फ ३x, और नैट्रम फास ३x मिलाकर दीजिये।

श्री यशोदा नन्दन एडवोकेट, इटावा की एक महीना पुरानी छाले की तकलीफ एक रात भर में इस दवा से ठीक हो गई ।

११—एपोप्लैक्सी (Apoplexy) : इस रोग में दिमाग की रग फटने से खून आता है और बेहोशी हो जाती है और मौत आ जाती है। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिला कर फौरन देना चाहिये। रोकने के लिए कलकेरिया फास ३x या १२x एक खुराक रोज।

१२—एपैन्डिसाइटिस (Appendicitis) : दाहिनी रान के पास एक छोटी-सी नली होती है जिसको एपैन्डिक्स (appendix) कहते हैं; जब वह सूज जाती है तो यह रोग हो जाता है। इसमे कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, कालीफास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिला कर आधी छटांक खूब गरम पानी मे मिला कर एक-एक घन्टे बाद दीजिये। गरम पुल्टिस भी बांधिये। अगर १२ या १८ घन्टे के प्रयोग से लाभ न हो तो फैरम फास व साइलीशिया की शक्ति १२x रखकर बाकी दवाओ की शक्ति ६x कर दीजिये और एक-एक घन्टे बाद दीजिये। इससे भी लाभ न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, काली सल्फ ३x, नैट्रम फास ३x मिला कर गरम पानी मे दो-दो घन्टे बाद दीजिये।

१३—भूख बढ़ाने के लिए (Appetite to increase) होमियोपैथिक ब्राइयोनिया ६, की एक गोली ६-६ घन्टे बाद दीजिये

१ या २ दिन तक। इससे आराम न हो तो नक्स वोमिका ६, की एक गोली १ या २ दिन तक ६-६ घन्टे बाद दीजिये। इससे भी लाभ न हो तो कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिला कर दिन मे तीन बार रोज दीजिये।

१४--भूख घटाने के लिए (Appetite to decrease) : होमियोपैथिक आइओडियम ३०—एक गोली दिन मे २ बार। २ या ३ दिन का लाभ न हो तो कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, कालीफास ३x, नैट्रम म्योर ३x, साइलीशिआ १२x मिला कर दीजिये।

१५--अर्थराइटिस [जोड़ की सूजन] (Arthritis) : फैरम-फास १२x, कलीम्योर ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, साइलीशिया १२x मिला कर तीन-चार रोज तक चार-चार घन्टे बाद दीजिये। अगर लाभ न हो तो कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम सल्फ ३x, मिला कर उसी प्रकार दीजिये।

१६—जलन्धर(Dopsy, ascites) : शरीर के किसी हिस्से मे पानी इकट्ठा हो जाना। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया

१२x मिलाकर ४-४ घन्टे बाद कई रोज तक दीजिये। इससे लाभ न हो तो मैगनेशिया फास ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, नैट्रम फास ३x मिलाकर दीजिये।

१७—दमा (Asthma) : यह पुराना रोग है जिसमें सांस लेने में तकलीफ होती है और मालूम होता है कि सीना तङ्ग है। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैंगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिला कर दिन मे तीन-चार बार दीजिये। यदि इससे १-२ रोज मे लाभ न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x मिलाकर दीजिये।

डाक्टर वी० के० पटवर्धन ए० एम० एस०, एस० एस० हास्पिटल, बनारस हिन्दू यूनीवर्सिटी के एक रिस्तेदार को दमे से बहुत तकलीफ थी। इस दवा से फौरन आराम मिला और वह ठीक हो गई।

१८—कमर का दर्द (Backache--lumbago): कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली सल्फ ३x, नेट्रम म्योर ३x, साइलीशिया १२x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, मैंगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x मिला कर दीजिये। लाभ न हो तो काली म्योर ३x दीजिये।

१६—बेरी बेरी (Beri Beri) : इस रोग मे बहुत कमजोरी हो जाती है। टांगे व जांघें सख्त हो जाती हैं और यह हिस्से

सूख जाते हैं। पेशाब कम होती है। प्यास बढ़ जाती है। लैम्प की तरफ देखने से चारों तरफ धनुष-सा मालूम होता है। कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x।

२०—अंधापन (blindness): कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, काली म्योर ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये। रतौंधी मे यानी अगर रात को न दिखाई देता हो तो नैट्रम म्योर ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये।

२१—खून का निकलना (Hyemorrhage to stop) : खून को रोकने के लिए। कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x मिला कर दीजिये। बहुत अच्छी दवा है। यदि इससे लाभ न हो तो होमियोपैथिक इपीकाक ६, की १ गोली १-१ घन्टा पर दीजिये (अगर खून लाल रंग का हो) या हैमामेलिस ६, की १-१ गोली इसी तरह दीजिये (अगर खून काले रंग का हो)।

२२—पित्त का उभार (Biliousness) : इस रोग से जी मचलाता है और पित्त की कै होती है। भूख मारी जाती है। कब्ज रहता है। पेट भारी रहता है। हाजमा बिगड़ जाता है। सुस्ती रहती है। हर वक्त लेटने को मन चाहता है। इसमें काली म्योर ३x और नैट्रम सल्फ ३x मिला कर दीजिये।

२३—छाले शरीर में (Blisters) : काली फास ३x व नैट्रम म्योर ३x मिला कर दीजिये।

२४—बरजीयर्स डिजीज (Bergier's disease) : यह बीमारी बहुत कम होती है मनुष्य के शरीर में कुछ ऐसी गिल्टियाँ (glands) होते हैं, कि जिनका काम ठीक न होने के कारण शरीर का आधा हिस्सा बहुत गरम होता है और आधा हिस्सा बहुत ठन्डा। इस रोग को बरजियर्स डिजीज कहते हैं। इसमे जो हिस्सा ठन्डा रहता है, उसमे खून नही दौड़ता है जिसकी वजह से जख्म (ulcer) हो जाते हैं जो अच्छे नही होते और अंग को काटना पड़ता है। इस रोग मे कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये। यदि सफलता न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x, काली सल्फ ३x व नैट्रम सल्फ ३x मिला कर दीजिए।

२५—साँस फूलना (Breathlessness) : इसके लिए होमियोपैथिक इपीकाक ६, की एक-एक गोली दो-दो घन्टे बाद दीजिये या कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली साफ ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x मिला कर दीजिये।

२६—ब्रौंकाइटिस (Bronchitis) : इस रोग मे उस नली मे जिससे हवा फेफड़ो में जाती है सूजन हो जाती है। इसमे बुखार हो जाता है, नब्ज तेज हो जाती है, सूखी खासी व सांस लेने मे तकलीफ होती है। फैरम फास १२x, कालीम्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x व

साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये। वरना कलकेरिया सल्फ ३x। यह भी फेल हो तो खांसी वाली दवा दीजिये। सीने में मालिश भी कीजिये जिसका हाल खांसी के इलाज मे देखिए।

२७—जल जाना (Burns) आग या बिजली से। फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, काली सल्फ ३x, पानी मे घोल कर थोड़ी-थोड़ी देर बाद पीने को दीजिये और इसी दवा को नारियल के तेल में मिलाकर छालों पर लगा कर साफ कपड़ा रखिये। यह दवा बहुत अच्छी है। छालों को फोड़ना नहीं चाहिये।

२८—जलन मालूम होना (Burning sensation) शरीर के किसी हिस्से में : साइलीशिया १२x, कलकेरिया फास ३x या १२x व नैट्रम म्योर ३x मिलाकर दीजिये।

२९—डकार का अधिक आना (Belching eructation excessive) : कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर मिला कर दीजिये।

३०—पुराने रोग (Chronic Diseases) : कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली सल्फ ३x मिला कर दीजिये।

३१—चिल ब्लेन (Chil Blain) : ज्यादा सर्दी से अक्सर पैर के अंगूठे मे व हाथ मे या कान मे सूजन आती है, चमड़ी सुर्ख हो जाती है, खुजली होती है, खास तौर पर शाम को। कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x, इसी को

पानी में मिला कर पिलाइये व वेसलीन या किसी तेल मे मिला कर मलिये। वरना कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x मिला कर दीजिये।

३२—कैन्सर (Cancer) : यह बहुत ही कठिन रोग है। इसमे फोड़ा होता है जो बढ़ता जाता है। रोगी को नीद नही आती; भूख मारी जाती है; कमजोरी बढ़ती जाती है। दर्द भी ज्यादा बढ़ने पर होने लगता है। इसका मेरा इलाज इस प्रकार होता है।

नीचे लिखी हुई १२ पुड़िया दवाओं की बनाइए। उनके नम्बर ०, १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२ और १३ रखिए।

जीरो नं० की पुड़िया में कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, काली सल्फ ३x व साइलीशिया १२x होंगे।

एक नं० की पुड़िया मे कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x व साइलीशिया १२x होंगे।

दो नं० की पुड़िया मे कलकेरिया फास ३x होगी।

तीन नं० की पुड़िया मे कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x होंगे।

चार नं० की पुड़िया मे कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली म्योर ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x होगे।

पाँच नं० की पुड़िया मे कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x होगे।

छः नं० की पुड़िया मे फैरम फास २००x व काली फास २००x होगे।

सात नं० की पुड़िया मे कलकेरिया फ्लोर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x व साइलीशिया १२x होंगे।

आठ नं० की पुड़िया मे फैरम फास १२x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x होगे।

नौ नं० की पुडिया में कलकेरिया फास ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, होगे।

दस नं० की पुड़िया मे काली सल्फ ३x होगा।

ग्यारह नं० की पुड़िया मे कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x होंगे।

बारह नं० की पुड़िया मे कलकेरिया फ्लोर ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x और नैट्रम सल्फ, ३x होंगे।

तेरह नं० की पुड़िया मे कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, या १२x, फैरम फास ३x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x और साइलीशिया १२x होंगे।

यह कुल दवाएं लगभग एक-एक ग्रेन मिलाई जायेंगी। १३ (बारह) नई शीशियां चार-चार आउंस वाली मय नई कार्कों (डाटों) के लीजिये, उनमे या तो गंगाजल भरिये या डिस्टिल्ड वाटर भरिये और उनकी डाटों पर ०, १, २, ३, ४...१३ इत्यादि लिखिये और ० नम्बर वाली

शीशी में ० नम्बर वाली दवा भरिये। नम्बर १ वाली शीशी मे नम्बर १ वाली दवा भरिये। इसी तरह ११ शीशियो मे भरिये और १२ चम्मच प्लास्टिक या पीतल के लीजिये। उन पर भी नम्बर ०, १, २, ३, ४···१३ डालिए। एक-एक चम्मच एक-एक शीशी के साथ होगा यानी नम्बर ० का चम्मच नम्बर ० की शीशी के सम्बन्ध मे होगा इत्यादि।

एक-एक चम्मच दवा की एक-एक खुराक होगी—रोज इस प्रकार दवाएं दी जायेंगी—

नं० ०	···	६ बजे सुबह
नं० १	···	७ " "
नं० २	··	८ " "
न० ३	···	९ " "
न० ४	···	१२ " दोपहर
न० ५	···	१ " "
नं० ६	···	२ " "
न० ७	··	३ " "
नं० ८	··	४ " शाम
न० ९	···	५ " "
न० १०	··	६ " "
न० ११	·	७ " "
न० १२	··	८ " "
न० १३	··	९ बजे रात

नम्बर ६ की दवा ५-७ रोज शुरू में न दीजिये और बाकी दवाओ को ऊपर लिखे टाइमों पर देते रहिए। यदि ५-७ रोज मे दर्द

कम हो जाय तो ठीक है वरना नम्बर ६ की दवा का एक चम्मच सुवह १० बजे रोज दीजिए।

इतनी दवायें लगभग १ महीने चलेंगी फिर इसी प्रकार बनाइए।

(नोट—यदि रोगी बहुत ही कमजोर हो गया हो या बहुत ही बुड्ढा हो तो बजाय कलकेरिया फास ३x के कलकेरिया फास १२x हर जगह इस्तेमाल कीजिए)।

यह नित्य का क्रम होना चाहिए। कुछ हालत मे यह तुरन्त लाभ पहुँचाता है। बहुत रोगी जो चारपाई पर पड़े रहते हैं और बिना किसी के सहायता के उठ-बैठ नहीं सकते एक सप्ताह या १० दिन मे आराम से चल-फिर लेते हैं।

गले, फेफड़े और पेट के केन्सर में जबकि रोगी पानी तक नहीं निगल सकता दस या बारह दिन में खाना आसानी से खाने लगता है।

समय की बचत के लिए पुड़िया नम्बर ०, १, २ और ३ को ५-५ मिनट के अवकाश पर ६ बजे प्रातः और फिर पुड़िया नम्बर ४, ५, ६, ७, और ८ को ५-५ मिनट के अवकाश पर २ बजे दिन में और ९, १०, ११, १२ और १३ नम्बर पुड़िया को ५-५ मिनट के अवकाश पर ७ बजे शाम को दे सकते हैं।

एक आसान तरीका और यह है कि दो मिक्सचर जैसे (१) स्वेलिंग पाउडर जैसा कि नम्बर ३ में दिया गया है और (२) कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, फैरम फास १२x, काली म्यूर ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x और साईलीशिया १२x मिलाकर दिये जा सकते हैं। यह दोनों ६ आँउस की दो नई बोतलों मे जिसमे डिसटिल्ड पानी अथवा गंगा जल भर दिया गया हो एक चम्मच नं० १ का ८ बजे सुवह और नं० २ चार बजे शाम या ८ बजे रात मे दिया जा सकता है।

७० पत्तियां तुलसी की रोज सुबह खा लिया करे। इससे ३ माह मे कैंसर रोग ठीक हो जाता है।

३३—कारबंकिल (Carbuncle) : एक प्रकार का सगीन फोड़ा होता है जो पीठ, गरदन, चूतरो मे अक्सर होता है इसमे बहुत से छेद हो जाते हैं और बहुत तकलीफ होती है। कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x व साइलोशिया १२x, मिलाकर पिलाइए और इसी को वेसलीन या तेल मे मिलाकर लगाइए। एटा जिला के तहसील कासगंज मे श्री राम प्रसाद रायजादा, वकील के पास एक ऐसी घास है जिसको लगाने से खराब से खराब कारबंकिल ठीक हो जाता है। वह इस घास को बिना मूल्य देते हैं और लगाने की तरकीब भी बतलाते हैं।

३४—मोतिया बिन्द (Cataract) : आंख की पुतली मे एक सफेद जाला पड़ जाता है जिससे कम दिखाई पड़ता है फिर बाद मे बिल्कुल ही नही दिखाई पड़ता। यह बुढापे मे अक्सर होता है यों कभी-कभी जवान व बच्चो को भी हो जाता है।

कलकेरिया फ्लोर १२x, काली म्योर १२x, नैट्रम सल्फ १२x व साइलीशिया १२x मिलाकर दिन मे तीन या चार बार दीजिए। तीन या चार महीने मे ठीक हो जायगा।

आंख मे डालने के लिए साईनीरेरिया मेरिटिमा (Cineraria maritima) जिसकी दो ड्राम की शीशी १½ या २ रु० मे आती है, फायदेमन्द साबित हुई है। इसकी एक-एक बूंद को हर आख में दो बार दिन मे डालिये। यह मोहन होमियो स्टोर, मैस्टन रोड, कानपुर से आती है।

३५—जुकाम (Catarrh-cold) : फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, नेट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिला कर। वरना, कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, । जुकाम के शुरू मे ऐकोनाइट ६ की गोली खाने से जुकाम नही होने पाता।

३६—खसरा (measles) : यह बीमारी आमतौर से बच्चो को होती है और उड़कर लगती है। घर के और बच्चों को बचाना चाहिये ; शुरू मे हरारत होती है, छीके आती हैं, आंखें लाल हो जाती हैं, और उनसे पानी निकलता है, खांसी व शरीर मे दर्द होता है, तीन-चार दिन बाद दाने निकलते हैं पहिले माथे, चेहरे व गरदन पर, फिर धड़ पर, फिर हाथो, पैरों पर बुखार तेज होता है, तीन-चार दिन बाद दाने मुरझाने लगते हैं, खुजली बहुत होती है। फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x मिला कर तीन-तीन घन्टे बाद दीजिये। यह बहुत फायदेमन्द है। इसको देने मे कोई डर नही है।

३७—चेचक (Chicken pox) : यह एक हल्की तरह की चेचक समझी जाती है। फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली सल्फ ३x, काली फास ३x मिलाकर तीन-तीन घन्टे बाद दीजिए, इससे बहुत फायदा होता है। देने मे कोई डर नही है। इस रोग मे दानों का बैठ जाना खतरनाक होता है। लेकिन अगर दाने बैठ भी गये हो तो इस दवा से निकल आते हैं और रोगी अच्छा हो जाता है।

३८—बच्चा आसानी से पैदा होने के लिए (Easy Child birth) : अगर गर्भ होने के शुरू से ही कलकेरिया फ्लोर ३x व काली फास ३x घोल कर दिन मे तीन-चार बार दिया जाय तो गर्भवती स्त्री की बहुत-सी तकलीफें दूर हो जाती हैं और शरीर मे ताकत बनी रहती है। जब बच्चा पैदा होने का समय निकट आ जाय तो कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x गरम पानी में घोल कर एक-एक चम्मच थोड़ी-थोड़ी देर बाद देना चाहिये। इससे दर्द जल्द बढ़ जाता है और बच्चा आसानी से हो जाता है और आपरेशन की जरूरत कभी नहीं पड़ती। यह बहुत ही अच्छी साबित हुई है। अध्याय २ में कई केस दिये गये हैं जिससे जाहिर होगा कि कितनी अच्छी दवा हैं। पल्सेटिला ६ की एक-एक गोली थोड़ी-थोड़ी देर बाद देने से भी दर्द बढ़ जाता है और बच्चा जल्द पैदा होता है।

३९—बच्चा पैदा होने के बाद : फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x देना चाहिये जिससे बच्चे को बुखार न होने पावे।

४०—बच्चा पैदा होने के बाद दर्द (After pains) : कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x व साइलीशिया १२x, मिला कर। अगर दर्द कम न हो तो कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x मिलाकर दीजिए।

४१—बच्चा अगर जिद्दी हो, उसकी जिद की आदत छुड़ाने के लिए (Obstinacy in children—to remove) : साइ-

लीशिया २०० की एक गोली पन्द्रस-पन्द्रह दिन बाद दीजिए। तीन या चार खुराक देना चाहिये।

४२—बच्चा देर में चले या देर में बोले (Children take long to speak or walk) : केवल कलकेरिया फास ३x दीजिये या कलकेरिया फास ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x, मिला कर दीजिए। फायदा न हो तो बराइटाकार्ब २०० की एक गोली एक-एक हफ्ते बाद।

४३—हैजा (Cholera) : यह बड़ी भयानक बीमारी है जिससे बहुत लोग मर जाते हैं। इसमे कै और पतला दस्त (चावल की माड जैसे) होते हैं। शरीर मे सख्त ऐंठन होती है, पेशाब कम हो जाती है, या बन्द हो जाती है। शरीर ठन्डा हो जाता है और बहुत कमजोरी हो जाती है। यह छूत की बीमारी है जो गन्दा पानी पीने या अधिक पके हुये या सड़े हुए फलों के खाने से होती है। इसके कै व दस्तो को जला देना चाहिए क्योंकि अगर उस पर मक्खी बैठेगी और उड़ कर किसी और खाने पर बैठेगी तो वह खाना भी जहरीला हो जायगा। कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, मिला कर पानी मे घोल कर थोड़ी-थोड़ी देर बाद दीजिये। काफी देर तक देने से यदि इससे लाभ न हो तो कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये। रोगी को गरम पानी पिलाइये। दूध न दीजिये। साबूदाना पानी मे पकाकर व शक्कर डाल कर थोड़ा-थोड़ा दीजिये और धीरे-धीरे बढ़ाइए जिससे रोग फिर से न हो जाय। मैं

लिखा चुका हूँ कि महात्मा गाधी के सेक्रेटरी, डाक्टर सुशीला नैय्यर जो भारत की हेल्थ मिनिस्टर रह चुकी हैं, ने इस दवा को हैजे के रोगियो को दिया था उससे बहुत लाभ हुआ।

डाक्टर आर० ए० वर्मा, ११/२३४ सूटरगंज, कानपुर ने इस दवा को बहुत उपयोगी पाया। कई साल हुये श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन (जो कांग्रेस के प्रेसीडेन्ट रह चुके हैं), ने इस दवा को वालन्टीयर्स के द्वारा इलाहाबाद के आस-पास के गाँवो में, जहाँ हैजा फैल रहा था बंटवाया था उस वक्त लेखक के पास बहुत अच्छी रिपोर्टें आई थी।

उसी साल श्री लक्ष्मण प्रसाद श्रीवास्तव, एकाउन्टेन्ट म्यूनिसिपल बोर्ड, इलाहाबाद, अपने गांव जाते वक्त लेखक के पास आए और कहा कि उनके गांव मे व आस-पास के गांवो मे बहुत जोर से हैजा फैल रहा है, लोग मर रहे हैं। लेखक से दवा ले गए और लौट कर आने पर लेखक को पत्र लिखा कि उन्होने ३० आदमियो को दवा दी सब अच्छे हो गए। कोई नही मरा, एक की हालत बहुत खराब थी, वह दवा लेने के ८ घन्टे मे इतना अच्छा हो गया कि चलने-फिरने लगा और उसने उनसे कहा कि मैं आपको स्टेशन तक पहुँचा आऊँ!

श्री जयसिंह, वकील, मिरजापुर लिखते हैं कि उनके पड़ोस मे एक गरीब आदमी को बहुत जोर से हैजा हुआ, वह बिना दवा के मरा जा रहा था। उन्होंने इस दवा को दिया और वह दो घन्टे मे ठीक हो गया।

लेखक के पास ऐसे कई पत्र हैं।

४४—जुकाम (Cold tendency to catch) बार-बार जुकाम होना : यदि कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x व साइली-

शिया १२x पानी मे घोल कर दिन मे दो, या तीन बार ८ बजे सुबह, ५ बजे शाम व ६ बजे रात को दिया जाय तो थोड़े दिनो मे बार-बार जुकाम होना वन्द हो जायगा।

४५—पेट में दर्द—शूल का दर्द : कलकेरिया फास ३x या १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर आध पाव पानी मे घोल कर रखिए। एक-एक चम्मच इसका लेकर ४-५ चम्मच खूब गरम पानी मे मिला कर थोड़ी-थोड़ी देर बाद दीजिए। एक या दो घन्टे मे लाभ न हो तो कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, साइलीशिया १२x मिला कर पानी मे घोल कर एक-एक चम्मच दीजिये। होमियोपैथिक दवा कोलोसिंथ ६ या ३० की एक-एक गोली २-२ या ३-३ घन्टे बाद दीजिये।

४६—कमजोरी (Exhaustion, weakness, collapse) : हाथ-पैर ठन्डे, नब्ज कमजोर या नब्ज बैठ गई हो। तबियत घबड़ाती हो, पसीने का आवा। यह हालतें हार्टफेल होने से पहले होती हैं। यदि फौरन कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x मिलाकर वैसे ही या पानी मे मिलाकर खिलाई जायं तो पूरी आशा है कि मालिक की कृपा से हार्टफेल होने से रुक जायगा। कई दफा इस दवा ने हार्टफेल होने से रोका है। देखिये अध्याय २।

४७—बेहोशी (Unconsciousness—coma) : कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली फास ३x व नैट्रम म्योर ३x मिला कर जल्दी-जल्दी दीजिये। वरना साइलीशिया १२x मिला कर यानी पांचों को मिला कर दीजिये।

४८--कब्ज (Constipation) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, साइलीशिया १२x, पानी मे मिला कर दिन मे ३-४ बार दीजिये। इससे लाभ न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x, नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दीजिये।

४९—कमजोरी, (बीमारी से अच्छे होने के बाद की कमजोरी—(Convalescence) : इसके लिये कलकेरिया फास ३x, या १२x बहुत ही अच्छी साबित हुई है। कलकेरिया फास १२x के सेवन से स्वर्गीय मिस्टर जस्टिस कालिस्टर, जज हाईकोर्ट, इलाहाबाद जो हृदय रोग से ग्रसित अस्पताल मे बहुत दिनो तक रहे थे और घर आने पर चल-फिर नहीं सकते थे, एक ही दिन मे चलने-फिरने लगे।

५० खाँसी—(Cough) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, साइलीशिया १२x को मिलाकर तीन-तीन घन्टे बाद दीजिये। यदि २४ घन्टे मे फायदा न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x, नैट्रम फास ३x मिलाकर तीन-तीन घन्टे बाद दीजिये।

साथ ही साथ मालिश के लिये आध पाव तारपीन का तेल लीजिये उसमें १ छटांक कडुआ तेल मिलाइये, उसमे दो आने की अफीम मिलाइये और हिलाकर उसे घोल लीजिये और एक साफ शीशी मे रख कर डाट लगा दीजिये। रोगी को कमरे के अन्दर किवाड़े बन्द करके इस तेल की सीने मे व पीठ पर मालिश कीजिये। यह मालिश

निमोनिया व ब्रौकाइटिस में भी फायदेमन्द है। यह जहरीली है। पीना न चाहिये। इसे पीने की दवा से अलहदा रखिये।

५१—ऐंठन शरीर के किसी हिस्से में (Cramp) : कलकेरिया फास ३x या १२x व मैगनेशिया फास ३x को गरम पानी मे घोल कर बार-बार पिलाइये व रोगी को गरम पानी मे बार-बार पिलाइये।

५२—क्रूप (Croup) बच्चों के गले की एक कठिन बीमारी जिसमें खांसी भी होती है: कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x मिलाकर दीजिये। वरना कलकेरिया सल्फ ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

५३—बालों का फियास (Dandruff) : बालो की जड़ो मे एक सफेद चीज हो जाती है। काली म्योर ३x, काली सल्फ ३x, व नैट्रम म्योर ३x को मिला कर दीजिये।

५४—बहिरापन (deafness or hardness of hearing) काली म्योर ३x दीजिये वरना फैरम फास १२x काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x व साइलीशिया-१२x, यदि यह फेल करे, तो कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x। अगर चोट लगने से हो तो होमियोपैथिक आर्निका २०० की १ गोली एक-एक हफ्ते बाद दीजिये।

पण्डित देवनारायन, कोल चेकर, लोको इलाहाबाद, लेखक के पास लगभग १६ वर्ष हुये आये और कहा कि वह बहिरे हो गये हैं

और रेलवे वालों ने नोटिस दे दिया है कि अगर २ हफ्ते में अच्छे नहीं होंगे तो नौकरी से निकाल दिये जायेंगे। इलाहाबाद के क.न के रोग के होशियार डाक्टरो का इलाज कर चुके थे कोई फायदा नही हुआ। लेखक ने काली म्योर ३x उनको दिया। दूसरे रोज बहुत खुश होते हुये आये और कहने लने कि पहली खुराक खाने के थोड़ी देर बाद कान मे शोर की आवाज बहुत बढ़ गई लेकिन थोड़ी ही देर बाद वह आवाज बन्द हो गई और उनको साफ सुनाई देने लगा। वह अच्छे हो गये।

५५—सन्नपात (Delirium) (बुखार व और रोगों में बेहोशी व बहकी-बहकी बातें करना) : कलकेरिया फास ३x, या १२x, फेरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x व नैट्रम सल्फ ३x मिला कर दीजिये। लगभग १० वर्ष हुये यहां के अस्पताल मे श्री वैष्णव, एक्साइज़ इन्सपेक्टर थे। उनको तेज बुखार था और वह बेहोशी में हाथ-पैर फेंकते थे और भागने की कोशिश करते थे। इसलिए डाक्टरों ने उनके हाथ-पैर पलग से बंधवा दिये थे। ऊपर वाली दवा दी गई, ४ या ५ मिनट मे ही रोगी शान्त हो गये और हाथ-पैर खोल दिये गये और वह सो गये।

५६—शराबियों की बेहोशी व बकना (Delirium tremens) वही दवा जो मामूली सन्नपात के लिए लिखी गई है।

५७—बच्चों के दांत निकलना (Teething children) कलकेरिया फ्लोर ३x व कलकेरिया फास ३x मिला कर दीजिये। यदि बच्चा बहुत रोता हो तो होमियोपैथिक कैमोमिला ६ की १-१ गोली ४-४ घन्टे बाद दीजिये।

५८—पेशाब में शक्कर का आना : (Diabetes) इसमे बहुत प्यास लगती है और पेशाब भी अधिक होती है। कठिन रोग है लेकिन मालिक की दया से लेखक की दवा अच्छा कर देती है। कलकेरिया फास ३x, फेरम फास १२x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर ४ बार रोज दीजिये। यदि फायदा न हो तो कलकेरिया फास ३x या १२x, फेरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दीजिये। कुछ दिनों के बाद कलकेरिया फास ३x या १२x इसमें से निकाल दीजिये। यदि रात को तकलीफ ज्यादा हो तो साइलीशिया १२x मिला दीजिये। श्री लेखराज मनोहर लाल अग्रवाल, सरकारी ठेकेदार २ नरायन ध्रुव क्रास लेन, बम्बई–३, इस रोग की दवा का परचा व मुफ्त दवा बांटते हैं।

इस रोग के लिए २१ पत्ते अरहर के लीजिये, १२ काली मिर्च मिला कर इनको आधा सेर पानी में डालिये और उबालिये जब एक छटांक रह जाये तो दीजिये। इसी तरह से सुबह व शाम को दें।

५९—दस्त आना (Diarrhoea) : पतले दस्तों का आना। वही इलाज जो हैजा (Cholera) के लिए लिखा गया है।

नोट—कभी-कभी पेचिस में भी पतले दस्त होते हैं और आंव नहीं गिरती है! इस लिये दस्तो मे अगर हैजा वाली दवा काम न करे, तो पेचिस (dysentery) वाली दवा लीजिये।

६०—हड्डी का जगह से हट जाना (Dislocation of bone) : इसको होशियार डाक्टर ठीक कर सकता है। अगर डाक्टर न मिले तो कलकेरिया फ्लोर ३x व नैट्रम म्योर ३x मिलाकर

दीजिये वरना कलकेरिया फास ३x या १२x व कलकेरिया सल्फ ३x मिला कर दीजिये ।

६१—पेचिश (dysentery) : इसमे पाखाने के साथ आंव व खून जाता है, हरारत होती है और पेट मे हल्का दर्द होता है, जो अक्सर पाखाना करने के बाद कम हो जाता है। कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x व नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दीजिये । अगर १२ घन्टे मे इससे आराम न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x दीजिये । इससे भी आराम न हो तो कलकेरिया फ्लोर ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये । पेचिस कभी-कभी बिगड़ जाती है, कई सालों तक अच्छी नहीं होती है हवा ज्यादा खारिज होती है । पेट मे हल्का दर्द होता है । लेकिन मालिक की दया से इस दवा से ठीक हो जाती है। इससे दोनो तरह की पेचिस—अमीबिक व बेसीलैरी (amoebic and bacillary) ठीक हो जाती है । बहुत पुराने केस भी अच्छे हो जाते हैं। श्री अनन्त सहाय, एम० एड्०, बी० एस०-सी०, बी० टी०, २/३४, काली महल, बनारस अपने पत्र दिनांक १२-११-१९५२ मे लेखक को लिखते हैं कि आपके कुछ नुस्खे बहुत आश्चर्यजनक हैं। मैं एक पुरानी पेचिस का केस लिखता हूँ जिसको मैंने आपकी दवाओं से ठीक किया है । एक खत्री सज्जन की नातिन ६ माह से पुरानी पेचिस से ग्रस्त थी । अच्छे से अच्छे डाक्टरो का व सिविल सर्जन का इलाज हो चुका था । लेकिन उससे रोग अच्छा नही होता था, थोड़ी देर को फ़ायदा हो जाता था । फिर लेखक की दवा उन्होंने दी और उससे २४ घन्टे के अन्दर आराम मिला और ७२ घन्टे मे बिलकुल ठीक हो गई । दवा

बन्द कर दी गई है और लड़की बिल्कुल ठीक हो गई है। मालिक को वा आपको धन्यवाद।

यदि ऊपर लिखी हुई दवा काम न दे तो होमियोपैथिक दवा नक्सवोमिका ६ (Nux Vom 6) या एलोज ६ (Aloes 6) दीजिये। यदि खून आता हो तो मरक्युरियस कार ६ (Merc. Cor 6) दीजिये। १-१ गोली ३-३ घन्टे बाद। पेचिस व दस्तों व चक्करों के लिए एक छटांक सूखा आंवला लीजिये, उसे घी में भूनिये। एक या डेढ़ तोला जीरा लीजिये उसे भी भूनिये। १/८ तोला भूनी हुई हींग व थोड़ा लाहौरी नमक लीजिये इन सब चीजों को मिला लीजिये और उस दही में मिलाइये जो कपड़े में रखकर टांगा गया है जिसका पानी गिर गया हो। यह एक खुराक है। सुबह व शाम को दीजिये। २-३ रोज में ठीक कर देती है।

६२—माहवारी का दर्द के साथ होना (Deysmenorthoea) : माहवारी के दिनों में केवल मैगनेशिया फास ३x गरम पानी में घोल कर एक-एक घन्टे बाद दीजिये। वरना कलकेरिया फास ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x मिला कर दीजिये। अगर यह भी फेल हो जाय तो फैरम फास १२x व काली म्योर ३x मिला कर दीजिये। माहवारी खत्म होने के बाद फैरम फास १२x व काली म्योर ३x मिला कर रोज २-३ मरतबा दीजिये, जब तक फिर शुरू न हो।

६३—डिस्पेप्सिया (Dyspepsia) : पुरानी बदहजमी कभी कब्ज व कभी दस्त, यह लगा रहता है। कलकेरिया सल्फ ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x मिला कर ३-३ घन्टे बाद दीजिये। इससे लाभ न हो तो कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम

फास १२x, काली म्योर ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x या १ गोली कलकेरिया सल्फ २०० सवेरे व दूसरे रोज शाम को १ गोली नैट्रम म्योर २०० दीजिये। इसी तरह ८ दिन बाद दीजिये।

६४—कान का बहना (Ear—discharge from) : कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, साइलीशिया १२x। यह बहुत अच्छी साबित हुई है।

६५—कान में दर्द (Earache) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फ़ास १२x, काली म्योर ३x, काली फ़ास ३x, काली सल्फ ३x, मैंगनेशिया फास ३x व नैट्रम सल्फ़ ३x मिला कर दीजिये। वरना कलकेरिया सल्फ़ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये।

६६—एम्फाइसिमा (Emphysema) (शरीर के किसी भाग मे हवा भर कर फूल जाना) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फ़ास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x व नैट्रम म्योर ३x मिला कर, वरना काली म्योर ३x दीजिये।

६७—आँख का ढैंड़ापन (Squint in eyes) : दोनों आँखें एक साथ सीधी नही देख सकती—फैरम फ़ास १२x दिन में तीन बार, बहुत दिनों तक दीजिये। फिर फैरम फ़ास ३०x दिन मे दो बार दीजिये।

६८—डर (Fear) : डर का असर दूर करने के लिए काली फ़ास ३x दीजिये।

६९—गैंगरीन (Gangrene) (शरीर के किसी हिस्से के सड़ने की पहली हालत) : काली फास ३x एक-एक घन्टे बाद दीजिये व बाद में ६x, १२x, ३०x व आधा ड्राम पाउडर को पाव भर पानी में मिला कर उसमें कपड़ा भिगो कर तकलीफ की जगह पर बराबर रखिये।

७०—माँ का दूध बढ़ाने के लिए (Mother's milk to increase) : कलकेरिया फास ३x.

७१—माँ का दूध घटाने के लिये अगर ज्यादा हो (Mother's milk to decrease) : कलकेरिया फ्लोर ३x, नैट्रम म्योर ३x व नैट्रम सल्फ ३x मिला कर दीजिये।

७२—उकौता, अपरस या छाजन (Eczema) : यह एक चमड़े की बीमारी होती है, इसमें खुजली होती है और कभी-कभी पानी निकलता है। आमतौर से अच्छा नहीं होता, होमियोपैथिक ग्रैफाइटिस २०० की एक गोली १५-१५ दिन बाद ८० फीसदी केस अच्छे कर देती है। इलाहाबाद में एक एन्जिन ड्राइवर को बहुत ज्यादा तकलीफ थी। शरीर के आधे से ज्यादा हिस्से में रोग था, ४ महीने की छुट्टी लेनी पड़ी। १३ साल हुये लेखक के पास वह आये, १ गोली दी गई और वह दूसरे ही दिन अपने काम पर चले गये। उनका नाम श्री आर० एस० श्रीवास्तव है।

७३—मिरगी (Epilepsy) : इसमें बेहोशी के दौरे होते हैं। रोगी गिर पड़ता है। यह कठिन रोग है। काली म्योर ३x दिन में

चार बार दीजिये, दो तीन दिन तक, अगर आराम न हो तो कल-केरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, १५-२० दिन तक; यह भी काम न करे तो नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये। अगर इन दवाओ मे से कोई भी फायदा करे तो उसे बहुत दिनो तक जारी रखना चाहिये, बाद में जब काम करना बन्द कर दे, तो दवाओं की शक्ति बढ़ाइये। ब्युफो ३० एक गोली सुबह व शाम भी दें। इससे भी लाभ न हो तो Oenanthe Crocata ३० को एक गोली सुबह व शाम दें।

७४—एरीसिपलास (Erysipelas): यह उड़ कर लगती है। इसमे चेहरा सूज जाता है। अगर दबावे तो सुर्खी दूर हो जाती है। फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x मिला कर दीजिये। अगर यह फेल हो जाय तो कलकेरिया फ्लोर ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम फास ३x, साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये।

७५—इसोनोफीलिया (Eisonophilia): इसमे हलकी हरारत होती है। सांस फूलती है। कभी-कभी डाक्टर साहबान इस किस को टी० बी० का किस समझ कर पहाड़ पर भेज देते हैं। इसकी ठीक पहचान खून की जांच से होती है। इसमें कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x व नैट्रम फास ३x मिला कर दीजिये। बहुत फायदा करती है। इससे इन्जेक्शन के बिना रोगी अच्छे हो जाते हैं।

७६– आँख का दुखना व लाल हो जाना (Conjunctivitis) : कलकेरिया फ्लोर ३x, फेरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x व नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x पानी मे घोल कर पिलाने से रोग को अच्छा करती है।

७७—आँख में रोहे (Granules Trachoma) : इसमे अकेले काली म्योर ३x पानी म घोल कर पिलाने से आराम होता है इससे ठीक न हो तो काली म्योर ३x, नैट्रम म्योर ३x व नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दीजिये। यह रोग लाइलाज समझा जाता है लेकिन इन दवाओं से लगभग १०० फीसदी केस ठीक होते हैं। आजमाकर देखिये।

७८—आँख से नजदीक की चीज न दिखाई पड़े (Hyperopia Hypermetropia) : नैट्रम म्योर ३०x, रोज ४ बजे शाम एक महीने तक व बाद म नैट्रम म्योर २०० की एक गोली शाम को दो हफ्ते मे एक बार दीजिये। न फायदा हो तो साइलीशिया ३०x रोज सवेरे दीजिये।

७९—आँख से कमजोर निगाह (Sight—weak) : काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर पानी मे घोल कर पिलाइये। इससे फायदा न हो तो नैट्रम म्योर २०० की एक गोली दो हफ्ते बाद शाम को दीजिये।

८०—आँख में रोशनी से डर लगता है (Photophobia) : कलकेरिया फास ३x, या १२x मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x,

नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दीजिये । अगर पुरानी तकलीफ है तो साइलीशिया १२x इसी मे मिलाइये ।

८१—आँख से आँसू ज्यादा निकले (Tears from eyes) नैट्रम म्योर ३x ।

८२—आँख से दूर की चीज दिखाई न दे (Myopia) : नैट्रम म्योर ३x, एक खुराक रोज शाम को चार बजे ७ रोज तक दीजिये । आराम न हो तो नैट्रम म्योर ३०x इसी तरह दीजिये । बाद मे नैट्रम म्योर २०० की एक गोली शाम को हर दो हफ्ते बाद दीजिये ।

८३—बुखार (fever) : मामूली बुखार मे फैरम फास १२x, काली म्योर ३x व नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर देने से बहुत ही जल्द फायदा होता है । इसे दो-दो घन्टे बाद देने से १२ से २४ घन्टे मे लाभ न हो तो कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x, घोल कर दो-दो घन्टे बाद २४ घन्टे तक दीजिये । अगर इससे भी फायदा न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x दो-दो घन्टे बाद दीजिये । अगर बेहोशी हो तो ऊपर लिखे नुस्खो मे नैट्रम म्योर मिलाकर दीजिये । अगर इनसे भी ठीक न हो तो समझना चाहिये कि शायद मियादी बुखार है ।

इनसे मलेरिया बुखार अक्सर अच्छा हो जाता है । मलेरिया मे अगर ऊपर की लिखी दवायें काम न दें तो कलकेरिया सल्फ २००

की एक गोली व नैट्रम म्योर २०० की एक गोली शाम को दीजिये। इससे लाभ न हो तो एक गोली इपीकाक ६ व एक गोली नक्स वामिका ६ की एक के बाद दूसरी दो-दो घन्टे बाद दीजिये।

८४—बुखार (Intermittent fever) : उतरता है, और फिर चढ़ता है। बुखार उतारने के लिये जो दवाये ऊपर लिखी हैं दीजिए। उतरने के थोड़ी देर बाद एक गोली नैट्रम म्योर २०० की व उसके एक घन्टे बाद एक गोली कलकेरिया सल्फ २०० की दीजिए। इनसे ठीक न हो तो बजाय इनके आर्सिनिक एलबम २०० की एक गोली सुबह छः या सात बजे या दोपहर के ३ बजे के बाद दीजिये। मलेरिया मे आमतौर से जाडा लगता है, फिर बुखार तेज होता है, जो १०५ या १०६ डिगरी तक कभी-कभी पहुँच जाता है। फिर पसीना आता है और बुखार उतर जाता है। इसके बाद, कुछ अरसे बाद फिर वही चक्र चलता है। जो बुखार एक दिन छोड़ कर आता है उसे इकतरा बुखार कहते हैं। जिस दिन बुखार न हो उस दिन सवेरे ६ या ७ बजे ही एक गोली चाइना २०० की देने से अक्सर इकतरा-ठीक हो जाता है। बुखार वाले दिन इसे न दीजिये।

अगर इन दवाओं से बुखार न जाय तो ३ या ४ मिर्चे लेकर पानी के साथ गाढ़ी-गाढ़ी पीसिये और एक पट्टी पर लगा कर उस पट्टी को हाथ की उंगली (मर्दों की दाहिनी व औरतों की बाईं) मे बांधिये। इससे कुछ देर तक जलन होती है मगर बुखार जाता रहता है। बुखार के आने से दो घन्टे पहिले बांधिये।

डाक्टर रामलाल राय, बड़ा बाजार, सागर, ने लिखा है कि

उन्होने लेखक की ऊपर लिखी हुई खाने की दवा से २०० बुखार के रोगी ठीक किये।

अगर बुखार हल्का हो और ऊपर लिखी दवाओ से न जाय तो ब्राइओनिया ६ दीजिये।

८५—फाइलेरिया (Filaria): इस रोग मे शुरू मे बुखार होता है और जाड़ा लगता है और फिर शरीर का हिस्सा सूज जाता है और वह सूजन अक्सर कायम रहती है। यह अक्सर हाथ, पैर व फोतो मे होती है। काली सल्फ ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये। यह बहुत ही अच्छी साबित हुई है। जब यह रोग पैर मे होता है तो उस फीलपाँव (हाथी का-सा पैर) (Elephantiasis) कहते है।

८६--फिसचुला (Fistula): एक तरह का नासूर फोड़ा होता है, जिसमे से पीव थोड़ा निकलता है फिर बन्द हो जाता है और फिर निकलने लगता है। यह अक्सर पाखाने के मुकाम पर होता है। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली फास ३x, नैट्रम सल्फ मिलाकर दीजिये। वरना काली म्योर ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x मिला कर दीजिये।

८७--पेट में उफार (अधिक हवा का होना) (Flatulence):- कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x व नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दीजिये।

८८—गालस्टोन (पथरी का पड़ना) (Gallstone) : कलकेरिया फास ३x या १२x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x मिला कर दीजिये। यह बहुत मुफीद है। **आइन्दा पथरी बनने न पाये** : कलकेरिया फास ३x या १२x, १५ या २० दिन तक, दिन में दो बार दीजिये फिर ५ दिन को रोक दीजिये और फिर १०-१५ दिन तक दीजिये।

८९—गैस्ट्रिक अल्सर (Gastric ulcer) : इसमे पेट मे दर्द होता है, कै होती है और पाखाने मे कभी-कभी पीव आती है। यह लाइलाज बीमारी समझी जाती है। इसमे आंतो मे जख्म हो जाते हैं जो अक्सर अधिक मिर्च व मसाले खाने या चिन्ता यानी फिकिर करने से होते है। कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली फास ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

९०—गिल्टियों (Glands) का बढ़ जाना : कलकेरिया फ्लोर ३x, काली म्योर ३x, नैट्रम फास ३x मिला कर दीजिये।

९१— चक्कर आना (Giddiness or vertigo) : फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, यह बहुत फायदेमन्द है।

९२— सूजाक (Gonorrhoea) : यह रंडियो इत्यादि बुरी औरतो के साथ सुहबत करने से होता है। इनमे पेशाब के मुकाम मे

जख्म हो जाता है और गाढ़ा मवाद निकलता है। पहिले साइलीशिया २०० की एक-एक गोली तीन-तीन दिन बाद तीन या चार खुराकें दीजिये। फायदा न हो तो कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिला कर तीन-तीन घन्टे बाद दीजिये। अगर दो या तीन दिन में आराम न मिले तो कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया सल्फ ३x मिलाकर तीन-तीन घन्टे बाद दीजिये।

९३—गठिया (एक जगह कायम रहने वाली गठिया) (Gout): कुछ लोगों के खून में यूरिक एसिड पैदा होकर गाँठों में दानों की शक्ल में जमा हो जाता है जिसकी वजह से गाठों में बहुत दर्द होता है। यह रोग ज्यादा उम्र के लोगों को होता है जो चिकने-चुपड़े खाने खूब खाते हैं और बैठे रहते हैं, कसरत नहीं करते हैं। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिला कर ४-४ घन्टे बाद २४ घन्टे तक दीजिये अगर यह फेल हो तो कलकेरिया सल्फ ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x मिलाकर दीजिये।

९४—मसूड़ों का फोड़ा (Gum boil) : यह अक्सर मसूड़ों के अन्दर होता है। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगने-

शिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दो-दो घन्टे बाद दीजिये। अगर १२ या २४ घन्टे में लाभ न हो तो काली म्योर ३x, फैरम फास १२x, साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये।

९५—मसड़ों का सूजना (Gum swollen) : कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x व नैट्रम सल्फ ३x मिला कर दीजिये। यदि वह फेल हो तो फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

९६—बालों का गिरना (Falling of hair) : कलकेरिया फास ३x या १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x व साइलीशिया १२x, इसे पानी मे घोल कर ४-४ घन्टे बाद पिलाइये और इसी को वेसलीन या तेल मे मिलाकर लगाइये।

९७—खून का बहना (कहीं से) (Haemorrhage) : कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x मिला कर थोड़ी-थोड़ी देर बाद दीजिये। बहुत जल्द खून रुक जायगा। ९० या ९५ फीसदी कामयाबी होगी। यदि न रुके तो अगर खून का रंग लाल हो तो होमियोपैथिक इपीकाक ६ दीजिये। अगर रंग काला हो तो होमियोपैथिक हैमामेलिस ६ (Hamamelis 6) की एक-एक गोली ४-४ घन्टे बाद दीजिये।

९८—सिर का दर्द (headache) : कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलोशिया १२x मिला कर दीजिये। ९० या ९५ फीसदी केस ठीक हो जायेंगे। अगर कामयाबी न हो तो कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली सल्फ ३x मिला कर दीजिये वरना होमियोपैथिक दवायें, नक्सवामिका ६, बैलाडोना ६ व ग्लोनाइन ६। एक गोली नक्सवामिका ६ दिन में तीन बार दीजिये। एक या दो दिन में फायदा न हो तो बैलाडोना ६, फिर इस तरह ग्लोनाइड ६ दीजिये। यदि दर्द सिर्फ सिर के एक ही तरफ हो तो नैट्रम म्योर ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये। इसे आधा शीशी का दर्द कहते हैं।

९९—लू लगना (Sun stroke) : तेज बुखार हो जाता है, कुल जिस्म में जलन होती है। नैट्रम म्योर ३x बहुत मुफ़ाद है। काली फास ३x व नैट्रम सल्फ ३x के साथ नैट्रम म्योर ३x थोड़ी-थोड़ी देर के बाद दीजिये।

१००—गर्मी का असर होना (Heat stroke) : लू की जैसी हालत होती है। वही इलाज है।

१०१—दिल के रोग (Hypertrophy of the heart) (दिल का बढ़ जाना) : दिल के रोग तो डाक्टर आला से देखकर बता सकते हैं। चलने में सांस फूलती है और कभी-कभी दिल में दर्द होता है। रोगी को चाहिये कि गुस्सा न करे, तेज न चले, ज्यादा दूर

न चले, ऐसा काम न करे कि दिल पर मेहनत या जोर पड़े। कोई काम जल्दी से न करे। परेशानी को दूर करे। बहुत से रोगी अधिक गुस्सा करने से मर जाते हैं। कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x व नैट्रम म्योर ३x मिलाकर दीजिए। घी, मक्खन न खाना चाहिए।

१०२ दिल के रोग (Dilatation of the heart (दिल का फूल जाना) : कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x मिलाकर दीजिये। नम्बर १०१ मे जो हिदायत लिखी है उसे देखिये।

१०३—दिल की बीमारी (Endocarditis) (एन्डोकारडाइटिस) : फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, नैट्रम म्योर ३x मिलाकर दीजिये। बहुत देने पर भी इससे लाभ न हो तो कलकेरिया फास ३x या १२x व कलकेरिया सल्फ ३x मिलाकर दीजिये।

१०४—दिल का धड़कना (Palpitation of heart) : तन्दुरुस्ती मे किसी को नही मालूम होता है कि दिल चल रहा है। अगर दिल का चलना मालूम होने लगे तो दिल का धड़कना कहते हैं। कभी-कभी खून की कमी की वजह से या हिस्टीरिया के रोग की वजह से या, माहवारी न होने के कारण और कभी-कभी दिल के रोग की वजह से यह तकलीफ मालूम होती है। इसलिए किसी होशियार डाक्टर को दिखा लेना चाहिये। काली फास ३x अकेले दीजिये। यदि इससे लाभ न हो तो कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली

सल्फ ३x, मैंगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये।

१०५—दिल का रोग अगर पुराना हो तो (Chronic heart disease) : साइलीशिया १२x के ऊपर नुस्खों मे मिला कर दीजिये।

१०६—दिल का एकाएक रुक जाना (Heart failure) इसके लिए हर एक को अपनी जेब मे छोटी-सी पुड़िया में कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x व नैट्रम म्योर ३x मिला कर रखना चाहिये। ऐसा जब मालूम पड़े कि दिल बैठ रहा है या तबियत घबड़ाती है या पसीना आता है तो फौरन इन दवाओ को ले लीजिये बिना पानी मे घोले हुये ही। इसमे इतना टाइम नहीं मिलता कि डाक्टर बुलाया जा सके। यह दवा बहुत अच्छी है। कई बार कामयाब हुई है। हाईकोर्ट में १७ साल हुये श्री रामचन्द्र गुप्त, एम० पी०, एडवोकेट, आगरा के सामने उनके मित्र का हार्ट फेल हो रहा था। उनके लिए एम्बूलेन्स कार मंगाने के लिए टेलीफोन गया था। मुझे खबर मिली। मेरे जेब मे दवा थी। मैंने दी एक ही मिनट से ठीक हो गये और एम्बूलेन्स कार को टेलीफोन से मना कर दिया।

१०७—हरनिया (Hernia) (आँतों का उतरना) : कभी-कभी आंत फोते की थैली मे या और किसी जगह की झिल्ली फाड़ कर उतर आती है। उतरने पर आंत को चढ़ाना पड़ता है कभी-कभी फंस जाती है ऊपर नही चढ़ती तो जान तक का खतरा हो जाता है। इसके

लिये ट्रस बनवा कर पहिनते हैं। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, नैट्रम म्योर ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिए।

१०८—हरपीज जोस्टर (Herpes Zoster) : इसमें शरीर के या तो दाहिनी तरफ़ या बाएं तरफ छाले या दाने पड़ जाते हैं जिनमें बहुत तकलीफ होती है। अगर दोनो तरफ हो तो समझिये कि यह रोग नहीं है। कलकेरिया फ़ास ३x या १२x, काली म्योर ३x, नैट्रम म्योर ३x, फ़ेरम फास ३x, नैट्रम फ़ास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, काली फास ३x, काली सल्फ़ ३x, साइलीशिया १२x, मिला कर दीजिये वरना कलकेरिया सल्फ ३x, कलकेरिया फ्लोर ३x, मैगनेशिया फ़ास ३x मिला कर दीजिये।

१०९—हिचकी (Hiccough or Singultus) : ज्यादा हिचकी आने से तकलीफ होती है इसके लिए एक कपड़े की बत्ती बना कर नाक में डालिये और छींकें पैदा कीजिए। छींकों से यह तकलीफ अक्सर दूर हो जाती है। अगर उससे ठीक न हो तो मैगनेशिया फास ३x खूब गरम पानी मे घोल कर थोड़ी-थोड़ी देर बाद दीजिये। लाभ न हो तो कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फ़ास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिए। वरना कलकेरिया सल्फ ३x दीजिए।

लाभ न हो तो नक्स वोमिका ३ एक-एक गोली तीन-तीन घन्टे बाद दीजिए।

११०—हाई ब्लड प्रेशर (High blood pressure) : यह रोग मशीन से नापा जाता है। इसमें चक्कर आता है, सिर भारी रहता है, तबियत परेशान रहती है, बहुत ज्यादा बढ़ जाने से जान का खतरा है।

कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्यार ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिए। यदि फायदा न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x दीजिए। यह दवा अक्सर जादू का-सा काम करती है, कभी-कभी मिनटों में या सेकेन्डों में फायदा करती है।

१११—हाइड्रोसील (Hydrocele) फोते की थैली में पानी का आ जाना : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, साइलीशिया १२x मिला कर दीजिए। यदि १० या १५ दिन में फायदा न हो तो नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x व नैट्रम सल्फ ३x मिला कर दीजिए।

११२—हाइड्रोफोबिया (Hydrophobia) इस शब्द के माने हैं पानी से डरने का रोग : यह पागल कुत्ते या पागल सियार के काटने से होता है। इसमें रोगी पानी से बहुत डरता है। इसमें इन्जेक्शन

लगाये जाते हैं, जो अच्छे साबित हुये हैं। अगर इन्जेक्शन न लग सके या लाभ न करे तो कालो फास ३x व मैगनेशिया फास ३x मिला कर जल्दी-जल्दी पाउडर दीजिये।

हाइड्रोफोबाइनम १००० की एक गोली बहुत ही फायदेमन्द है। तुलसी की पत्ती बहुत फायदा करती है, खूब खिलाइये।

११३— हिस्टीरिया (Hysteria): यह रोग ज्यादातर औरतों को होता है। रोगी बराबर हंसता रहता है या रोता रहता है या बेहोश हो जाता है और मालूम होता है कि गले मे गोला अटका है। होमियोपैथिक इग्नेशिया ३० बहुत लाभदायक साबित हुई है। १ गोली तीन बार दिन-रात मे दीजिये। इससे ९० फीसदी केस अच्छे हो जाते हैं। अगर यह केस फेल करे तो कालो फास ३x पानी मे घोल कर दीजिये फिट रात मे हो या ऐंठन हो तो मैगनेशिया फास ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये। इससे हमारे भारतवर्ष के प्रेसीडेन्ट डाक्टर राजेन्द्र प्रशाद जी के नाती की बहू के हिस्टीरिया फिट जो पांच महीने से रोज होते थे एक ही खुराक से फौरन बन्द हो गये। देहली, इलाहाबाद व बनारस का अच्छा इलाज भी फेल हो चुका था।

११४—कमी समझ (Idiocy): कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, कालो फास ३x, मैगनेशिया फास ३x मिलाकर तीन-चार बार रोज दीजिए। इसको एक या दो मास तक दीजिये फिर अगर जरूरत हो तो इन दवाओं की शक्ति बढ़ा दीजिये। बीच-बीच मे कलकेरिया फास निकाल दिया कीजिये।

११५—नामरदी (Impotency) : कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, काली सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिला कर चार-पांच बार रोज दें। यदि यह १० या १५ दिन देने पर भी फेल करे तो होमियोपैथिक सल्फर २०० की एक गोली दीजिये दूसरे रोज एक गोली कलकेरिया कार्ब २०० की दीजिये, तीसरे रोज लाइकोपोडियम २०० की एक गोली दीजिये और १५-१५ दिन बाद लाइकोपोडियम २०० की एक गोली दीजिये। अगर लाभ न करे, अगर लाभ होना रुक जावे तो लाइकोपोडियम १००० की एक-एक गोली एक-एक महीने बाद दीजिये। यदि हस्थ-मैथुन करने से यह रोग हुआ है तो एक-एक गोली बरायटा फास २०० की हर हफ्ते दीजिये।

११६—बच्चों के जिगर की बीमारी (Infantile liver complaints) : यह बड़ा कठिन रोग है। जिगर बढ़ जाता है। पाखाने का रंग सफेद हो जाता है। छोटे बच्चों को घी या मक्खन की चीज देने से यह रोग होता है। इसलिये छोटे बच्चो को चिकनी-चुपड़ी चीजें न दीजिये। एक गोली आर्सिनिक एल्बम ६ की सवेरे ६ या ७ बजे व एक गोली ४ बजे शाम को एक हफ्ते तक रोज दीजिये और साथ ही साथ कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x को पानी में मिला कर एक-एक चम्मच दिन में दो या तीन बार दीजिये। चौधरी देवी शंकर, एडवोकेट की लड़की को १०४° बुखार था और जिगर

बहुत बढ़ा था मैंने आर्सेनिक ६ व इन दवाओं को दिया। दूसरे दिन १०२ बुखार रहा, तीसरे दिन से ९९ रहता है और बच्ची बहुत ठीक है। इसके बाद इसी दवा की ३० शक्ति सुबह व शाम को दीजिये, फिर २०० शक्ति की एक गोली हर हफ्ते सवेरे ६ या ७ बजे दीजिये। आराम हो तो दवा जारी रखिये, वरना कलकेरिया आर्स ३० रोज सुबह ६ या ७ बजे व चार बजे शाम को एक हफ्ते दीजिये। इसके बाद इसी दवा की २०० शक्ति की एक गोली हर हफ्ते तीन बजे शाम को, इस तरह तीन या चार हफ्ते दीजिये। अगर इस दवा से फायदा हो तो जारी रखिये वरना कलकेरिया फ्लोर १२x, कलकेरिया फास १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर १२x, काली फास १२x, काली सल्फ १२x, नैट्रम म्योर १२x, नैट्रम फास १२x, नैट्रम सल्फ १२x, साइलीशिया १२x, मिलाकर चार-चार घन्टे बाद दीजिये। लाभ न हो तो हर एक की ३०x शक्ति दीजिये आठ-आठ घन्टे बाद। फिर हर एक की २००x मिला कर रोज एक खुराक दीजिये। बाद में कलकेरिया सल्फ १२x व मैगनेशिया फास १२x।

११७—बदहजमी (Indigestion): कलकेरिया सल्फ ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x मिलाकर दिन में चार बार दीजिये। यदि एक रोज में फायदा न हो तो कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x, मिला कर दीजिये।

११८—इनफ्लुएंजा (Influenza): जुकाम व हरारत होती है

अगर नब्ज मे तेजी नहीं होती है। जिस्म मे दर्द होता है। इसमे रोगी बहुत कमजोर हो जाता है। कभी-कभी तेज बुखार हो जाता है। इसमे आराम की बहुत जरूरत है क्योंकि दिल पर ज्यादा जोर पड़ने से हार्ट फेल होने का डर होता है। फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, नैट्रम म्योर ३x व नैट्रम सल्फ ३x, मिलाकर दो-दो घन्टे बाद दीजिये। यह जादू का-सा काम करती है। कभी फेल नहीं होती।

११६—बच्चों के पैर का लकवा (Infantile paralysis pyomylitis) : होमियोपैथिक-कास्टिकम २०० की एक गोली हर हफ्ते दो महीने तक दीजिये। लाभ हो तो दवा जारी रखिये वरना काली फास ३०x रोज दो खुराक दो हफ्ते तक दीजिये उसके बाद काली फास २००x हफ्ते में दो बार एक महीने तक दीजिये। अगर इससे फायदा न हो तो काली सल्फ ३०x व मैगनेशिया फास ३०x मिला कर रोज दो बार दीजिये।

१२०—चोटें [सब तरह की] (Injuries mechanical) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फॉस ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम फास ३x मिला कर दो दो घन्टे बाद दीजिये वरना होमियोपैथिक आर्निका ३० की एक गोली चार-चार घन्टे बाद दीजिये।

१२१—चोटें [अगर लापरवाही से बिगड़ गई हों] (Injuries if neglected) : कलकेरिया सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर चार-चार घन्टे बाद दीजिये।

१२२--चोटें [सिर की चोट] (Injuries to the head) : इससे दिमाग पर असर पहुँचता है। इसके लिए नैट्रम सल्फ ३x अकेली या कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली फ़ास ३x, मैंगनेशिया फास ३x व नैट्रम सल्फ ३x मिला कर दीजिये।

१२३--चोटें [हड्डी की] (Injuries to the bones) Fractures) : हड्डी टूट गई हो या हड्डी मे चोट हो तो कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x मिलाकर दीजिये।

१२४--चोटें [अगर खून निकल रहा हो] (Injuries bleeding) : फैरम फ़ास १२x फौरन चोट मे भर दीजिये खून को रोक देगा, या चूना जो पानी मे भीग रहा हो उसको निकाल कर उसका पानी टपका कर चोट की जगह लगा दीजिये और पट्टी बांध दीजिये। खून बन्द हो जाएगा। पट्टी बंधी रहने दीजिये जब तक जख्म भर न जाय। अगर चोट धारदार चीज से आई है तो होमियोपैथिक स्टाफिसाग्रिया ३० (Staphysagria 30) की एक-एक गोली ४-४ घन्टे बाद दीजिए। अगर कील इत्यादि नोकीली चीज से आई है तो होमियोपैथिक लीडम पाल ३० (Ledum Pal 30) की एक-एक गोली चार-चार घन्टे बाद दीजिये।

चोटों पर मिट्टी नहीं लगानी चाहिये। यह बहुत खतरनाक होता है।

१२५--पागलपन (Insanity—madness) : काली फास

३०x अकेली। यह लगभग सब रोगियों को ठीक कर देगी। काली फास ३०x, दो-चार रोज तक दिन मे तीन बार दीजिये। इससे फायदा हो तो दवा जारी रखिए वर्ना काली फास २००x रोज दीजिये। यह अक्सर जादू का-सा काम करती है। हरदोई के डाक्टर चतुर्वेदी इसी के कारण मशहूर हो गये हैं। अगर यह दवा शुरू से सब रोगियों को दी जाय तो इस रोग के सब अस्पताल खाली हो जायेंगे।

१२६—कीड़े-मकोड़ों का काटना—बरैं, कांतर इत्यादि (Insect bites) : नैट्रम म्योर ३x पानी मे घोल कर दीजिये व एक या दो बूंद पानी काटने की जगह पर डालिये और नैट्रम म्योर ३x वहाँ मल दीजिये। पानी न मिला सकें तो वैसे ही मल दीजिये। दर्द फौरन बन्द हो जाता है। (बिच्छू के काटने व सांप के काटने के लिए अलग देखिये) लगभग ग्यारह साल हुये लेखक के सामने चौधरी लक्ष्मी शंकर, स्पेशल मजिस्ट्रेट, इटावा को कांतर (centipedes) ने, जिसको कहीं-कहीं गोजर भी कहते हैं, तीन डंक मारे, फौरन जलन पैदा हो गई, लेखक ने एक बूंद पानी डाल कर नैट्रम म्योर ३x फौरन मल दी, जलन बन्द हो गई। दवा जादू का-सा काम करती है।

१२७—खुजली-खाज-खारिश (Itches—scabies) : काली म्योर ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिला कर पिलाइये। बहुत अच्छी दवा है। वरना कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, फैरम फास १२x, काली फास ३x व काली सल्फ ३x मिला कर दीजिये।

१२८—खाज (दाढ़ी की जगह की) (Barber's itch) : मैगनेशिया फास ३x अकेले या काली म्योर ३x, काली फास ३x व नैट्रम फास ३x मिलाकर दीजिए। अगर यह भी फेल हो तो कलकेरिया सल्फ ३x दीजिए। अगर पेशाव की जगह खुजली हो तो कलकेरिया सल्फ ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिला कर दीजिए वरना आर्सिनिक एल्वम ६ की एक-एक गोली सुबह ७ बजे व शाम के ३ बजे रोज दीजिये।

१२९—कमल रोग—पीलिया (Jaundice) : इसमें आँखें व शरीर पीला हो जाता है, पेशाव भी पीली होती है। पाखाना सफेद होता है। ज्यादा बढ़ने से खुजली भी होने लगती है। फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दीजिए। यह बहुत कामयाब साबित हुई है। यह कठिन रोग समझा जाता है लेकिन इस दवा से बहुत फायदा होता है। श्री कमला कान्त वर्मा, एक्स जोफ जस्टिस हाई कोर्ट को यह रोग बड़े जोर से हुआ था। उनके फैमली डाक्टर साहब ने जाँच कर कहा कि रोग अगर अच्छा हुआ तो ६ महीने लगेंगे। लेखक की ऊपर लिखी दवा से दो हफ्ते मे ठीक हो गए! जादू का-सा काम करती है।

१३०—गर्भ के दौरान में [गर्भवती स्त्री की तन्दुरुस्ती ठीक रखने के लिए] (Pregnancy-to keep good health during) : काली फास ३x देना चाहिये। इससे बहुत-सी तकलीफें दूर

हो जाती हैं। अगर जी मचलाता हो तो इपीकाक ६ दीजिये। यदि साथ ही साथ कुल मियाद तक फल खूब खाये जायं तो बच्चा पैदा होने का दर्द बहुत कम होगा। दर्द शुरू होने पर कलकेरिया फ्लोर १५-१५ मिनट बाद दीजिये।

नोट—यदि आधी रात के बाद गर्भ कायम होता है तो लड़का पैदा होता है वरना लड़की पैदा होती है।

१३१—लैरिंजाइटिस (Laryngitis) : सांस लेने की नली के ऊपरी हिस्से मे सूजन का होना। इसमे बुखार, गले मे दर्द, खांसी व आवाज मे भारीपन होता है। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, कलकेरिया फास ३x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x मिला कर दीजिये। वरना होमियोपैथिक बैलाडोना ६ की एक गोली चार-चार घन्टे बाद दीजिये।

१३२—कोढ़ (Leprosy) : यह बीमारी लाइलाज समझी जाती है। यह छूत की बीमारी है। यह तीन तरह की होती है।

(१) तांबे के रङ्ग के दाग शरीर से हो जाते हैं, फिर सफेद हो जाते हैं और रोगी को उस जगह नोचने से कुछ दर्द नही होता है।

(२) धीरे-धीरे चमड़ी पर ठोस चीज पैदा होकर बढ़ती है जिसकी अजीब शक्ल होती है फिर वह जख्म बन जाते हैं। और उंगली गल कर गिर जाती है।

(३) दोनों प्रकार के कोढ़ का मिला हुआ रूप जिसमे कान की लौ या माथे पर चमड़ी सख्त हो जाती है।

पहले काली म्योर २०० की एक गोली रोजाना। तीन-चार दिन के बाद साइलीशिया २०० की एक गोली और ३-४ दिन के बाद काली म्योर २०० इसी तरह एक-दो महीने तक दीजिये। अगर फायदा न हो तो कलकेरिया फास ३०x, कलकेरिया सल्फ ३०x, काली फास ३०x, नैट्रम म्योर ३०x, नैट्रम फास ३०x मिला कर रोज दो मरतवा दीजिये। बाद मे इन्हीं दवाओ की २००x शक्ति मिला कर एक दिन छोड़कर दीजिए।

११३—कोढ़ [सफेद] (Leucoderma): इसमें शरीर में सफेद दाग हो जाते हैं। यह दर असल कोढ़ नही है यद्यपि इसको सफेद कोढ़ कहते हैं। कलकेरिया फास १२x व नैट्रम म्योर १२x मिला कर तीन बार रोज पिलाइये और इसी को वेसलीन या तेल मे मिला कर तीन-चार वार रोज लगाइये। यह छूत की बीमारी नहीं है।

१३४—लीकेमिया (खून का कैंसर): नैट्रम सल्फ ३x दिन में ४ वार पीजिये।

१३५—श्वेत प्रदर—लिकोरिया (Leucorrhoea): (औरतों के पेशाव के मुकाम से पानी जाना): होमियोपैथिक एलुमिना २०० की एक गोली हर हफ्ते, तीन हफ्ते तक दीजिये। यह बहुत अच्छी है। यदि यह फेल हो तो कलकेरिया फास १२x, काली म्योर १२x, काली फास १२x, काली सल्फ १२x, नैट्रम म्योर १२x, नैट्रम फास १२x,

नैट्रम सल्फ १२x, साइलीशिया १२x, मिलाकर रोज दो बार एक या दो हफ्ते तक दीजिये। वरना कलकेरिया फ्लोर १२x, कलकेरिया सल्फ १२x, फैरम फास १२x, मैगनेशिया फास १२x मिलाकर उसी तरह दीजिये।

१३६—जिगर सुस्त (Liver sluggish) : काली म्योर ३x व नैट्रम सल्फ ३x मिला कर रोज दो-तीन बार दीजिये। जरूरत हो तो इनकी शक्ति ६x व बाद मे १२x कर दीजिये।

१३७—ब्लड प्रेशर कम होना (Low blood pressure) : कमजोरी बहुत मालूम होती है। कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x मिला कर दीजिये। बहुत फायदेमन्द है।

१३८—धनुष टंकार (Lock jaw—tetanus) : सख्त रोग है। यह जख्म कि गन्दगी से हो जाता है इसलिये कभी जख्म मे मिट्टी नहीं भरना चाहिये जैसा अक्सर लोग करते है। पहिले गरदन सख्त हो जाती है और फिर जबड़े भिच जाते हैं, खुलते नहीं, शरीर मे खिचाव होता है, शरीर धनुष की तरह टेढ़ा हो जाता है और चेहरा टेढ़ा हो जाता है। कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x को खूब गरम पानी में घोल कर जब तक आराम न मिले बहुत जल्दी-जल्दी पिलाइये। फिर खुराकें कम कर दी जावें। २ गोली सिक्युटा विरोसा १००० को भी शुरू मे दीजिये तो अच्छा है।

१३६—सूखा रोग-मिठुआ (Marasmus) : यह बच्चों का एक तरह का तपेदिक यानी टी० बी० है। बच्चे घुलते जाते हैं। कलकेरिया फास ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये। बहुत लाभदायक है।

१४०—हफजा (Weak Memory) (स्मरण शक्ति कम-जोर) : कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये वरना होमियोपैथिक काली ब्रोम ३० की एक गोली दिन में दो-तीन बार दें। लाभ न हो तो होमियोपैथिक बराइटा फास ३० की एक गोली दो-तीन बार रोज दें।

१४१—मैनिन्जाइटिस (Meningitis) (दिमाग के अन्दर की झिल्ली की सूजन) : तेज बुखार, तेज नब्ज, तेज सिर का दर्द, बेहोशी कठिन रोग है। कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर थोड़ी-थोड़ी देर बाद दीजिये। डाक्टर ए० के० वर्मा, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद निवासी की धर्म-पत्नी को इस रोग का सख्त आक्रमण हुआ था एक मिनट मे ४०-५० बार गरदन जोर-जोर से हिलाती थीं। इस दवा ने १५ मिनट मे अच्छा कर दिया! सब डाक्टरों को आश्चर्य हुआ।

१४२—माहवारी का कम होना या बिल्कुल रुक जाना (Mensesscanty or suppressed) : कलकेरिया फास ३x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x, मिला कर तीन बार रोज एक हफ्ते तक दीजिये। यदि फायदा न हो तो होमियोपैथिक पल्सेटिला ६ एक गोली तीन बार रोज दीजिये। इससे फायदा न हो तो इसी की ३० नम्बर की एक गोली दो बार रोज दीजिये।

१४३—माहवारी (अधिक) (Menses excessive) : कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x मिलाकर दीजिये। यह बहुत फायदेमन्द है। अक्सर जादू का-सा काम करती है।

१४४—शरारत करना (Mischievouness) : नैट्रम म्योर २०० की एक गोली हर हफ्ते शाम ६ बजे के करीब दीजिये।

१४५—गलसूओं का सूजना (Mumps) : यह छूत की बीमारी है। हल्का बुखार शुरू में होता है फिर कान के नीचे जबड़े के पीछे की गिल्टी सूज जाती है तकलीफ होती है। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर तीन-तीन घन्टे बाद दीजिये बहुत फायदेमन्द है। लाभ न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x व काली सल्फ ३x मिलाकर दीजिये।

१४६– नैफराइटिस (Nephritis) :(गुर्दे की सूजन) : इसमे कमर में दर्द होता है। मर्दों मे अक्सर फोता ऊपर खिच आता है। पेशाब कम होती है और तकलीफ के साथ होती है। पेशाब मे अक्सर एलबूमन और कभी-कभी खून भी होता है जिसकी वजह से पेशाब का रंग काला होता है। बुखार कभी-कभी होता है। कब्ज भी अक्सर होती है। यह कठिन रोग है। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x, मिलाकर तीन-तीन घन्टे बाद दें। फायदा न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x। यहा इनकम टैक्स के अपीलेट ट्रिब्युनल के जज श्री एन० डी० कारखानिस के बच्चे को ६ साल हुए यह रोग हो गया था। बड़े-बड़े डाक्टरो ने जिनका इलाज था, कह दिया था कि बच्चा ४ दिन से ज्यादा जिन्दा नही रह सकता है। मालिक की दया से लेखक की दवा से बच्चा जल्द ठीक हो गया।

१४७—दर्द (Neuralgia) (रग मे दर्द) : फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, मिला कर खूब गर्म पानी मे बार-बार दीजिये। इससे ९०-९५ फीसदी केस बहुत जल्द ठीक हो जाते हैं। अगर फायदा न हो तो कलकेरिया फ्लोर १२x, कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये। होमियोपैथिक कैमोमिला ६ या एकोनाइट ६ या रसटाक्स ६ या ब्राईओनिया ६ दिन में ४ बार भी लाभदायक है।

१४८—न्यूरेस्थैनिया (Neurasthania nervous break down) : इसमें घबड़ाहट व परेशानी बहुत होती है। कलकेरिया फास १२x, फैरम फास १२x, काली फास १२x, मैगनेशिया फास १२x, नैट्रम म्योर १२x, नैट्रम फास १२x, साइलीशिया १२x, मिला कर दिन में तीन बार दे।

१४९—न्यूराईटिस (Neuritis) (रग की सूजन) : बहुत दर्द होता है। कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ६x, मैंगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ६x, नैट्रम फास ६x, साइलीशिया १२x मिलाकर खूब गरम पानी के साथ दीजिये।

१५०—मोटापन (Obesity) : कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, साइलीशिया १२x मिला कर कई दिन तक। दो हफ्ते बाद कलकेरिया फास ३x या १२x को निकाल कर बाकी दवाएं दीजिये। फिर थोड़े दिन बाद उसे मिला दीजिये। काली म्योर ६x भी बहुत लाभदायक है रोज ३ बार।

१५१—नाक का बन्द हो जाना (Nose stuffed up) : कलकेरिया फ्लोर ३x, काली म्योर ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम सल्फ ३x इससे लाभ न हो तो होमियोपैथिक नक्सवामिका ६ रात को सोते वक्त दीजिये या दोपहर को ३ बजे।

१५२—सूजन (Swelling—odoema) : बीमारी में सूजन हाथ, पैर, मुँह इत्यादि पर आ जाती है। कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x, नैट्रम फास ३x व साइ-लीशिया १२x मिला कर तीन-तीन घन्टे के बाद दीजिये।

१५३—अफीम खाने की आदत (Opium habit) : काली फास ३x व नैट्रम फास ३x मिलाकर दीजिये दिन मे ४ बार।

१५४—फोते की सूजन (Orchitis) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम फास ३x, मैगनेशिया फास ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

१५५—दर्द कहीं होता हो (pain) : मैगनेशिया फास ३x खूब गरम पानी में मिलाकर देने से करीब-करीब हर प्रकार के दर्द दूर हो जाते हैं। यदि लाभ न हो तो कलकेरिया फास ३x या १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये। इससे भी लाभ न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली सल्फ ३x मिलाकर दीजिये। यदि यह सब फेल हो जायें तो होमियोपैथिक रसटाक्स ६ व ब्राइओनिया ६ दीजिये। पहिली दवा की एक गोली दीजिये फिर दो घन्टे बाद दूसरी दवा की एक गोली फिर दो घन्टे वाद पहिली दवा की एक गोली। इसी तरह एक के बाद एक दीजिये।

१५६— लकवा या फालिज (Paralysis) (शरीर के आधे हिस्से व किसी अंग मे हिलाने की ताकत न रहना) : होमियोपैथिक कास्टिकम २०० को एक गोली दो-दो हफ्ते बाद, ५ या ६ हफ्ते तक दीजिये। बाद मे काली फास ३०x दिन मे तीन बार दीजिये। इसी दवा को वेस्लोन या तेल मे मिला कर मालिश भी कई दिन तक कीजिये। फायदा हो तो दवा जारी रखिये वरना काली फास २००x, रोज एक खुराक दीजिये। वरना कलकेरिया फास १२x, कलकेरिया सल्फ १२x, काली फास ३०x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३०x, नैट्रम फास ३०x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

१५७—फैरिंजाइटिस (Pharyngitis) (गले के ऊपरी हिस्से मे सुजन) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये। फायदा न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x दीजिये।

१५८—फिमोसिस (Phimosis) : लड़को के पेशाब के मुकाम का ऊपरी हिस्सा हटाने से न हटता हो तो नैट्रम म्योर ३x पानी मे मिलाकर दीजिये।

१५९—फोटोफोबिया (रोशनी का डर) : कलकेरिया फास ३x या १२x, नैट्रम म्योर ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

१६०—बवासीर खूनी व बादी (Piles bleeding or blind) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x,

फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x; नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x, घोल कर ३-३ घन्टे बाद दीजिये। यदि फायदा न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x घोलकर दीजिये। अगर खून ज्यादा आता हो तो खून रोकने की दवा व बवासीर की दवा अलग-अलग बना कर एक चम्मच इसका और एक चम्मच उसका इसी प्रकार एक-एक घन्टे बाद दीजिए, खून बहुत जल्द बन्द हो जायगा। मस्सों के लिए एलोज ६ की एक गोली तीन बार रोज दीजिए।

१६१—बलगम का अधिक बनना (Phlegm-excessive) काली सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिए।

१६२—प्लेग-ताऊन (Plague) : बुखार व गिल्टियों में सूजन होती है। कभी-कभी बेहोशी होती है। कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिए। लाभ न हो तो कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x मिलाकर दीजिए।

१६३—प्लूरिसी (Pleurisy) : फेफड़े की झिल्ली में सूजन। सीने में हल्का-हल्का दर्द होता है। कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, नैट्रम म्योर ३x मिलाकर दीजिए, बहुत लाभदायक है। लाभ न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x दीजिए।

कई केस ठीक हुए हैं। ब्राईओनिया ३० की भी एक गोली रोज २ बार दीजिए।

१६४—पोलीपस (Polypus) (नाक के अन्दर गोश्त बढ़ जाता है जिससे सांस लेने मे तकलीफ होती है)। कलकेरिया फास ३x या १२x, नैट्रम म्योर ३x मिलाकर दीजिए। दो-तीन दिन मे लाभ न हो तो उसमे साइलीशिया मिलाकर दीजिए।

१६५—पाट्स डिजीज (Pott's disease): बहुत कम होती है। कलकेरिया फास ३x या १२x, व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिए।

१६६—प्रास्टेट ग्लैन्ड के बढ़ने की दवा (Prostate gland-enlargement of): इसके बढ़ने से पेशाब रुक-रुक कर होती है और थोड़ी होती है। इसमे आपरेशन करते हैं। कलकेरिया फ्लोर ३x, काली म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x, नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर रोज ३ बार और सूजन वाली दवा दिन में ३ बार दीजिए, गरम पानी के साथ।

१६७—बुखार जच्चेखाने का बुखार (Puerperal fever) फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x मिलाकर दीजिए। अगर फिट भी आता हो तो उसी मे मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x और मिला दीजिए। इससे फायदा न हो तो कलकेरिया फ्लोर

३x, कलकेरिया फास ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये ।

१६८--निमोनिया (Pneumonia) : यह सख्त रोग है, इसमे तेज बुखार होता है, सूखी खांसी होती है, बलगम थोड़ा निकलता है जो पहले सफेद होता है फिर खून मिला हुआ होता है खांसने से सीने से दर्द होता है। जो अच्छे होने वाले केस होते हैं उनमे पांचवें या सातवे दिन बुखार एक दम गिरता है और खूब पसीना होता है वरना चौथे या पांचवें दिन सांस लेने में ज्यादा तकलीफ होती है, नब्ज ज्यादा तेज हो जाती है, बुखार बढ़ जाता है और बेहोशी हो जाती है उसके बाद बचने को उम्मीद बहुत कम रहती है। कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x, नैट्रम फास ३x मिला कर दीजिये। यदि यह फेल हो जाये तो कलकेरिया सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये। ब्राइ-ओनिया ६ को एक गोली दिन मे तीन बार और फासफोरस ६ की एक गोली दिन में तीन बार। एक के बाद दूसरी फिर पहली फिर दूसरी इसी तरह दीजिये।

१६९—नब्ज चलते-चलते रुक जाय और फिर चलने लगे (Pulse missing) : काली म्योर ३x, काली फास ३x व नैट्रम म्योर ३x मिला कर दीजिये। बहुत अच्छी दवा है।

१७०--पायरिया (Pyorrhoea) : मसूढ़ों से खून व पीव निकलना : साइलीशिया ६x रोज चार बार दो हफ्ते तक दीजिये।

फिर कलकेरिया सल्फ ६x रोज चार बार दो हफ्ते तक दीजिये। फिर साइलीशिया २००x हफ्ते मे दो बार दीजिये। फिर कलकेरिया सल्फ २००x हफ्ते मे दो बार दीजिये।

१७१—पोलियो माइलाइटिस (Poliomylitis): देखिये बच्चों के पैर का लकवा नुस्खा नं० ११९। कास्टिकम २०० की एक गोली हर हफ्ते दीजिये।

१७२—गठिया—चलने-फिरने वाला (Rheumatism): यह ठन्ड लगने से या नमी की वजह से अक्सर होता है। इसमे शुरू में बुखार होता है, पेशाब कम होती है और पेशाव मे लाल चीज नीचे जमा होती है। दर्द बडे जोरो से शुरू होता है जोड सूज जाते हैं, हिल नहीं सकते, छूने से तकलीफ होती है।

कभी कुछ जोडो मे दर्द होता है। दूसरे दिन उनमे कुछ आराम होता है और दूसरे जोडो मे दर्द होने लगता है। पसीना बदबूदार होता है, मगर उससे कोई आराम नही होता।

कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x, मिलाकर दीजिये। इसके फेल होने पर कलकेरिया फ्लोर ३x और कलकेरिया सल्फ ३x मिलाकर दीजिये। इनसे भी लाभ न हो तो अगर शुरू मे उठने में दर्द होता है मगर थोड़ा चलने से दर्द कम हो जाता है

तो रसटाक्स ६ की एक गोली ३-३ घन्टे बाद दीजिये। अगर जितनी हरकत करें उतना ही दर्द बढता है तो ब्राइओनिया ६ दीजिए।

लहसुन के २ दाने छीलकर दोपहर व रात को खाने से पहिले खिलाइये---एक सेर कड़ुआ तेल मे पाव भर लहसुन पीसकर पकाइए। जब काला हो जाय तो लहसुन फेंक दीजिये और तेल को दो बार रोज मलिए।

१७३—रिकेट्स (Rickets) : बच्चो की बीमारी जिसमे हड्डियां मुलायम हो जाती हैं और मुड जाती हैं।

कलकेरिया फ्लोर 3x, कलकेरिया फास ३x, काली फास 3x, नेट्रम म्योर ३x, नेट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये।

१७४—दाद (Ringworm) : नैट्रम सल्फ २००x हर हफ्ते, तीन-चार हफ्ते तक दीजिये। यदि इससे ठीक न हो तो काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये व वेसलीन या तेल मे मिला कर लगाइये।

१७५---साइटिका (Sciatica) : बड़ी रग, जो कमर से जांघ तक होती हुई पैर तक जाती है उसमे दर्द होता है।

कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम

फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x गरम पानी मे मिलाकर दीजिये। बहुत मुफीद है।

१७६--कण्ठ माला (Scrofula) : गरदन की गिल्टियां बढ़ जाती हैं और पकती हैं। रोगी को तपेदिक होने का या ब्रोन्काइटिस होने का डर रहता है।

कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, मैंगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x, साइलीशिया १२x, मिलाकर दीजिये।

१७७--जहरीला खून का होना (Septicoemia or Septic condition of blood) : काली फास ३x दीजिये। लाभ न हो तो साइलीशिया १२x भी मिलाकर दीजिये।

१७८--समुद्र यात्रा या रेल वा मोटर के सफर में चक्कर व कै का आना (Sea sickness) : काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x मिला दीजिये बड़ी ही फायदेमन्द है।

१७९—बिच्छू का जहर उतारने की दवा (Scorpion sting) जहां तक बिच्छू का जहर चढ गया है या उसके करीब रोगी की चमड़ी पर अपनी उंगली से यह शक्ल कई बार



बनाइए कुछ दूर तक उतर आयेगा। फिर जहां तक उतरा है वहां इस शक्ल को बनाइये फिर और उतरेगा। इस तरह एक मिनट से कम मे

बिल्कुल उतर जायगा। अगर जानवरों को बिच्छू ने डंक मारा है तो वह भी इसी तरह अच्छे हो सकते हैं।

१८०—नींद का न आना (Sleeplessness) : फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, साइलोशिया १२x, मिलाकर दीजिये। फायदा न हो तो कलकेरिया फास ३x या १२x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, मिलाकर दीजिये या एक ग्राम मैगनेशिया फास ३x, दो औंस पानी मे घोलकर पांच-पांच मिनट बाद देने से आधे घन्टे के अन्दर नींद आ जायगी। नक्स वामिका ३० की गोली शाम को ६ बजे व एक गोली सोते समय भी लाभदायक है।

१८१—नींद का बहुत आना (Sleep-excessive) : नैट्रम म्योर ३x दीजिये।

१८२—चेचक (Small pox) : यह बीमारी उड़कर लगती है पहिले सर्दी व गर्मी होती है। नींद ज्यादा आती है। जी मचलाता है या कै होती है, सिर मे दर्द, गले में दर्द होता है। फिर तेज बुखार आता है। दो-तीन दिन के बाद चेहरे या माथे पर दाने निकलते हैं, फिर बुखार कम हो जाता है। जितनी ही देर मे दाने निकलें उतना ही कम खतरा है। तीसरे-चौथे दिन दाने कुल शरीर मे निकलते हैं पांचवे दिन दाने मे पानी भर जाता है और उसके बीच मे गड्ढा-सा होता है (जो चिकनपाक्स में नही होता) फिर तीन दिन तक दानो में पीब पड़ती है और एक खास तरह की बू आती है। करीब दस दिन

बाद दाने सूखने लगते हैं, पहिले चेहरे के, फिर हाथ-पैरों के और करीब १४ दिन ये दाने सूख जाते हैं, और २० से २३ दिन तक मे गिर जाते हैं और गड्ढे पड़ जाते हैं।

करीब ग्यारहवे दिन फिर बुखार तेज हो जाता है और यही वक्त सबसे ज्यादा खतरे का है। कभी-कभी बेहोशी भी हो जाती है। जहां तक हो सके रोगी को अलहदा रखना चाहिये। हो सके तो अलहदा मकान मे। कमरे में हवा खूब आनी चाहिये, लेकिन ज्यादा ठन्डी न हो और रोगी के शरीर मे सीधे झोके न लगें। फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x मिलाकर देने से बहुत लाभ होता है। यदि दाने दब जांय तो काली सल्फ ३x, मिलाकर दीजिये वरना न दे।

कमजोरी के लिए कलकेरिया फास ३x या १२x, नैट्रम म्योर ३x किलाकर दीजिये। चेचक को रोकने के लिए काली म्योर ३x व नैट्रम सल्फ ३x घोल कर रोज एक चम्मच दीजिए (as preventive)।

श्री मुहम्मद इद्रीस, वकील, आजमगढ लिखते हैं कि उन्होंने इस दवा को अपने गांव और आस-पास गावो के बहुत लोगो को दिया और सब अच्छे हो गये।

१८३--नासूर [साइनस] (Sinus): एक तरह का फोड़ा होता है जिसमें कभी-कभी पीब निकलता है और फिर बन्द हो जाता है और फिर निकलता है।

कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली फास ३x व नैट्रम म्योर ३x मिलाकर दीजिये।

१८४—सिगरेट या तम्बाकू खाने या पीने की आदत छुड़ाने के लिये (Tobacco-to remove craving for) : कलकेरिया फास ३x या १२x व नैट्रम म्योर ३x को एक गिलास गुनगुने पानी में घोल कर थोड़ा-सा थोड़ी-थोड़ी देर में पीने से तम्बाकू की जबरदस्त ख्वाहिश तक गायब हो जाती है। एक चेन स्मोकर (chain smoker) की आदत दो घन्टे में छूट गई।

१८५—साँप काटने की दवायें (Snake bite) : (१) आम की गुठली बरसात में जमा कर लीजिए। ७ या ८ गुठलियां लीजिए उनके ऊपर के सख्त हिस्से को तोड़ दीजिए और उनके अन्दर का गूदा निकाल लीजिए। उनको ७ काली मिर्चों के साथ थोड़े पानी में पीस लीजिए और एक छटांक पानी में घोलकर पिलाइए। बार-बार इसी तरह से पिलाइए। इससे बहुत रोगी ठीक हो चुके हैं। देशी आम की गुठली सबसे अधिक फायदेमन्द है। कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x व नैट्रम म्योर ३x पानी में घोलकर पिलाइए।

(२) केले की नई पत्ती जो सफेद व मुलायम होती है और लिपटी हुई होती है आधी छटांक लीजिए व आधा तोला फिटकिरी व ७ काली मिर्च पीसकर आध पाव पानी में घोलकर पिलाइए। अगर बेहोश हो तो इस दवा को मुंह व कान में व नाक में डालिए और बराबर ठन्डा या ताजा पानी सिर पर डालते रहिए और कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x व नैट्रम म्योर ३x पानी में घोलकर बार-बार दीजिए।

बाबू राम आसरे लाल, वकील, आजमगढ, ने इस दवा से बहुत से

केस अच्छे किए हैं। एक केस मे रोगी को अस्पताल ले गए थे वहां इन्जेक्शन भी लग चुके थे और डाक्टर साहबान व सब लोग नाउम्मीद हो गए थे। इस दवा से वह ठीक हो गया।

(३) इससे भी आसान तरीका यह है कि केले के तने को काट लीजिए और उसमें से ६ इञ्च मोटा, तना का हिस्सा ले लीजिए। उसको कुचल कर अर्क निकाल लीजिए। और आधी-आधी छटांक अर्क को थोड़ी-थोड़ी देर बाद दीजिए, और पानी सिर पर डालते रहिए साथ ही साथ कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x व नैट्रम म्योर ३x मिलाकर पिलाइए।

(४) दो पीपल के ताजे पत्ते मय डंठल के लीजिए। रोगी को ६-७ आदमी कस कर पकड़ लें ताकि वह अपना हाथ, पैर व सिर न हिला सके इसके बाद पीपल के पत्ते के डंठल रोगी के दोनों कानों के अन्दर डालिए ताकि डंठल का सिरा कान के परदे को छू सके। पत्तियों को कस कर पकड़े रहिए, तुरन्त ही रोगी चिल्लाएगा तथा उठने की कोशिश करेगा लेकिन उसको हिलने मत दीजिए। ऐसा १५, २० मिनट तक कीजिए। रोगी को होश आ जायगा और वह ठीक हो जाएगा। इसके बाद डंठल को कान से निकाल लीजिए।

१८६—सदमे का असर दूर करने के लिये (Shock to remove effect) : काली फास ३x बार-बार रोगी को दीजिए।

१८७—कन्धे का दर्द (Shoulder pain in) : काली फास ३x नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिए व रसटाक्स ३० की एक गोली २ बार दीजिए।

१८८--छींकों का बहुत आना (Sneezing-excessive) । कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, मैंगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x व वाद मे ३x मिलाकर दीजिये। इसके फेल होने पर फैरम फास १२x, काली म्योर ३x काली फास ३x, काली सल्फ ३x व मैगनेशिया फास ३x हर बार गरम पानी मे मिला कर दीजिये।

१८९—छींक—जरा से में छींक आ जाने की आदत (Sneeze-tendency to) : साइलीशिया १२x व वाद मे साइ-लीशिया ३०x दीजिये।

१९०--स्वप्नदोष (Spermatorrhoea) : [सोते मे वीर्य निकल जाना] : कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये। इनके फेल होने पर काली म्योर ३x दीजिये।

१९१—तिल्ली में दर्द (Spleen--pain in) : कलकेरिया फास ३x या १२x काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दे।

१९२--झटका लगना या मोच का आना (Sprain) : कल-केरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x मिलाकर पिलाइये व वेसलीन या तेल मे मिलाकर लगाइये।

१९३--संग्रहणी (Sprue) : इसमे बहुत दस्त होते हैं, वन्द

नही होते । कलकेरिया सल्फ २०० रोज सवेरे दीजिये ५, ७ रोज तक व नैट्रम म्योर १० रोज बारह बजे दोपहर के बाद दीजिये। दो या तीन खुराके काफी होती हैं।

१९४—पाखाना-हरे रंग का (Stool-green) : कलकेरिया फास ३x या १२x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दीजिये।

१९५—पाखाना सख्त होना (Stool--hard) : कलकेरिया फास ३x या १२x, नैट्रम म्योर ३x व नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दीजिये।

१९६—पाखाना बहुत पतला पिचकारी की तरह तेजी से निकले (Stool watery coming out with force) : होमियोपैथिक पोडोफाइलम ६ एक गोली हर पाखाने के बाद दीजिये। इसके फेल होने पर हैजा का पाउडर दीजिये।

१९७--पाखाना--सफेद (Stool--white) : काली म्योर ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x मिलाकर दीजिए।

१९८—पाखाना—पीला (Stool--yellow) : काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x मिलाकर दीजिये।

१९९--गुहेर (Sty on eye lid) : आँख के पलक पर एक फुन्सी हो जाती है, दर्द होता है, फूट जाती है, और दूसरी निकलती है, वह भी फूटती है, इस तरह ७ या ८ निकलती हैं। कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, साइलीशिया १२x, मिलाकर ४ बार रोज दीजिये।

२००—आपरेशन (Surgical operation) : आपरेशन से पहले कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x देना चाहिए ताकि दिल मजबूत हो जावे और हार्टफेल होने का डर न रहे। आपरेशन के बाद कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x मिलाकर दीजिए व स्टाफिसैगरिया ३० की १ गोली रोज दें।

२०१—सूजन (Swellings) : कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिए।

२०२—साइनोवाइटिस (Synovitis) : गाँठ की झिल्ली की सूजन : कलकेरिया फ्लोर १२x, कलकेरिया फास १२x, फैरम फास १२x, नैट्रम म्योर १२x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिए।

२०३—गरमी रोग-सिफलिस (Syphilis) : यह रोग रंडियों व अन्य बुरी स्त्रियों के संग से होता है, बड़ा खराब रोग है, यह पुश्त दर पुश्त चलता है। इसके तीन स्टेज होते हैं : (१) पेशाब के मुकाम पर एक फोड़ा (ulcer) हो जाता है जिसका नाम हार्ड शेंकर (hard chancre) है; (२) तांबे के रंग के दाने कुल शरीर में पड़ जाते हैं; (३) शरीर के किसी हिस्से पर असर होता है, दिल-जिगर या दिमाग, इनमें ऐसे रोग पैदा होते हैं कि अच्छे नहीं होते। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व

साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये। बाद मे इन्ही दवाओ को ऊंची शक्ति देनी चाहिए। दवा खाने को दीजिए और वेसलीन या तेल में घोल कर लगाइये। लाभ न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, साइलीशिया १२x। बाद में इन्ही दवाओं की ऊंची शक्ति देनी चाहिए।

२०४—जायका मुँह का नमकीन स्वाद (Taste Salty) : नैट्रम म्योर ३x दीजिए।

२०५—जायका मुँह का कड़वा (Taste bitter) : कलकेरिया फास ३x या १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया ३x मिलाकर दीजिए वरना कलकेरिया सल्फ ३x दीजिए।

२०६—दाँत निकलने की तकलीफ बच्चों की (Teething) : कलकेरिया फास ३x बराबर देना चाहिये। इससे दांत आसानी से निकल आते हैं। अगर बच्चा ज्यादा रोता हो तो कैमोमिला ६ की एक गोली दिन में ३-४ बार दीजिए। इस दवा से दांत जल्दी निकलते हैं।

२०७—थ्रामबोसिस (Thrombosis) : नसो की बीमारी है। खून जम कर कही नस मे रुकावट पैदा कर देता है, जिससे जान खतरे मे पड़ जाती है। काली म्योर ३x या काली म्योर ६x २-२ या ५-५ मिनट बाद दीजिये, बहुत लाभदायक है।

२०८—दाँतों में पानी व किसी चीज का लगना (Teeth sensitive to water etc.) : कलकेरिया फास ३x या १२x, कल-

केरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये। इससे लाभ न हो तो कलकेरिया फ्लोर ३x, काली म्योर ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x व नैट्रम सल्फ ३x बहुत फायदेमन्द साबित हुई है।

२०६—दाँत का दर्द (Toothache) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फ़ास ३x या १२x, फ़ैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिए। इससे लाभ न हो तो कलकेरिया सल्फ ३x, नैट्रम फांस ३x, नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दीजिये।

२१०—दांतों की एहतियात (Teeth care of) : अगर लोग रोज नीम की दातून इस्तेमाल करें तो दांत के बहुत से रोग दूर हो सकते हैं। पायरिया भी नहीं होगा और अगर हो गया है तो दूर हो जायगा। नीम की दातून व नीम की पत्तियों को एक बाल्टी पानी में डाले रखिये। उसी पानी से मुंह व आँखें धोइये और उसी से आबदस्त लीजिए तो आंखें ठीक रहेंगी और बवासीर न होने पावेगी। सन्त कबीर दास जी ने लिखा है कि ताज्जुब है कि लोग नीम का इस्तेमाल नहीं करते जिससे तमाम रोगों का नाश हो सकता है। पाखाना या पेशाब करते समय दांतो को आपस में दबाइए। दांतों की हिफाजत के लिए निम्नलिखित मन्जन बनाकर इस्तेमाल कीजिये :—

थोडी-सी सेल खडी (French Chalk) लेकर उसमें बायो-कैमिक की बारहो दवाओ के प्रत्येक का १/८ ड्राम मिला दे । इसमें फ़ैरम फास व साइलीशिया १२x की शक्ति मे होना चाहिये और शेष दवायें ३x की शक्ति मे हो । यह मसूढों का फोड़ा और दांतों की अन्य बीमारियो के लिये लाभदायक है ।

२११—टांस्लाइटिस (Tonsilitis) : गले मे गिल्टियां होती हैं जिनको टौंसिल कहते हैं । इनकी सूजन को टांस्लिाइटिस कहते हैं । यह अक्सर अधिक बर्फ खाने से हो जाती है । इसलिये बर्फ वा बर्फ का पानी अधिक मात्रा में प्रयोग न करना चाहिए । कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फ़ैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्यार ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दीजिए । लाभ न हो तो कल-केरिया सल्फ ३x, काली सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये । इससे लाभ न हो तो अगला नुस्खा दीजिये ।

करीब १५ वर्ष हुये श्री पूरन चन्द्र सूद, एडवोकेट, आगरा ने लेखक से कहा कि वह अपने पुत्र का टांस्लाइटिस का आपरेशन कराने जा रहे हैं । लेखक ने उनको मना कर दिया और उनसे कहा कि यह दवा इस्तेमाल करें आपरेशन की जरूरत नही पड़ेगी । ऐसा ही हुआ । दवा से तीन हफ्ते मे टांसिल ठीक हो गये । अब वे व उनके सुपुत्र अपने मित्रो व रिश्तेदारों को इसको बताते हैं और सैंकड़ो लोगों को फायदा हो चुका है ।

श्री एच० सी० मुकर्जी, एडवोकेट, लूकरगंज, इलाहाबाद ने जिनके पिता एक बड़े भारी सर्जन थे इस दवा को बहुत इस्तेमाल किया है और इसकी बहुत तारीफ करते हैं।

२१२—टांस्लाइटिस [सेप्टिक] (Tonsilitis septic) कलकेरिया सल्फ ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये।

२१३—काँपना (Trembling): कुल शरीर या किसी भाग का: कलकेरिया फास ३x या १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैंगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x व नैट्रम सल्फ ३x मिला कर दीजिये।

२१४—ट्यूमर (Tumour) शरीर के किसी हिस्से में गाँठ का पड़ जाना: कलकेरिया फ्लोर ३०x, कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, काली म्योर ३x, काली सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये, बहुत फायदेमन्द साबित हुई है।

२१५—तपेदिक या टी० बी० या ट्यूबरकिलोसिस (T. B. or Tuberculosis consumption): इसमे हलका बुखार होता है और धीरे-धीरे वजन कम होता जाता है और ताकत कम हो जाती है। अगर फेफड़े में यह रोग होता है तो खांसी होती है और कभी-कभी मुँह से खून गिरता है। किसी-किसी को हड्डी की या आंतों की टी० बी० होती है। यह कठिन रोग है। इसमे ५ लाख व्यक्ति

या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x दीजिये।

२२०—प्यास का न लगना या कम लगना (Thirst absence of)। काली फास ३x व काली सल्फ ३x, मिलाकर दीजिये।

२२१—बुखार मियादी टाइफाइड फीवर (Typhoid fever) पहले यह आम तौर से समझा जाता था कि यह बुखार मियाद से पहले नहीं उतरेगा। यदि होमियोपैथिक या बायोकेमिक दवा से उतर जाता था, तो कहते थे, कि बुखार टाइफाइड नहीं होगा क्योंकि उतर गया है। मगर जब से डाक्टरों ने क्लोरोमाइसिटीन निकाली है जिससे टाइफाइड बहुत जल्द उतर जाता है, तब से अब नहीं कहते जो पहले कहते थे। काली फास ३x थोडी-थोड़ी देर बाद दीजिये। वरना बैपटीशिया ६ की एक गोली दिन में चार बार दीजिये, फायदा न हो तो इसी दवा की ३० नम्बर की दवा दिन में २-३ बार दीजिये, उससे भी लाभ न हो तो २०० नम्बर की दवा रोज एक बार तीन रोज तक दीजिये। आशा है कि उससे उतर जायेगा वरना नक्सवोमिका ६ की एक गोली दीजिये, उसके दो घन्टे के बाद इपीकाक ६ की एक गोली फिर दो घन्टे बाद नक्सवोमिका ६ की एक गोली और फिर इपीकाक ६ की एक गोली दीजिये। इससे भी लाभ न हो तो फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दीजिये। फायदा न हो तो कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, साइलीशिया १२x दीजिये।

२२२—पेशाब बढ़ाने के लिए—(Urine to increase) : कलकेरिया फ्लोर ३x व नैट्रम सल्फ ३x मिला कर देने से बहुत अच्छा काम करती है। फायदा न हो तो फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, नैट्रम म्योर ३x व साइलीशिया १२x दीजिये।

२२३—पेशाब-घटाने के लिए—(Urine to decrease) : होमियोपैथिक एसिड फास ६ की एक गोली तीन-तीन घन्टे बाद दीजिये। बारह घन्टे में फायदा न हो तो कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, या १२x, फैरम फास १२x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x मिला कर दीजिये।

२२४—पेशाब में जलन या दर्द हो—(Urine burning or painful : कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x, नैट्रम फास ३x, मिलाकर दीजिए। कैन्थरिस ३० की एक गोली रोज बहुत लाभदायक है।

२२५—पेशाब—पीली या हरे-पीले रङ्ग की (Urine—yellow or greenish yellow) : काली फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, मिलाकर दीजिये।

२२६—पेशाब को न रोक सकना (Urine—inability to retain urine) : कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, नैट्रम फास ३x, मिलाकर दीजिये।

२२७--पेशाब में सफेद लुआबदार चीज गिरना (Urine-mucous in) : काली म्योर ३x व नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दीजिये।

२२८—पेशाब दूध की तरह सफेद (Urine - milky white) नैट्रम म्योर ३x दीजिये।

२२९--पेशाब--लाल रङ्ग की (Urine—red) : फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x मिलाकर दीजिये।

२३०--पेशाब में मिट्टी की तरह चीज का जमा होना (Urine--muddy deposits in) : नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

२३१--पेशाब में फास्फेट का गिरना (Urine—phosphates in) : कलकेरिया फास ३x या १२x मिलाकर दीजिये।

२३२--पेशाब बदबूदार (Uine--foul smell in) : कलकेरिया फ्लोर ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

२३३—पेशाब में शक्कर (Urine--Sugar in) : नैट्रम सल्फ ३x दीजिए।

२३४--पेशाब--हर खाँसने के साथ पेशाब का निकल पड़ना (Urine comes out on coughing) : फैरम फास १२x व नैट्रम म्योर ३x दीजिये।

२३५—पेशाब में पत्थर से बारीक टुकड़े (Urine—stone

in) : कलकेरिया फास ३x या १२x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

२३६—पेशाब में यूरिक एसिड (Urine uric acid in) : काली म्योर ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

२३७—पेशाब में पीब—(Urine-pus in) : नैट्रम सल्फ ३x दीजिए।

२३८—पेशाब—सोते में पेशाब का हो जाना—(Urine passed during sleep) : कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये। बहुत फायदेमन्द है।

२३९—पित्ती का निकलना—(Urticaria) : इस रोग मे शरीर मे उठे-उठे चकत्ते हो जाते हैं, जो खुजलाते हैं। होमियोपैथिक एपिस ६ की एक गोली तीन-तीन घन्टे बाद दीजिये। एक या दो दिन में लाभ न हो तो कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x दीजिये।

खान बहादुर मुहम्मद इस्लाम साहब, रिटायर्ड जज, हाई कोर्ट की लड़की को तीन साल तक पित्ती रही। हर हफ्ते इन्जेक्शन लगते थे। रोग अच्छा नही होता था। लेखक की एपिस ६, की एक छोटी-सी

गोली से ४ साल तक अच्छी रही, फिर हुआ तो नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x दिया; उससे अच्छी हो गई।

२४० बेहोशी—(Unconsciousness) : कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x मिला कर दीजिए। बहुत फायदेमन्द है।

२४१—गर्भाशय का जगह से हटना (Uterus removed from its place) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, नैट्रम फास ३x मिलाकर दीजिये।

२४२—यूवीलाइटिस—कउआ जो गले में लटकता है, उसका बढ़ना (Uvulitis) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x मिला कर दीजिये।

२४३—टीका लगाने का बुरा असर—(Vaccination, bad effect of) : काली म्योर ३x, अकेले बहुत फायदेमन्द है। इससे लाभ न हो तो नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये।

२४४—चक्कर आना (Vertigo giddiness) : फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दीजिये। बहुत फायदेमन्द है।

२४५—आवाज का भारी होना या गायब हो जाना—(Voice—hoarse or lost) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x व फैरम फास १२x मिला कर दीजिये।

२४६—कै होना (Vomitting) : एक गोली इपीकाक ६, एक-एक घन्टे बाद दीजिये। फायदा हो तो ज्यादा देर बाद दीजिये। फायदा न हो तो हैजा पाउडर दीजिये।

२४७—मस्से (Warts) : यह शरीर में उठे-उठे होते हैं। कलकेरिया फास ३x या १२x, काली म्योर ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिए।

२४८—बर्रों का डंक मारना (Wasp sting) : एक बूंद पानी में नैट्रम म्योर ३x मिला कर लगाइए। फौरन असर दूर होता है, और पानी मे घोलकर इसे पीने को भी दीजिये। बहुत फायदेमन्द है।

२४९—कुकुरखांसी (Whooping cough) : यह अक्सर बच्चों को होती है, कभी-कभी बड़ो को भी होती है, यह उड़कर लगती है, पहिले मामूली खाँसी होती है, फिर कई दिन के बाद खांसी के दौरे पड़ते हैं और एक खास आवाज होती है। सांस दिक्कत के साथ आती है और कै हो जाती है। यह बीमारी अक्सर ६ हफ्ते तक रहती है, कभी-कभी जल्दी अच्छी हो जाती है, कभी-कभी महीनों चलती है। कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x मिलाकर हर बार गरम पानी के साथ दीजिये। नुस्खा नं० ३०० भी देखिये।

२५०—गलका या बिषैली (Whitlow) : उंगली मे फोड़ा होता है, जो बहुत तकलीफ देता है। कलकेरिया फ्लोर ३x, कल-

केरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, नैट्रम सल्फ ३x, साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये।

२५१—कीड़े या केचुए (Worms) : जो आंतो मे हो जाते हैं और पाखाने के रास्ते से निकलते हैं : कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, मिलाकर दीजिये। बहुत अच्छी दवा है।

२५२—जख्म (Wounds) : कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x, मिलाकर दीजिये।

२५३—हाथ का हिलना (Writers cramp) : मैगनेशिया फास ३x को हर बार ३-३ घन्टे बाद बहुत गरम पानी के साथ पिलाइए। यह फेल हो तो इसी मे कलकेरिया फास ३x या १२x व नैट्रमफास ३x मिला कर दीजिए। मिस्टर टक, हैन्डराइटिंग एक्सपर्ट को इससे बहुत फायदा हुआ।

२५४—जमुहाई का अधिक आना (Yawning) : कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये।

२५५—पीला बुखार—(Yellow fever) : इसमे शरीर पीला हो जाता है। यह उड़ कर लगता है। फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x व नैट्रम सल्फ ३x, मिलाकर दीजिये।

२५६—फिक्र : परेशानी का असर दूर करने के लिए : काली फास ३x या आर्सिनिकम एल्बम ६ दीजिए।

२५७—बेड सोर (Bed sore) : रोगी बहुत दिनों तक चारपाई पर पड़ा रहे तो पीठ या चूतड़ो मे रगड़ से जख्म हो जाते हैं जो मुश्किल से अच्छे होते हैं। काली फास ३x खिलाइये और वेसलीन या तेल मे मिलाकर लगाइये।

२५८—ब्रेनफैग—घबराहट के साथ दिमाग की कमजोरी—(Brain fag) : वही इलाज जो न्युरेस्थेनिया का है।

२५९—सूजन औरतों की छाती में—(Breast) : देखिए सूजन—नुस्खा नं० २०१। उसके फेल होने पर कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली सल्फ ३x, काली फास ३x, नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दें। यह जानवरो के लिये भी लाभदायक है।

२६०—हड्डी का टूटना : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये। हड्डी को जल्दी जोड देगा।

२६१—काटना जानवरों का : नैट्रम म्योर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x व साइलीशिया १२x, मिलाकर दीजिये और तेल मे या वैसलीन मे घोलकर लगाइये। यदि कुछ न मिले तो पानी मे ही घोलकर लगाइये।

२६२—शराब की आदत छुड़ाने के लिए : होमियोपैथिक (Selenium) सिलिनियम ३० की एक गोली सुबह, दोपहर व शाम को दीजिये। यह आश्चर्यजनक है कि पहली या दूसरी खूराक ही आदत छुडा देती है।

२६३—नसों की बीमारी--(Veins) : कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x व मैगनेशिया फास ३x दीजिये।

२६४—जख्म आँतों व पेट में (Ulcer--gastric or intestinal) : इस रोग मे पेट मे दर्द होता है और पाखाने के साथ कभी-कभी खून आता है, कमजोरी बढ़ती जाती है। यह कठिन रोग लाइलाज समझा जाता है, लेकिन नीचे लिखी हुई दवा से कई रोगी ठीक हुये हैं। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये। पेट कभी खाली नहीं रहना चाहिये, हर दो-तीन घन्टे पर थोड़ा-थोडा दुध पीना चाहिए।

२६५—जख्म आँख के काले हिस्से पर जिससे सफेदी आ जाती है—(Corneal ulcer) : साइलीशिया १२x दीजिये।

२६६—दांत का गल जाना (Decayed teeth) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

२६७—दांत का हिलना (Tooth loose) : कलकेरिया फ्लोर,

३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये ।

२६८—फोते की सूजन (Testicle swollen) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली सल्फ ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये ।

२६९—बाँझपन (Sterility) : नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये ।

२७०—तिल्ली की बीमारियाँ : काली फास ३x दीजिये ।

२७१—गले में दर्द (Sore throat) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये वरना कलकेरिया सल्फ ३x व काली सल्फ ३x मिलाकर दीजिए ।

२७२—खिंचाव, अकड़न या ऐंठन (Convulsion or spasms) : कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x व मैगनेशिया फास ३x मिलाकर एक-एक चम्मच थोड़ी,थोड़ी देर बाद और साथ-साथ काफी गरम पानी बार-बार पिलाइए ।

२७३—सूँघने की शक्ति कम या गायब होना (Smell-

weak or lost) : काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिए।

२७४—कुनैन ज्यादा खाने का बुरा असर दूर करने के लिए—(Quinine—after-effects to remove) : नैट्रम म्योर ३x दीजिये।

२७५—काँच निकलना (Prolapsus) : पाखाना फिरने के बाद नीचे आंत निकल आती है। पोडोफाइलम ६, एक-दो गोली तीन-तीन घन्टे बाद दीजिये वरना काली म्योर ३x को छोड़कर बाकी ग्यारहो दवायें मिलाकर दीजिये वरना काली म्योर ३x भी मिला दीजिये।

२७६—सोरियासिस (Psoriasis) (जिल्द यानी चमड़े की बीमारी) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

२७७—जहर खाने का इलाज : फौरन घी या नारियल का तेल या दोनों मिलाकर खूब पिलाइये और बार-बार कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x व नैट्रम म्योर ३x, मिलाकर दीजिये, और डाक्टर को बुलाइये।

२७८—पसीना अधिक आता हो : कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

२७९--पसीना अगर न आता हो : फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली सल्फ ३, मिलाकर बार-बार दीजिए।

२८०—सुन्न—शरीर के किसी हिस्से का सुन्न पड़ जाना (Numbness) : कलकेरिया फास ३x या १२x व काली फास ३x, मिलाकर दीजिए।

२८१—जी मचलना (Nausea) : इपीकाक ६ या रसटाक्स ६ या पल्सेटिला ६, की एक-एक गोली दो-दो घन्टे बाद दीजिये। पहले एक को ट्राई कीजिये, फिर दूसरी दवा, फिर तीसरी दवा। सब फेल होने पर हैजा की दवा दीजिये।

२८२—नाखूनों की बीमारियाँ (Nails—diseases of) : काली म्योर ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

२८३--माँ का दूध बढ़ाने के लिए : कलकेरिया फास ३x, कलकेरिया फ्लोर ३x, नैट्रम म्योर ३x और साइलीशिया १२x दीजिये।

२८४—माहवारी ठीक समय पर न होना (Menses irregular) : काली फास ३x, नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

२८५--माहवारी का बन्द होना : ४५ या ५० वर्ष की उम्र पर माहवारी बिल्कुल ही बन्द हो जाती है, उस समय अक्सर तकलीफें

होती हैं। मैगनेशिया फास ३x गरम पानी में मिलाकर एक-एक चम्मच दो-दो घन्टे पर दीजिये, या होमियोपैथिक सिमिसीफूगा ३० की एक गोली दिन मे दो-तीन बार दीजिये।

२८६—जिगर का बढ़ जाना : एक गोली आर्सिनिकल एलवम ६ सुबह ६ या ७ बजे और दिन से तीन बजे रोज दीजिये। अगर बुखार हो तो बुखार की दस दवाइयां मिलाकर दीजिए और आर्सिनिक भी चलती रहे।

२८७—काला आजार : कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास १२x, नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दिन मे तीन बार रोज दीजिए और शाम को तीन बजे एक गोली नैट्रम म्योर २०० की हफ्ते में एक दफा दीजिये।

२८८—खुजली पेशाब की जगह : कलकेरिया सल्फ ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रल फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये वरना आर्सिनिकम एलबम ६ की एक गोली सुबह ६ या ७ बजे व एक गोली तीन बजे शाम को दीजिये।

२८९—बालों का समय से पहले सफेद होना : साइलीशिया १२x, जादू का सा असर करती है।

२९०—मसूड़ों से खून का जल्दी निकलना : कलकेरिया सल्फ ३x, काली फास ३x व नैट्रम म्योर ३x मिला कर दीजिए।

२९१—रज का असर दूर करने के लिए : कलकेरिया फास ३x या १२x व काली फास ३x मिलाकर दीजिये।

२९२—घेघा-गरदन पर माँस का बढ़ना (Goitre) : साइलीशिया ६x रोज ३ बार या कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये। इससे एक या दो महीने में फायदा न हो तो होमियोपैथिक आयोडियम १००० की एक गोली हर पूर्णमासी के दूसरे दिन दीजिये।

२९३—ग्लोकोमा (Gloucoma) : आंख की कठिन बीमारी है। इसमें रोगी धीरे-धीरे अन्धा हो जाता है। यह बीमारी ला-इलाज समझी जाती है। नैट्रम म्योर ३x दिन मे चार या पाँच बार दीजिये। लाभ न हो तो इसी की ३०x दिन में २ बार या २००x रोज दीजिये।

२९४ कान में आवाजें आना। कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिए।

२९५—जलन्धर—पेट या शरीर के किसी और हिस्से में पानी का भर जाना : यह कठिन रोग है। लेकिन इन दवाओं से अच्छा हो सकता है। कलकेरिया फ्लोर ३०x, काली म्योर १२x, काली फास १२x, नैट्रम म्योर १२x, नैट्रम सल्फ १२x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिए। वरना आर्सिनकम एल्बम ६, एक गोली सुबह ६ या ७ बजे व एक गोली शाम को ३ बजे देने से लाभ होता है। इस रोग में बगैर नमक का भोजन देना चाहिये।

२९६—डिप्थीरिया : यह कठिन रोग है। इसमे गले के अन्दर

हल्क पर एक झिल्ली-सी पड़ जाती है जो बढ़ कर गला रोक देती है और रोगी मर जाता है। यह बीमारी उड़ कर लगती है। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, फ़ैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फ़ास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ़ ३x व साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये। यह बीमारी बिल्ली का जूठा खाना खाने से अक्सर होती है।

२९७—बच्चों का अधिक रोना : होमियोपैथिक कैमोमिला ६ (Cham. 6) की एक-एक गोली तीन-तीन घन्टे बाद दीजिये।

२९८—गट्ठे या गोखरू (Corn) : कड़े जूते पहनने से उंगलियों में गट्ठे पड़ जाते हैं। काली म्योर ३x, नैट्रम म्योर ३x, कलकेरिया फ्लोर ३x व साइलीशिया १२x पानी मे घोलकर पिलाइये और लगाइये।

२९९—जुकाम का बार-बार होना : और इलाजों से आम तौर से अच्छा नहीं होता, लेकिन इन दवाओं से ५ या ७ दिन में अच्छा हो जाता है। कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, फ़ैरम फास १२x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फ़ास ३x, नैट्रम सल्फ़ ३x और साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये।

३००—पिन्डली (Calf) में दर्द : कलकेरिया फास २०० की एक गोली सवेरे व नैट्रम म्योर २०० की एक गोली दूसरे दिन शाम को खिलाइये।

३०१—एँथ्रेक्स (Anthrax) : भयानक रोग, साधारणतः चौपाये जानवरों को होता है, और कभी-कभी आदमियों को भी हो जाता है। कलकेरिया सल्फ ३x काली फास ३x, और साइलीशिया १२x, मिला कर देवें। यदि लाभ न हो तो आर्सेनिकम एलबम ६ या आर्सेनिकम आयोडिटम ६ की एक गोली ६ बजे सुबह और एक गोली ३ बजे शाम को देना चाहिये।

३०२—कोयला, मिट्टी तथा खड़िया खाने की आदत (Appetite depraved) : कलकेरिया फास ३x या १२x, दीजिये।

३०३—आर्टेरियो स्क्लोरोसिस (Arterio sclorosis) : छोटी नसों का मोटा हो जाना : कलकेरिया फ्लोर ३x, नैट्रम म्योर ३x और साइलीशिया १२x, मिलाकर दीजिये। बराइटा म्योर २०० की एक गोली हर हफ्ते।

३०४—एट्राफी (Atrophy) कुल जिस्म या किसी हिस्से का दुबला होता जाना : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया ३x, सल्फ फैरम फास १२x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, और साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

३०५—खून की कमी (जवान औरतों में) (Chlorosis) : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x और साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

३०६—कोरिया (Chorea) : एक स्नायुविक रोग जिसमे जोड़ों तथा चेहरे में अनियमित, अनैच्छिक गति होती है। कलकेरिया फास ३x, या १२x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x और साइलीशिया १२x मिला कर गरम पानी में देना चाहिये।

३०७—क्लाइमेक्ट्रिक (Climactric) : (वह समय जब जीवन मे बड़ा शारीरिक परिवर्तन होना समझा जाता है, (आम तौर से तिरसठवां साल) फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x और नैट्रम म्योर ३x मिलाकर दीजिये।

३०८—कोलाइटिस (Colitis) : यह रोग पुरानी पेचिस की तरह का होता है, इसमे बड़ी आंत मे सूजन हो जाती है। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x। अगर रात मे तकलीफ बढ़ जाती हो तो साइलीशिया १२x भी मिला दीजिये। यदि इससे लाभ न हो तो काली म्योर ३x, काली सल्फ़ ३x और मैगनेशिया फास ३x मिला कर देवें। अवश्य लाभ होगा।

३०९—सिस्ट (Cyst) : मूत्राशय या थैली जैसी बनावट जिसमे सामान्य या दूषित पदार्थ हों : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x, नैट्रम म्योर ३x और साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

३१०—दुर्बल होते जाना (Emactiation) : कलकेरिया फास

३x या १२x, फेरम फास १२x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x और साइलीशिया १२x मिला कर दीजिए।

३११—आँख में सूजन (Eyes opthalmia) : कलकेरिया फास ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x, और साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये, और इसी को पानी में घोल कर दिन में दो बार, एक-एक बूंद, दोनों आँखों में डालिये।

३१२—आँख लाल होना (Eyes red) : कलकेरिया फास ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x और साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

३१३—बुखार मलेरिया (Fever Malaria) : बुखार उतारने के लिए फैरम फास १२x, काली म्योर ३x और नैट्रम सल्फ ३x, मिलाकर दीजिये। यदि यह फेल हो जाये तो नैट्रम सल्फ ३० और नैट्रम म्योर ३० की एक-एक गोली बारी-बारी से, २-३ खुराक दीजिये। बुखार उतरने पर नैट्रम म्योर २०० की एक गोली शाम के समय दीजिये सुबह नहीं। नुस्खा नं० ८३ और ८४ भी देखिए—यह अत्यन्त आवश्यक है।

३१४—पेट में बदबूदार हवा (Flatulence) : कलकेरिया फास ३x या १२x, नैट्रम म्योर ३x और साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

३१५—गैस्ट्रो इन्ट्राइटिस (Gastro entritis) : यह रोग हैजे की भांति फैलता है। कलकेरिया फास ३x या १२x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैंगनेशिया फ़ास ३x, नैट्रम म्योर ३x और नैट्रम सल्फ ३x, मिला कर दीजिये। यदि लाभ न हो तो हैजे की भांति इलाज कीजिये। देखिये नुस्खा नं० ४३।

३१६—भूत-प्रेत का डर (Fear of ghosts) : काली फास ३x, मैंगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x और नैट्रम फास ३x मिला कर दीजिये।

३१७—कद के बढ़ाव का रुकना (Growth stunted) : बराइटा फास २०० (Baryta Phos 200) की एक गोली हर हफ्ते दीजिये।

३१८—परदेश में घर की याद बार-बार आना—(Home-sickness) : काली फास ३x दीजिये।

३१९—इम्पेटिगो (Impetigo) एक चर्म रोग : नैट्रम म्योर ३x और साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

३२०—दर्द के साथ सूजन (Inflammation) : सूजन देखिये। नुस्खा नं० २०१।

३२१—बच्चा पैदा होने के बाद खेड़ी का चढ़ जाना (placenta retained after child birth) : कलकेरिया फ्लोर ३x, काली फास ३x और मैंगनेशिया फास ३x, मिला कर गरम पानी के साथ दें।

३२२—ऐंठन पैर में (Spasm in leg) : मैगनेशिया फास ३x और साइलीशिया १२x मिला कर गरम पानी के साथ दें।

३२३—हस्त मैथुन (Mastutbation) हाथ से मैथुन करना : काफी संख्या मे लड़के इस बुरी आदत के शिकार हैं, जिससे स्वास्थ्य खराब हो जाता है और अक्सर दिमाग की बीमारी तथा टी० बी० हो जाती है। इस आदत को छुड़ाने के लिये कलकेरिया फास ३x रोज दिन में चार बार दीजिये। फिर इसी दवा की ६x, व १२x और धीरे-धीरे शक्ति बढ़ा-बढ़ा कर देना चाहिये।

३२४—माहवारी जल्दी होना—(Menses too soon) : कलकेरिया फास ३x, काली म्योर ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x और साइलीशिया १२x मिला कर दें।

३२५—माहवारी का बार-बार होना (Menses too often) काली म्योर ३x दीजिये।

३२६—माहवारी काफी दिनों तक होता रहे (Menses long lasting) : कलकेरिया सल्फ ३x और काली म्योर ३x मिलाकर दीजिये।

३२७—माहवारी देर से होना (Menses delayed) : कलकेरिया फास ३x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x और नैट्रम म्योर ३x, मिला कर दीजिए।

३२८--माहवारी थक्केदार खून निकलना (Menses clotted blood) : काली म्योर ३x दीजिए।

३२९--आधे सिर या चेहरे में दर्द होना (Migraine) : सिर का दर्द देखिये। नुस्खा नं० ९८।

३३०--दिमाग एकाग्र न कर सकना Mind-inability to cencentrate) : कलकेरिया फास ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x और साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये।

३३१--मिल्क लेग (Milk-leg) : माँ की छाती में दूध आने पर पाँव मे दर्द : काली म्योर ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x और साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

३३२--दूध का बुखार (Milk Fever) : बच्चा पैदा होने के बाद माँ का दूध उतरने पर बुखार। कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x और काली फास ३x मिलाकर दीजिये।

३३३--नाखून का अन्दर की तरफ बढ़ना (Nails ingrowing) : कलकेरिया फ्लोर ३x और काली म्योर ३x मिलाकर दीजिये।

३३४--स्नायु (Nerves) : की कमजोरी (Nervous debility) : कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x, मैगनेशिया

फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास और साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये।

३३५—औरतों में मैथुन की इच्छा न रोक सकना (Nymphomania) : कलकेरिया फास ३x या १२x, काली फास ३x और नैट्रम म्योर ३x, मिलाकर देवें।

३३६—गर्भावस्था में तकलीफ (Pregnancy) : काली फास ३x, दिन मे दो या तीन वार रोज दीजिये। इस अवस्था में स्त्रियों को अधिक परिश्रम करना चाहिये। रोग और कमजोरी से बचाने के लिए इस अवस्था में कलकेरिया फ्लोर ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x और साइलीशिया १२x, मिलाकर देना चाहिये। यदि आधी रात के बाद गर्भ ठहरा है तो लड़का होगा यदि इसके पहले ठहरा है तो लड़की होगी।

३३७—नब्ज धीरे-धीरे चलना (Pulse slow) : काली फास ३x, देवें।

३३८—नब्ज तेज चलना (Pulse puick) : फैरम फास १२x, और काली म्योर ३x, मिलाकर देवें।

३३९—मवाद (Pus) : इसे रोकने के लिए कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x और नैट्रम फास मिला कर दें।

३४०—मौसम बदलने पर बीमारी (Seasonal Illness) :

कलकेरिया फास ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x और नैट्रम फास ३x, मिलाकर देना चाहिए।

३४१—सुन्न होना (Loss of sensation) : काली फास ३x दें।

३४२—स्कर्वी (Scurvy) एक प्रकार का रक्त रोग : इसमे कमजोरी होती है तथा शरीर की चमड़ी पर काले या नीले रंगहीन धब्बे पड़ जाते हैं। इस रोग मे काली फास ३x देना चाहिये।

३४३—चमड़ी के रोग (Skin diseases) : हर तरह के चर्म रोग जैसे खुजली, दाद, अपरस इत्यादि अक्सर कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x और साइलीशिया १२x, मिलाकर देने से ठीक हो जाते हैं।

३४४—सोते-सोते टहलना (Somnambulism) : काली फास ३x दें।

३४५—शीघ्र पतन (वीर्य का जल्दी निकल जाना) : नैट्रम म्योर ३x देना चाहिये। एक छटांक चना आधा पाव पानी मे रोज शाम को भिगो दीजिए। दूसरे दिन सुबह चना खा जाइये और उस पानी को पीजिये। यह बहुत फायदेमन्द है।

३४६—पाखाना (Stools) : पाखाना भेड़-बकरी के पाखाने

का तरह होने पर नट्रम सल्फ ३x और साइलोशिया १२x मिला कर देना चाहिये।

३४७—पाखाना (Stools) : बदहजमी का पाखाना : कलकेरिया फास ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, नैट्रम म्योर ३x, और साइलोशिया १२x, मिलाकर देना चाहिये।

३४८—पाखाना काला (Black Stools) : इसमे काली सल्फ ३x और नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर देना चाहिये।

३४९—हकलाना (Stammering) : इस रोग में मैंगनेशिया फास ३x, गरम पानी मे रोज दिन मे चार बार देना चाहिये। एक या दो हफ्ते इस तरह देने के बाद मैंगनेशिया फास ६x देना चाहिये। इसी प्रकार बराबर देना चाहिये या क्युपरम मेटैलिकम ६ रोज दो बार एक-एक गोली एक या दो हफ्ते तक देना चाहिए।

३५०—थकावट मालूम होना (Tired) : इसमे आर्निकामान्ट ३० की एक-एक गोली चार बार रोज देनी चाहिये। लाभ न होने पर कमजोरी का पाउडर नुस्खा नं० ४९ दीजिये।

३५१—पैराटाइफायड (Para Typhoid) : हलका टाइफायड होता है। इसमे भी टाइफायड नुस्खा नं० २२१ के लिए लिखी दवायें देनी चाहिये।

३५२—सन्निपात ज्वर (Typhus) : यह भी मामूली प्रकार

का टाइफायड होता है। इसमे टाइफायड नुस्खा नं० २२१ के अनुसार दवा देनी चाहिये।

३५३—गुस्से का आना (Anger) : यदि उत्तेजना घवड़ाहट की वजह से तकलीफ हो तो नैट्रम म्योर ३x व काली फास ३x मिलाकर दीजिये। लाभ न होने पर ब्राइयोनिया ६ दीजिए।

३५४—स्नान (Bath) : यदि नहाने, भीग जाने या हवा मे नमी होने की वजह से तकलीफ हो गई हो या तकलीफ बढ़ती हो तो रसटाक्स ६ बहुत फायदेमन्द है।

३५५—कान का परदा फटना (Rupture of ear diaphragm) : साइलीशिया १२x दीजिये।

३५६—फीलपाँव (Elephantiasis) : वही इलाज जो फाइलेरिया के लिए है। देखिए नुस्खा नं० ८५।

३५७—उत्तेजना (Emotion)। उत्तेजना से पैदा हुई तकलीफ के लिए काली फास ३x व नैट्रम म्योर ३x मिला कर दीजिये।

३५८—इन्जेक्शन (Injection) : सुई (Injection) लगाने से सूजन व दर्द होने पर। देखिए सूजन। नुस्खा नं० २०१।

३५९—पाल्जि (Palsy) : शरीर की मांस-पेशियों पर से नियंत्रण खोना। मैंगनेशिया फास ३x, कलकेरिया फास ३x या १२x मिलाकर दीजिये।

३६०—लकवा-एकाएक लकवा मार जाना : कास्टिकम ३० दिन मे तीन बार दीजिये। और काली फास ३x, तीन-तीन घन्टे बाद दीजिये।

३६१—लकवा-चेहरे या सिर के एक तरफ लकवा मार जाना : कास्टिकम ३० दिन में तीन बार दीजिये। यदि लाभ न हो तो काली फास ३x, काली सल्फ ३x व साइलीशिया १२x, मिलाकर एक-एक घन्टे बाद दीजिये।

३६२—लकवा-बायें तरफ का लकवा। कास्टिकम ३० दिन मे तीन बार दीजिये। लाभ न होने पर काली फास ३x और मैगनेशिया फास ३x बारी-बारी से दो-दो घन्टे पर दें।

३६३—लकवा-दायें तरफ का लकवा : कास्टिकम ३० दिन में तीन बार दीजिये। लाभ न होने पर काली म्योर ३x, काली फास ३x और साइलीशिया १२x बारी-बारी से दो-दो घन्टे बाद दें।

३६४—लकवा की वजह से आवाज का न निकलना : देखिये (Voice lost) नुस्खा नं० २४५।

३६५—अन्हौरी, अन्धौरी या घमौरी (Prickly heat) : कलकेरिया फास ३x व नेट्रम म्योर ३x दीजिये और पानी मे घोलकर लगाइये। रसटाक्स ३० की एक गोली भी दिन मे दो बार दीजिये।

३६६-मैथुन की इच्छा न होना (Sexual desire gone) : काली फास ३x व नेट्रम फास ३x दीजिये।

३६७—मैथुन की तीव्र इच्छा (Sexual desire increa-

sed) : काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x और नैट्रम फास ३x मिलाकर दीजिये ।

३६८--पथरी (Stone) : पथरी गलाने के लिये साइलीशिया १२x दीजिये । नुस्खा नं० ८८ भी देखिये ।

३६९--सोते हुए दाँत पीसना (Teeth grinding of) :-- नैट्रम फास ३x दीजिये ।

३७०--इनफ्लुएँजा : फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, नैट्रम म्योर ३x व नैट्रम सल्फ ३x मिलाकर दीजिये । देशी इलाज-- हल्दी को बारीक पीस लीजिए उसको एक चाय का चम्मच भर कर निकाल लीजिये और एक पाव दूध के साथ उबालिये और रोगी को पिलाइये ।

३७१--घेघा (Goitre) : इस रोग मे गला फूल जाता है । साइलीशिया ६x शुरू में १०-१५ रोज तक दीजिये इससे या तो ठीक हो जाएगा या अगर कुछ कसर रह जाये तो साइलीशिया १२x दीजिए । दिन मे तीन-चार बार देना चाहिये ।

३७२--पागलपन : अगर काली फास ३x अकेला काम न करे तो उसमे कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिए ।

३७३--हीमोफीलिया (Haemophilia) : खून का यह

लक्षण होता है कि हवा लगने से जम जाता है। अगर कभी ऐसा न हो तो उस रोग को होमोफीलिया कहते हैं।

यह बड़ा कठिन रोग है। लगभग २३ वर्ष हुए स्पेन के बादशाह का लड़का इस रोग से मर गया था। मेरा नुस्खा खून रोकने का है। इस रोग को भी फायदा पहुँचाता है। कई रोगी ठीक हो चुके हैं।

३७४—गुर्दे का दर्द (Kidney Pain or Renal Colic) वही दवा जो शूल के दर्द की होती है।

३७५—जिगर : ब्राइयोनिया ३० भी इस रोग मे बहुत लाभदायक है।

३७६—धनुष्टंकार (Lock jaw) : इस रोग मे शुरु मे मैंगनेशिया फास ३x का एक ग्रेन दो-तीन चम्मच गरम पानी में मिलाकर पांच-पांच मिनट बाद दीजिए और इस दवा का पाउडर भी मसूड़ों पर मलिए और तेल मे मिलाकर शरीर पर रगड़िए। अगर तीन घन्टे मे लाभ न हो तो मैंगनेशिया फ़ास ६x दीजिए और फिर १२x और फिर ३०x। हर एक दवा का दो-तीन घन्टे तक सेवन कीजिये और मसूडो और शरीर पर लगाइए। इन सबसे अगर लाभ न हो तो कलकेरिया फास ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, मैंगनेशिया फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर उसी तरह दीजिये। इनसे भी फायदा न हो तो इनमें कलकेरिया फ्लोर ३x और कलकेरिया सल्फ ३x मिला दीजिए।

३७७—प्रास्ट्रेट ग्लैन्ड का बढ़ना : इसके बढने से पेशाब रुक

रुक कर आता है। यह रोग अक्सर बूढ़ों को होता है। अगर नैट्रम सल्फ ३x, अकेला काम न करे तो उसमे कलकेरिया फ्लोर ३०x, कलकेरिया फास १२x, काली फास ३x, मैगनेशिया फास ३x, नैट्रम फास ३x, नैट्रम सल्फ ३x (बाद में ६x व १२x व ३०x) और साइलीशिया १२x मिला कर दीजिए। और सूजन वाली दवा दीजिए—एक दिन ३ बार यह और एक दिन ३ बार दूसरी।

३७८—टोसिस (Ptosis) : किसी अंग का नीचे लटक जाना जैसे आंख की पलक। इसमे काली फास १२x (बाद मे ३०x) व मैगनेशिया फास १२x मिलाकर दिन मे तीन बार दीजिये।

३७९—सौर का बुखार : (बच्चा पैदा होने के बाद मां का बुखार) : फैरम फ़ास १२x, काली म्योर ३x और नैट्रम सल्फ ३x मिला कर दीजिए।

३८०—दाद (Ring worm) : दिए हुए नुस्खों मे काली फास ३x मिलाकर दीजिए।

३८१—दूर की चीज दिखाई न पड़े (Short Sight) : कलकेरिया कार्ब ३० की एक गोली रोज दीजिये एक महीने तक लाभ न हो तो फाइसोस्टिगमा (physostigma) ३० की एक गोली रोज दीजिये। नैट्रम म्योर २०० हफ्ते मे २ बार शाम को ६ बजे दीजिये।

३८२—शरीर के बायें हिस्से के रोग (Side troubles of the left side) : लैकेसिस ३० की एक गोली। जब तक इसका

असर रहे दूसरी गोली न दी जावे। फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x और साइलीशिया १२x मिला कर दीजिये।

३८३—शरीर के दायें हिस्से में रोग (Side troubles of the right side) : सलफर ३० की एक गोली। दूसरे रोज कलकेरिया कार्ब ३० की एक गोली और तीसरे रोज लाइकोपोडियम २०० की एक गोली। पन्द्रह दिन बाद फिर यही कीजिये।

३८४—नाक की सूजन : कलकेरिया फ्लोर ३x, कलकेरिया फास ३x, या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, नैट्रम फास ३x व साइलीशिया १२x मिलाकर सवेरे ९ बजे, शाम को ६ बजे व रात को नौ बजे दीजिए। लाभ न होने पर काली म्योर ३x व काली फास ३x मिलाकर दीजिये।

३८५—प्यास का ज्यादा लगना : ब्राइयोनिया ६x या ३० दीजिये अगर यह फायदा न करे तो कलकेरिया फास ३x या १२x, कलकेरिया सल्फ ३x, फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, काली सल्फ ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम सल्फ ३x और साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

३८६—टी० बी० (T. B.) चार जवा लहसुन, १/४ जायफल, १ छटांक (२ औंस), गरी (Coconut) के छोटे-छोटे टुकड़े एक सेर बकरी के दूध मे उबालिए और चीनी छोड़कर उसकी खीर बना लीजिए। हर रोज खिलाइए लेकिन लहसुन का एक-एक जवा रोज

बढ़ाते जाइए। २१ तक ले जाइये और एक हफ्ते तक उसको चलाइए। फिर घटाते-घटाते ४ तक आ जाइए। मालिक चाहेगा तो रोगी अच्छा हो जाएगा।

३८७—जकड़न : रसटाक्स ३० या ब्राइओनिया ३० दिन में एक-एक खुराक दीजिये। एक हफ्ते या दस दिन तक लाभ न हो तो पल्सेटिला ३० या लोडमपाल ३० की एक-एक खुराक रोज दीजिये।

३८८—टान्सलाइटिस (Tonslitis-Septic) (गले के दोनों तरफ की गांठो का वढ़ जाना और अगर उसमें पीब आ जाये) : वही इलाज जो सादे टान्सलाइटिस के लिये है।

३८९—पेशाब अगर कम होता हो, बढ़ाने के लिए—यदि कलकेरिया फ्लोर ३x, नैट्रम सल्फ ३x से लाभ न हो तो उसमें फैरम फास १२x, काली म्योर ३x, काली फास ३x, नैट्रम म्योर ३x, नैट्रम फास ३x और साइलीशिया १२x मिलाकर दीजिये।

३९०—कूकुर खाँसी—ड्रासेरा ३० की एक गोली दिन में दो बार रोज दीजिये। अगर एक हफ्ते मे फायदा न हो हो ड्रासेरा २०० दीजिए। नुस्खा नं० २४९ भी दीजिये।

अध्याय ४

बीमारियों से बचने के उपाय

इस पुस्तक को समाप्त करने से पहिले यह आवश्यक मालूम होता है कि पाठकों को कुछ ऐसी बातें बता दी जायें जिनको करने से वे रोगों से बचे रहें और उनका स्वास्थ्य ठीक रहे।

यदि पाठक नीचे लिखी हुई बातों पर ध्यान न देंगे तो हानि अवश्य होगी जो शुरू मे मालूम न हो, लेकिन बहुत दिनों तक ऐसा करने से हानि अवश्य जाहिर हो जायेगी।

(१) हमेशा प्रसन्नचित रहना चाहिए और चिन्ता न करना चाहिए। बहुत-से लोगों को यह नही मालूम है कि अधिक चिन्ता करने से आंतों मे फोड़े, गैस्ट्रिक अल्सर (Gastric ulcers) हो जाते हैं जिसका ठीक इलाज इस वक्त तक शायद दुनिया भर के डाक्टर नहीं निकाल पाये हैं। परन्तु लेखक की दवाओं से अक्सर सफलता प्राप्त होती है। यह गलत नही कहा गया है कि चिता तो मरे हुए को जलाती है मगर चिन्ता जिन्दा आदमी को धीरे-धीरे भस्म करती है। हर एक के जीवन में मुसीबतें आती हैं और मामूली आदमी उन पर चिंता करते हैं। यह विचार उनका गलत है। चिंता करने से मुसीबत दूर तो होगी नहीं बिना वजह अपने को चिंता में जलाना है। इस चिंता से बचने

का एकमात्र उपाय यह है कि यह समझ लिया जाय कि जो कुछ होता है वह मालिक की मरजी से होता है और उसमें हमारी भलाई है। हम दूरदर्शी नही हैं। हम इस समय नहीं समझ सकते कि इसमे क्या भलाई है, मगर भलाई अवश्य होगी। इस विचार से बहुत शान्ति मिलेगी, और चिन्ता दूर हो जायगी।

ऐसा देखा गया है कि अगर तन्दुरुस्त आदमी से बार-बार कहा जाय कि वह बीमार है तो वह बीमार हो जायगा। इसी तरह अगर किसी रोगी से बार-बार कहा जाय कि वह अच्छा है तो उसे अच्छे होने मे अवश्य मदद मिलेगी। रोगी को कभी न सोचना चाहिए कि मैं अच्छा नहीं होऊंगा या यह कि मेरा स्वास्थ्य खराब है या मेरी स्मरण-शक्ति (यानी हाफ्ज़ा) खराब है। ऐसे ख्यालात से अच्छे होने मे बाधा पड़ेगी और स्मरण-शक्ति और ज्यादा खराब होगी। हर वक्त यही सोचना चाहिये कि मैं रोज-ब-रोज अच्छा हो रहा हूं। मेरी स्मरण-शक्ति अच्छी है। इससे रोग के दूर होने मे मदद मिलेगी। इसी तरह यह कभी न कहें कि मैं बूढा हूँ। बूढो को भी चाहिए कि वे कहें कि 'मैं जवान हूँ' इस तरह बुढापा देर मे आयेगा और उम्र बढ़ जाएगी।

(२) हर एक चीज की ज्यादती खराब है। किसी काम के करने में ज्यादती नही करनी चाहिए।

(३) कसरत करना बहुत जरूरी है। सबसे आसान तेज टहलना है। सूर्य के निकलने से पहले घूम कर लौट आना चाहिए।

पहले दिन इतना घूमना चाहिए कि थकान न होने पावे। आम-

तौर से शुरू में एक मील काफी है। धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिये। और तीन या चार मील पहुँच कर उसी पर कायम रहना चाहिए। बीच-बीच में गहरी साँस लेना लाभदायक है। यह हमेशा सोचना चाहिये कि मेरी तन्दुरुस्ती ठीक है।

(४) रोज सवेरे करीब ७ बजे धूप मे बैठ कर कड़ुये तेल की मालिश करनी चाहिये और १५ मिनट के बाद नहाना चाहिये। यह बहुत ही लाभदायक है।

(५) ताजी साफ हवा बहुत जरूरी है। हम लोग इसकी ओर पूरा ध्यान नहीं देते हैं। जाड़ों मे हम लोग अक्सर सोने के कमरे के सभी दरवाजे व खिड़कियां बन्द कर लेते हैं। यह बहुत बुरा है। कमरे के अन्दर कोयला जलाना तो बहुत ही खतरनाक है क्योंकि कभी-कभी कारबन मोनोक्साइड गैस कोयले के जलने से बनती है जिससे लोग मर जाते हैं। बिजली के हीटर में यह खराबी नहीं है, उसे इस्तेमाल कर सकते हैं।

लिहाफ से मुंह ढांक कर लेटना बुरा है। इससे हानिकारक कारबन डाईआक्साइड जो नाक से निकलती है, उसी को हम फिर सूंघते हैं बजाय आक्सीजन के जिसकी हमे आवश्यकता है।

सोने के कमरे की खिडकियाँ खुली रहनी चाहिए जिससे ताजी हवा आवे मगर इस बात का ख्याल रखना चाहिये कि शरीर मे हवा के झोके न लगे। सोते समय काफी कपड़े पहनने चाहिये, ताकि सरदी न लगने पावे। अगर इस पर ध्यान रक्खा जाय तो जाड़े के मौसम में बरामदे मे लेटने मे कोई हर्ज नही है, बल्कि फायदा है। अगर सर्दी

लग जाय तो जैसे ही यह बात मालूम हो फौरन एकोनाइट ६ की गोली लानी चाहिये। सर्दी का असर दूर हो जायगा।

पानी व खाना—शुद्ध पानी की बहुत आवश्यकता है। कम से कम २ या ३ ग्लास पानी रोजाना पीना चाहिये। खाने के साथ या खाने के फौरन बाद पानी नही पीना चाहिये। क्योंकि इससे हाजमे के बिगड़ने का डर है। खाने के एक या डेढ घन्टे के बाद पानी पीना चाहिये। पानी बहुत ठण्डा पीना चाहिये। ज्यादा वर्फ नही खाना चाहिए। इससे हाजमा बिगड़ता है और दांत भी खराब होते हैं और जल्दी टूटते हैं। लेकिन गर्मियो मे थोड़ी-सी वर्फ डाल कर पानी पीने मे कोई हर्ज नही है। ज्यादा वर्फ नही डालना चाहिये। खाना अधिक नही खाना चाहिये। भूख से कुछ कम ही खाना चाहिये। ज्यादा खाने से बीमारी होती है। अगर घी की बनी हुई चीजें अधिक खा ली जावें तो एक गोली पल्सेटिला ३० खाने से फौरन तकलीफ दूर हो जायगी।

खाना—बच्चों के लिए दूध बहुत जरूरी है।

बड़ो को खालिस दूध, दही, मट्ठा, हरी पत्तो वाली तरकारियां, जैसे पालक व नारंगी, अंजीर, मुनक्के, गाजर, मूली, अंगूर, नारियल, संतरा, नीबू, टमाटर, पपीता, गन्ना, रसभरी, केला, आम, ताजी मटर, शकरकंद, किशमिश, सेव, छुहारे, कच्ची गोभी, खूब खाना चाहिए। दाल कम खाना चाहिए। रोज २ या ३ छटांक रोटी खाना चाहिए। रोटी का आटा बिना छना हुआ हो तो अच्छा है। शहद, मिश्री, शक्कर, गुड़, मुरब्बा व अन्य मीठी चीजें रोज छटांक, आधी छटांक खाना चाहिए।

ज्यादा न खाना चाहिये। घी-मक्खन, क्रीम व चाकलेट एक छटांक तक रोज खाना चाहिए, ज्यादा नहीं।

सवेरे धूप में बैठना बहुत फायदेमन्द है। मिर्च व मसाले बहुत कम खाना चाहिए, योरप, अमेरिका वाले नहीं खाते। ज्यादा खाने से उम्र कम हो जाती है। खाना खूब चबाकर खाना चाहिये।

खाना जो टीन में बन्द होकर आता है न खाना चाहिए। अचार व खट्टी चीजें व घी या तेल में पकी हुई चीजें न खाना चाहिए या कम खाना चाहिए। मांस व अन्डे जरूरी नहीं हैं, इनको छोड़ देना चाहिये या २४ घन्टे में आधी छटांक से ज्यादा न खाना चाहिये।

व्रत—हफ्ते में एक दिन व्रत रखना चाहिये या कम से कम एक वक्त खाना न खाया जाय तो अच्छा है, यह जरूरी है।

नींद—दिन में सोना बुरा है, इससे रात की नींद में विघ्न पड़ता है। मगर खाने के बाद थोड़ी देर के लिए लेटना जरूरी है। मलेरिया से बचने के लिये मसहरी लगा कर सोना चाहिये।

कपड़े—बहुत अधिक कपड़े नहीं पहनना चाहिये। ऐसा करने से उनकी आदत पड़ जाती है बाद में फिर और अधिक की जरूरत होती है। गरदन व गले में मफलर नहीं लपेटना चाहिये। जब ठन्डी हवा लगती है तो ऐसे लोगों को बार-बार जुकाम हो जाता है। मौसम बदलते वक्त कपड़ों की ऐहतियात करना चाहिए। सोते वक्त ऊनी वास्केट पहनना चाहिये ताकि अगर सोते वक्त रात को लिहाफ हट भी जाय तो सर्दी न लग जाय। अगर सर्दी लग जाय तो फौरन ही एकोनाइट ६ की एक गोली एक-आध घन्टे बाद खा लेना चाहिये।

आँख—लेटकर नहीं पढ़ना चाहिये। धूप में बैठकर नही पढना चाहिये क्योंकि आंख पर जोर पड़ता है। कम रोशनी या बहुत तेज रोशनी मे नही पढ़ना चाहिये।

हार्टफेल्योर—इस रोग से दिल चलते-चलते रुक जाता है, फौरन ही मृत्यु हो जाती है इसलिए हर एक को कलकेरिया फास ३x, काली फास ३x व नैट्रम म्योर ३x, मिला हुआ जेब मे रखना चाहिये। तबियत घबड़ाते ही इस दवा को खाने से आराम मिलता है।

लैमोनेड व सोडा वाटर बराबर रोज पीने से हाजमा खराब होता है। हफ्ते मे एक या दो मरतबा पी लेने में कोई हर्ज नहीं है। शराब, अफीम व नशीली वस्तुओं को कदापि नही लेना चाहिए। इनसे तन्दुरुस्ती धीरे-धीरे अवश्य बिगडती है। जो लोग इनके इस्तेमाल के आदी हो गये हैं उनको इसे धीरे-धीरे छोड़ने की भरसक कोशिश करनी चाहिये। बायोकेमिक दवायें इस काम मे मदद देगी। अगर मनुष्य पक्का ख्याल कर ले कि हमको कोई काम करना है तो कोई वजह नहीं है कि सफलता क्यो न प्राप्त हो।

तम्बाकू का सेवन हानिकारक है। यह देखने मे आया है कि अधिक सेवन करने से कैन्सर हो जाता है जो ला-इलाज समझा जाता है। अधिक चाय भी हानिकारक है। परन्तु दिन मे एक या दो प्याले हल्की चाय के पीने मे कोई हर्ज नही है। रात को चाय नही पीना चाहिये इससे नींद मे विघ्न पड़ती है।

साधो प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद—३